उत्पत्ति

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया। 2 पृथ्वी
बेडौल और सुनसान थी। धरती पर कुछ भी नहीं था। समुध पर
अंधेरा छाया था और परमेश्वर की आत्मा जल के ऊपर मण्डराती
थी।*

पहला दिन-उजियाला

3 तब परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो"† और उजियाला हो गया।
4 परमेश्वर ने उजियाले को देखा और वह जान गए कि यह अच्छा है।
तब परमेश्वर ने उजियाले को अंधियारे से अलग किया। 5 परमेश्वर
ने उजियाले का नाम "दिन" और अंधियारे का नाम "रात" रखा।
शाम हुई और तब सवेरा हुआ। यह पहला दिन था।

दूसरा दिन—आकाश

6 तब परमेश्वर ने कहा, "जल को दो भागों में अलग करने के लिए
वायुमण्डल‡ हो जाए।" 7 इसलिए परमेश्वर ने वायुमण्डल बनाया
और जल को अलग किया। कुछ जल वायुमण्डल के ऊपर था और
कुछ वायुमण्डल के नीचे। 8 परमेश्वर ने वायुमण्डल को "आकाश"
कहा! तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह दूसरा दिन था।

तीसरा दिन—सूखी धरती और पेड़ पौधे

---

* **1:2:** मण्डराता था हिब्रू भाषा में इस शब्द का अर्थ है "ऊपर उड़ना" या "तेजी से ऊपर से नीचे आना।" जैसे कि एक पक्षी अपने बच्चों की रक्षा के लिए घोंसले के ऊपर मण्डराता है। † **1:3:** तब परमेश्वर ... उजियाला हो "उत्पत्ति में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का सृजन किया। 2 जबकि पृथ्वी का कोई विशेष आकार न था, और समुद्र के ऊपर घनघोर अंधेरा छाया था और परमेश्वर का आत्मा पानी के ऊपर मण्डरा रहा था। 3 परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो!" या, "जब परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना शुरू की, 2 जबकि पृथ्वी बिल्कुल खाली थी, और समुद्र पर अंधेरा छाया था, और पानी के ऊपर एक जोरदार हवा बही, 3 परमेश्वर ने कहा, 'उजियाला होने दो।' " ‡ **1:6:** वायुमण्डल इस हिब्रू शब्द का अर्थ "फैलाव" "विस्तार" या "मण्डल" है।

9 और तब परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी का जल एक जगह इकट्ठा
हो जिससे सूखी भूमि दिखाई दे" और ऐसा ही हुआ। 10 परमेश्वर ने
सूखी भूमि का नाम "पृथ्वी" रखा और जो पानी इकट्ठा हुआ था,
उसे "समुद्र" का नाम दिया। परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

11 तब परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी, घास, पौधे जो अन्न उत्पन्न करते
हैं, और फलों के पेड़ उगाए। फलों के पेड़ ऐसे फल उत्पन्न करें
जिनके फलों के अन्दर बीज हो और हर एक पौधा अपनी जाति
का बीज बनाए। इन पौधों को पृथ्वी पर उगने दो" और ऐसा ही
हुआ। 12 पृथ्वी ने घास और पौधे उपजाए जो अन्न उत्पन्न करते हैं
और ऐसे पेड़, पौधे उगाए जिनके फलों के अन्दर बीज होते हैं। हर
एक पौधे ने अपने जाति अनुसार बीज उत्पन्न किए और परमेश्वर ने
देखा कि यह अच्छा है।

13 तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह तीसरा दिन था।

चौथा दिन—सूरज, चाँद और तारे

14 तब परमेश्वर ने कहा, "आकाश में ज्योतियाँ होने दो। यह
ज्योतियाँ दिन को रात से अलग करेंगी। यह ज्योतियाँ एक विशेष
चिन्ह के रूप में प्रयोग की जाएगी जो यह बताएगी कि विशेष सभाएं
कब शुरू की जाएं और यह दिनों तथा वर्षों के समयों को निश्चित
करेंगी। 15 पृथ्वी पर प्रकाश देने के लिए आकाश में ज्योतियाँ ठहरें"
और ऐसा ही हुआ।

16 तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियाँ बनाई। परमेश्वर ने उन में
से बड़ी ज्योति को दिन पर राज करने के लिए बनाया और छोटी
को रात पर राज करने के लिए बनाया। परमेश्वर ने तारे भी बनाए।
17 परमेश्वर ने इन ज्योत्तियों को आकाश में इसलिए रखा कि वेह
पृथ्वी पर पर चमकें। 18 परमेश्वर ने इन ज्योतियों को आकाश में
इसलिए रखा कि वह दिन तथा रात पर राज करें। इन ज्योतियों ने
उजियाले को अंधकार से अलग किया और परमेश्वर ने देखा कि
यह अच्छा है।

19 तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह चौथा दिन था।

पाँचवाँ दिन—मछलियाँ और पक्षी

20 तब परमेश्वर ने कहा, "जल, अनेक जलचरों से भर जाए और
पक्षी पृथ्वी के ऊपर वायुमण्डल में उड़ें।" 21 इसलिए परमेश्वर ने
समुद्र में बहुत बड़े—बड़े जलजन्तु बनाए। परमेश्वर ने समुद्र में
विचरण करने वाले प्राणियों को बनाया। समुद्र में भिन्न—भिन्न जाति
के जलजन्तु हैं। परमेश्वर ने इन सब की सृष्टि की। परमेश्वर ने हर
तरह के पक्षी भी बनाए जो आकाश में उड़ते हैं। परमेश्वर ने देखा
कि यह अच्छा है।
22 परमेश्वर ने इन जानवरों को आशीष दी, और कहा, "जाओ
और बहुत से बच्चे उत्पन्न करो और समुद्र के जल को भर दो। पक्षी
भी बहुत बढ़ जाए।"
23 तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह पाँचवाँ दिन था।

छठवाँ दिन—भूमि के जीवजन्तु और मनुष्य

24 तब परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी हर एक जाति के जीवजन्तु उत्पन्न
करे। बहुत से भिन्न जाति के जानवर हों। हर जाति के बड़े जानवर
और छोटे रेंगनेवाले जानवर हो और यह जानवर अपने जाति के
अनुसार और जानवर बनाए" और यही सब हुआ।
25 तो, परमेश्वर ने हर जाति के जानवरों को बनाया। परमेश्वर
ने जंगली जानवर, पालतू जानवर, और सभी छोटे रेंगनेवाले जीव
बनाए और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।
26 तब परमेश्वर ने कहा, "अब हम मनुष्य बनाएं। हम मनुष्य को
अपने स्वरूप जैसा बनाएगे। मनुष्य हमारी तरह होगा। अह समुद्र
की सारी मछलियों पर और आकाश के पक्षियों पर राज करेगा।
वह पृथ्वी के सभी बड़े जानवरों और छोटे रेंगनेवाले जीवों पर राज
करेगा।"
27 इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में§ बनाया।

§ **1:27:** परमेश्वर ... स्वरुप में तुलना करें उत्पत्ति 5:1, 3

परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरुप में सृजा। परमेश्वर ने उन्हें
नर और नारी बनाया। 28 परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी। परमेश्वर ने
उनसे कहा, "तुम्हारे बहुत सी संताने हों। पृथ्वी को भर दो और उस
पर राज करो। समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों पर राज
करो। हर एक पृथ्वी के जीवजन्तु पर राज करो।"

29 परमेश्वर ने कहा, "देखो, मैंने तुम लोगों को सभी बीज वाले
पेड़ पौधे और सारे फलदार पेड़ दिए हैं। ये अन्न तथा फल तुम्हारा
भोजन होगा। 30 मैं प्रत्येक हरे पेड़ पौधा जानवरों के लिए दे रहा हूँ।
ये हरे पेड़—पौधे उनका भोजन होगा। पृथ्वी का हर एक जानवर,
आकाश का हर एक पक्षी और पृथ्वी पर रेंगने वाले सभी जीवजन्तु
इस भोजन को खांएगे।" ये सभी बातें हुईं।

31 परमेश्वर ने अपने द्वारा बनाई हर चीज़ को देखा और परमेश्वर
ने देखा कि हर चीज़ बहुत अच्छी है।

शाम हुई और तब सवेरा हुआ। यह छठवाँ दिन था।

2

सातवाँ दिन—विश्राम

1 इस तरह पृथ्वी, आकाश और उसकी प्रत्येक वस्तु की रचना
पूरी हुई। 2 परमेश्वर ने अपने किए जा रहे काम को पूरा कर लिया।
अतः सातवें दिन परमेश्वर ने अपने काम से विश्राम किया। 3 परमेश्वर
ने सातवें दिन को आशीषित किया और उसे पवित्र दिन बना दिया।
परमेश्वर ने उस दिन को पवित्र दिन इसलिए बनाया कि संसार को
बनाते समय जो काम वह कर रहा था उन सभी कार्यों से उसने उस
दिन विश्राम किया।

मानव जाति का आरम्भ

4 यह पृथ्वी और आकाश का इतिहास है। यह कथा उन चीज़ों
की है, जो परमेश्वर द्वारा पृथ्वी और आकाश बनाते समय, घटित
हुई। 5 तब पृथ्वी पर कोई पेड़ पौधा नहीं था और खेतों में कुछ भी

नहीं उग रहा था, क्योंकि यहोवा ने तब तक पृथ्वी पर वर्षा नहीं भेजी थी तथा पेड़ पौधों की देख—भाल करने वाला कोई व्यक्ति भी नहीं था।

6 परन्तु कोहरा पृथ्वी से उठता था और जल सारी पृथ्वी को
सींचता था। 7 तब यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी से धूल उठाई और
मनुष्य को बनाया। यहोवा ने मनुष्य की नाक में जीवन की साँस
फूँकी और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया। 8 तब यहोवा परमेश्वर
ने पूर्व में अदन नामक जगह में एक बाग लगाया। यहोवा परमेश्वर
ने अपने बनाए मनुष्य को इसी बाग में रखा। 9 यहोवा परमेश्वर ने
हर एक सुन्दर पेड़ और भोजन के लिए सभी अच्छे पेड़ों को उस
बाग में उगाया। बाग के बीच में परमेश्वर ने जीवन के पेड़ को रखा
और उस पेड़ को भी रखा जो अच्छे और बुरे की जानकारी देता है।

10 अदन से होकर एक नदी बहती थी और वह बाग़ को पानी
देती थी। वह नदी आगे जाकर चार छोटी नदियाँ बन गई। 11 पहली
नदी का नाम पीशोन है। यह नदी हवीला प्रदेश के चारों ओर बहती
है। 12 (उस प्रदेश में सोना है और वह सोना अच्छा है। मोती और
गोमेदक रत्न उस प्रदेश में हैं।) 13 दूसरी नदी का नाम गीहोन है जो
सारे कूश प्रदेश के चारों ओर बहती है। 14 तीसरी नदी का नाम
दजला है। यह नदी अश्शूर के पूर्व में बहती है। चौथी नदी फरात
है।

15 यहोवा ने मनुष्य को अदन के बाग में रखा। मनुष्य का काम
पेड़—पौधे लगाना और बाग की देख—भाल करना था। 16 यहोवा
परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, “तुम बग़ीचे के किसी भी पेड़ से
फल खा सकते हो। 17 लेकिन तुम अच्छे और बुरे की जानकारी
देने वाले पेड़ का फल नहीं खा सकते। यदि तुमने उस पेड़ का फल
खा लिया तो तुम मर जाओगे।”

पहली स्त्री

[18] तब यहोवा परमेश्वर ने कहा, “मैं समझता हूँ कि मनुष्य का
अकेला रहना ठीक नहीं है। मैं उसके लिए एक सहायक बनाऊँगा
जो उसके लिए उपयुक्त होगा।”
[19] यहोवा ने पृथ्वी के हर एक जानवर और आकाश के हर एक
पक्षी को भूमि की मिट्टी से बनाया। यहोवा इन सभी जीवों को मनुष्य
के सामने लाया और मनुष्य ने हर एक का नाम रखा। [20] मनुष्य
ने पालतू जानवरों, आकाश के सभी पक्षियों और जंगल के सभी
जानवरों का नाम रखा। मनुष्य ने अनेक जानवर और पक्षी देखे
लेकिन मनुष्य कोई ऐसा सहायक नहीं पा सका जो उसके योग्य
हो। [21] अतः यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को गहरी नींद में सुला दिया
और जब वह सो रहा था, यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य के शरीर से एक
प्सली निकाल ली। तब यहोवा ने मनुष्य की उस त्वचा को बन्द
कर दिया जहाँ से उसने पसली निकाली थी। [22] यहोवा परमेश्वर ने
मनुष्य की पसली से स्त्री की रचना की। तब यहोवा परमेश्वर स्त्री
को मनुष्य के पास लाए। [23] और मनुष्य से कहा,

“अन्तत! हमारे समाने एक व्यक्ति।
    इसकी हड्डियाँ मेरी हड्डियों से आई
    इसका शरीर मेरे शरीर से आया।
क्योंकि यह मनुष्य से निकाली गई,
    इसलिए मैं इसे स्त्री कहूँगा।”

[24] इसलिए पुरुष अपने माता—पिता को छोड़कर अपनी पत्नी के
साथ रहेगा और वे दोनों एक तन हो जाएगे।
[25] मनुष्य और उसकी पत्नी बाग में नंगे थे, परन्तु वे लजाते नहीं
थे।

3

पाप का आरम्भ

1 यहोवा द्वारा बनाए गए सभी जानवरों में सबसे अधिक चतुर
साँप* था। (वह स्त्री को धोखा देना चाहता था।) साँप ने कहा, “हे
स्त्री क्या परमेश्वर ने सच—मुच तुमसे कहा हऐ कि तुम बाग के
किसी पेड़ से फल ना खाना?”

2 स्त्री न कहा, “नहीं परमेश्वर ने यह नहीं कहा। हम बाग़ के पेड़ों
से फल खा सकते हैं। 3 लेकिन एक पेड़ है जिसके फल हम लोग
नहीं खा सकते हैं। परमेश्वर ने हम लोगों से कहा, ‘बाग के बीच के
पेड़ के फल तुम नहीं खा सकते, तुम उसे छूना भी नहीं, नहीं तो मर
जाओगे।’ ”

4 लेकिन साँप ने स्त्री से कहा, “तुम मरोगी नहीं। 5 परमेश्वर जानता
है कि यदि तुम लोग उस पेड़ से फल खाओगे तो अच्छे और बुरे के
बारे में जान जाओगे और तब तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे।”

6 स्त्री ने देखा कि पेड़ सुन्दर है। उसने देखा कि फल खाने के
लिए अच्छा है और पेड़ उसे बुद्धिमान बनाएगा। तब स्त्री ने पेड़ से
फल लिया और उसे खाया। उसका पती भी उसके साथ था इसलिए
उसने कुछ फल उसे दिया और उसने उसे खाया।

7 तब पुरुष और स्त्री दोनों बदल गए। उनकी आँखे खुल गई
और उन्होंने वस्तुओं को भिन्न दृष्टि से देखा। उन्होंने देखा कि उनके
कपड़े नहीं है, वे नंगे है। इसलिए उन्होंने कुछ अंजीर के पत्ते लेकर
उन्हें जोड़ा और कपड़ो के स्थान पर अपने लिए पहना।

8 तब पुरुष और स्त्री ने दिन के ठण्डे समय में यहोवा परमेश्वर
के आने की आवाज बाग में सुनी। वे बाग मे पेड़ों के बीच में छिप
गए। 9 यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर पुरुष से पूछा, “तुम कहाँ हो?”

10 पुरुष ने कहा, “मैंने बाग में तेरे आने की आवाज सुनी और मैं
डर गया। मैं नंगा था, इसलिए छिप गया।”

---

* **3:1:** साँप शायद शैतान। उसे बहुधा साँप, अजदहा और “सागर का दैत्य” कहा गया
है।

11 यहोवा परमेश्वर ने पुरुष से पूछा, “तुम्हें किसने बताया कि तुम
नंगे हो? तुम किस कारण से शरमाए? क्या तुमने उस विशेष पेड़ का
फल खाया जिसे मैंने तुम्हें न खाने की आज्ञा दी थी?”
12 पुरुष ने कहा, “तूने जो स्त्री मेरे लिए बनाई उसने उस पेड़ से
मुझे फल दिए, और मैंने उसे खाया।”
13 तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, “यह तुमने क्या किया?”
स्त्री ने कहा, “साँप ने मुझे धोखा दिया। उसने मुझे बेवकूफ बनाया
और मैंने फल खा लिया।”
14 तब यहोवा परमेश्वर ने साँप से कहा,

“तुमने यह बहुत बुरी बात की।
इसलिए तुम्हारा बुरा हो होगा।
अन्य जानवरों की अपेक्षा तुम्हारा बहुत बुरा होगा।
तुम अपने पेट के बल रेंगने को मजबूर होगे।
और धूल चाटने को विवश होगे
जीवन के सभी दिनों में।
15 मैं तुम्हें और स्त्री को
एक दूसरे का दुश्मन बनाऊँगा।
तुम्हारे बच्चे और इसके बच्चे
आपस में दुश्मन होंगे।
तुम इसके बच्चे के पैर में डसोगे
और वह तुम्हारा सिर कुचल देगी।”

16 तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा,

“मैं तेरे गर्भावस्था में तुझे बहुत दुःखी करूँगा
और जब तू बच्चा जनेगी
तब तुझे बहुत पीड़ा होगी।

तेरी चाहत तेरे पति के लिए होगी
किन्तु वह तुझ पर प्रभुता करेगा।”†

17 तब यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य से कहा,

“मैंने आज्ञा दी थी कि तुम विशेष पेड़ का फल न खाना।
किन्तु तुमने अपनी पत्नी की बाते सुनीं और तुमने उस पेड़ का फल खाया।
इसलिए मैं तुम्हारे कारण इस भूमि को शाप देता हूँ‡
अपने जीवन के पूरे काल तक उस भोजन के लिए जो धरती देती है।
तुम्हें कठिन मेहनत करनी पड़ेगी।
18 तुम उन पेड़ पौधों को खाओगे जो खेतों में उगते है।
किन्तु भूमि तुम्हारे लिए काँटे और खर—पतवार पैदा करेगी।
19 तुम अपने भोजन के लिए कठिन परिश्रम करोगे।
तुम तब तक परिश्रम करोगे जब तक माथे पर पसीना ना आ जाए।
तुम तब तक कठिन मेहनत करोगे जब तक तुम्हारी मृत्यु न आ जाए।
उस समय तुम दुबारा मिट्टी बन जाओगे।
जब मैंने तुमको बनाया था, तब तुम्हें मिट्टी से बनाया था
और जब तुम मरोगे तब तुम उसी मिट्टी में पुनः मिल जाओगे।”

20 आदम ने अपनी पत्नी का नाम हब्बा रखा, क्योंकि सारे मनुष्यों
की वह आदिमाता थी।
21 यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य और उसकी पत्नी के लिए जानवरों
के चमड़ों से पोशाक बनाया। तब यहोवा ने ये पोशाक उन्हें दी।

† **3:16:** तेरी चाहत … प्रभुता करेगा शाब्दिक तुम अपने पति पर हुकम चलाना चाहोगी। लेकिन वह तुझ पर प्रभुता करेगा। ‡ **3:17:** शाप देता हूँ शाब्दिक किसी वस्तु या व्यक्ति के लिये बुरा आत्मा लेकिन वह तुझ पर प्रभुता करेगा।

22 यहोवा परमेश्वर ने कहा, “देखो, पुरुष हमारे जैसा हो गया है। पुरुष अच्छाई और बुरा जानता है और अब पुरुष जीवन के पेड़ से भी फल ले सकता है। अगर पुरुष उस फल को खायेगा तो सदा ही जीवित रहेगा।”
23 तब यहोवा परमेश्वर ने पुरुष को अदन के बाग छोड़ने के लिए मजबूर किया। जिस मिट्टी से आदम बना था उस पृथ्वी पर आदम
को कड़ी मेहनत करनी पड़ी। 24 परमेश्वर ने आदम को बाग से बाहर
निकाल दिया। तब परमेश्वर ने करूब (स्वर्गदूतों) को बाग के फाटक की रखवाली के लिए रखा। परमेश्वर ने वहाँ एक आग की तलवार भी रख दी। यह तलवार जीवन के पेड़ के रास्ते की रखवाली करती हुई चारों ओर चमकती थी।

4

पहला परिवार

1 आदम और उसकी पत्नी हव्बा के बीच शारीरिक सम्बन्ध हुए और हव्बा ने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चे का नाम कैन रखा गया। हव्बा ने कहा, “यहोवा की मदद से मैंने एक मनुष्य पाया है।”
2 इसके बाद हव्बा ने दूसरे बच्चे को जन्म दिया। यह बच्चा कैन का भाई हाबिल था। हाबिल गड़ेंरिया बना। कैन किसान बना।

पहली हत्या

3-4 फसल के समय* कैन एक भेंट यहोवा के पास लाया। जो अन्न कैन ने अपनी ज़मीन में उपजाया था उसमें से थोड़ा अन्न वह लाया। परन्तु हाबिल अपने जानवरों के झुण्ड में से कुछ जानवर लाया। हाबिल अपनी सबसे अच्छी भेड़ का सबसे अच्छा हिस्सा लाया।†

---

* **4:3-4:** फसल के समय इसका अर्थ फसल काटने का समय। या कुछ निश्चित समय के बाद भी हो सकता है। † **4:3-4:** अच्छा हिस्सा लाया शाब्दिक उसकी चर्बी। यह जानवर का वह हिस्सा था जो हमेशा परमेश्वर के लिये बचाया जाता था। जब यह वेदी पर जलाया जाता था तो उसमें से बहुत मनभावनी सुगन्ध निकलती थी।

यहोवा ने हाबिल तथा उसकी भेंट को स्वीकार किया। 5 परन्तु
यहोवा ने कैन तथा उसके द्वारा लाई भेंट को स्वीकार नहीं किया
इस कारण कैन क्रोधित हो गया। वह बहुत व्याकुल और निराश‡
हो गया। 6 यहोवा ने कैन से पूछा, "तुम क्रोधित क्यों हो? तुम्हारा
चेहरा उतरा हुआ क्यों दिखाई पड़ता है? 7 अगर तुम अच्छे काम
करोगे तो तुम मेरी दृष्टि में ठीक रहोगे। तब मैं तुम्हें अपनाऊँगा।
लेकिन अगर तुम बुरे काम करोगे तो वह पाप तुम्हारे जीवन में
रहेगा। तुम्हारे पाप तुम्हें अपने वश में रखना चाहेंगे लेकिन तुम को
अपने पाप को अपने बस में रखना होगा।"§

8 कैन ने अपने भाई हाबिल से कहा, "आओ हम मैदान में
चलें।"** इसलिए कैन और हाबिल मैदान में गए। तब कैन ने अपने
भाई पर हमल किया और उसे मार डाला।

9 बाद में यहोवा ने कैन से पूछा, "तुम्हारा भाई हाबिल कहाँ है?"

कैन ने जवाब दिया, "मैं नहीं जानता। क्या यह मेरा काम है कि
मैं अपने भाई की निगरानी और देख भाल करूँ?"

10 तब यहोवा ने कहा, "तुमने यह क्या किया? तुम्हारे भाई का
खून जमीन से बोल रहा है कि क्या हो गया है? 11 तुमने अपने भाई
की हत्या की है, पृथ्वी तुम्हारे हाथों से उसका खून लेने के लिए खुल
गयी है। इसलिए अब मैं उस जमीन को बुरा करने वाली चीजों को
पैदा करूँगा। 12 बीते समय में तुमने फ़सलें लगाई और वे अच्छी
उगीं। लेकिन अब तुम फसल बोओगे और जमीन तुम्हारी फसल
अच्छी होने में मदद नहीं करेगी। तुम्हें पृथ्वी पर घर नहीं मिलेगा।
तुम जगह जगह भटकोगे।"

‡ **4:5:** व्याकुल और निराश शाब्दिक, "उसका मुँह झुक गया।" § **4:7:** लेकिन … रखना होगा अगर तुम सही नहीं करते तब पाप तुम्हारे दरवाजे पर एक सिंह की तरह घात लगा है। यह तुम्हें दबोचना चाहता है किन्तु तुम इस पर हावी रहो। ** **4:8:** आओ … हम चलें प्राचीन संस्करण में यह वाक्य मिलता है लेकिन प्रामाणिक या आदर्श हिब्रू में नहीं।

13 तब कैन ने कहा, "यह दण्ड इतना अधिक है कि मैं सह नहीं
सकता। 14 मेरी ओर देख। तूने मुझे जमीन में फसल के काम को
छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया है और मैं अब तेरे करीब भी नहीं
रहूँगा। मेरा कोई घर नहीं होगा और पृथ्वी पर से मैं नष्ट हो जाऊँगा
और यदि कोई मनुष्य मुझे पाएगा तो मार डालेगा।"

15 तब यहोवा ने कैन से कहा, "मैं यह नहीं होने दूँगा। यदि कोई
तुमको मारेगा तो मैं उस आदमी को बहुत कठोर दण्ड दूँगा।" तब
यहोवा ने कैन पर एक चिन्ह बनाया। यह चिन्ह वह बताता था कि
कैन को कोई न मारे।

कैन का परिवार

16 तब कैन यहोवा को छोड़कर चला गया। कैन नोद देश में रहने
लगा।

17 कैन ने अपनी पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। वह
गर्भवती हुई। उसने हनोक नाम बच्चे को जन्म दिया। कैन ने एक
शहर बसाया और उसका नाम अपने अपने पुत्र के नाम पर हनोक
ही रखा।

18 हनोक से ईराद उत्पन्न हुआ, ईराद से महूयाएल उत्पन्न हुआ,
महूयाएल से मतूशाएल उत्पन्न हुआ और मतूशाएल से लेमेक उत्पन्न
हुआ।

19 लेमेक ने दो स्त्रियों से विवाह किया। एक पत्नी का नाम आदा
और दूसरी का नाम सिल्ला था। 20 आदा ने याबाल को जन्म दिया।
याबाल उन लोगों का पिता था†† जो तम्बूओं में रहते थे तथा पशुओं
क पालन करके जीवन निर्वाह करते थे। 21 आदा का दूसरा पुत्र
यूबाल भी था। यूबाल, याबाल का भाई था। यूबाल उन लोगों का
पिता था जो वीणा और बाँसुरी बजाते थे। 22 सिल्ला ने तूबलकैन को

†† **4:20:** उन लोगों का पिता था इसका मतलब शायद यह है इसने इन चीजों का आविस्कार किया या इनका इस्तेमाल करने वाला यह पहला व्यक्ति था।

जन्म दिया। तूबलकैन उन लोगों का पिता था जो काँसे और लोहे
का काम करते थे। तूबलकैन की बहन का नाम नामा था।
23 लेमेक ने अपनी पत्नियों से कहा:

“ऐ आदा और सिल्ला मेरी बात सुनो।
लेमेक की पत्नियों जो बाते मैं कहता हूँ, सुनो।
एक पुरुष ने मुझे चोट पहुँचाई, मैंने उसे मार डाला।
एक जवान ने मुझे चोट दी, इसलिए मैंने उसे मार डाला।
24 कैन की हत्या का दण्ड बहुत भारी था।
इसलिए मेरी हत्या का दण्ड भी उससे बहुत, बहुत भारी होगा।”

आदम और हव्वा को नया पुत्र हुआ

25 आदम ने हव्वा के साथ फिर शारीरिक सम्बन्ध किया और
हव्वा ने एक और बच्चे को जन्म दिया। उन्होंने इस बच्चे का नाम
शेत रखा। हव्वा ने कहा, “यहोवा ने मुझे दूसरा पुत्र दिया है। कैन
ने हाबिल को मार डाला किन्तु अब शेत मेरे पास है।” 26 शेत का
भी एक पुत्र था। इसका नाम एनोश था। उस समय लोग यहोवा पर
विश्वास करने लगे।‡‡

5

आदम के परिवार का इतिहास

1 यह अध्याय आदम के परिवार के बारे में है। परमेश्वर ने मनुष्य
को अपने स्वरूप में* बनाया। 2 परमेश्वर ने एक पुरुष और एक
स्त्री को बनाया। जिस दिन परमेश्वर ने उन्हें बनाया, आशीष दी एवं
उसका नाम “आदम” रखा।

---

‡‡ **4:26:** उस समय … लगे शाब्दिक उस समय लोग यहोवा को पुकारने लगे। * **5:1:** अपने स्वरुप में उसने उसे परमेश्वर के समान बनाया। देखें उत्पत्ति 1:27; 5:3

3 जब आदम एक सौ तीस वर्ष का हो गया तब वह एक और बच्चे
का पिता हुआ। यह पुत्र ठीक आदम सा दिखाई देता था। आदम
ने पुत्र का नाम शेत रखा। 4 शेत के जन्म के बाद आदम आठ सौ
वर्ष जीवित रहा। इन दिनों में आदम के अन्य पुत्र और पुत्रियाँ पैदा
हुई। 5 इस तरह आदम पूरे नौ सौ तीस वर्ष तक जीवित रहा, तब
वह मरा।

6 जब शेत एक सौ पाँच वर्ष का हो गया तब उसे एनोश नाम का
पुत्र पैदा हुआ। 7 एनोश के जन्म के बाद शेत आठ सौ सात वर्ष
जीवित रहा। इसी शेत के अन्य पुत्र—पुत्रियाँ पैदा हुई। 8 इस तरह
शेत पूरे नौ सौ बारह वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

9 एनोश जब नब्बे वर्ष का हुआ, उसे केनान नाम का पुत्र पैदा
हुआ। 10 केनान के जन्म के बाद एनोश आठ सौ फन्द्रह वर्ष जीवित
रहा। इन दिनों इसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 11 इस तरह
एनोश पूरे नौ सौ पाँच वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

12 जब केनान सत्तर वर्ष का हुआ, उसे महललेल नाम का पुत्र
पैदा हुआ। 13 महललेल के जन्म के बाद केनान आठ सौ चालीस
वर्ष जीवित रहा। इन दिनों केनान के दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा
हुई। 14 इस तरह केनान पूरे नौ सौ दस वर्ष जीवित रहा, तब वह
मरा।

15 जब महललेल पैंसठ वर्ष का हुआ, उसे येरेद नाम का पुत्र पैदा
हुआ। 16 येरेद के जन्म के बाद महललेल आठ सौ तीस वर्ष जीवित
रहा। इन दिनों में उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 17 इस तरह
महललेल पूरे आठ सौ पंचानवे वर्ष जीवित रहा। तब वह मरा।

18 जब येरेद एक सौ बासठ वर्ष का हुआ तो उसे हनोक नाम का
पुत्र पैदा हुआ। 19 हनोक के जन्म के बाद येरेद आठ सौ वर्ष जीवित
रहा। इन दिनों में उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 20 इस तरह
येरेद पूरे नौ सौ बासठ वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

21 जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ, उसे मतूशेलह नाम का पुत्र
पैदा हुआ। 22 मतूशेलह के जन्म के बाद हनोक परमेश्वर के साथ
तीन सौ वर्ष रहा। इन दिनों उसके दूसरे पुत्र पुत्रियाँ पैदा हुई। 23 इस
तरह हनोक पूरे ती सौ पैंसठ वर्ष जीवित रहा। 24 एक दिन हनोक
परमेश्वर के साथ चल रहा था† और गायब हो गया क्योंकि परमेश्वर
ने उसे उठा लिया।

25 जब मतूशेलह एक सौ सत्तासी वर्ष का हुआ, उसे लेमेक नाम
का पुत्र पैदा हुआ। 26 लेमेक के जन्म के बाद मतूशेलह सात सौ
बयासी वर्ष जीवित रहा। इन दिनों उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा
हुई। 27 इस तरह मतूशेलह पूरे नौ सौ उनहत्तर वर्ष जीवित रहा, तब
यह मरा।

28 जब लेमेक एक सौ बयासी वर्ष का हुआ, वह एक पुत्र का
पिता बना। 29 लेमेक के पुत्र का नाम नूह रखा। लेमेक ने कहा, "हम
किसान लोग बहुत कड़ो मेहनत करते हैं क्यैंकि परमेश्वर ने भूमि
को शाप दे दिया है। किन्तु नूह हम लोगों को विश्राम देगा।"

30 नूह के जन्म के बाद, लेमेक पाँच सौ पंचानवे वर्ष जीवित रहा।
इन दिनों उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 31 इस तरह लेमेक
पूरे सात सौ सतहत्तर वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

32 जब नूह पाँच सौ वर्ष का हुआ, उसके शेम, हाम, और येपेत
नाम के पुत्र हुए।

6

लोग पापी हो गए

1-4 पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या बढ़ती रही। इन लोगों के
लड़कियाँ पैदा हुई। परमेश्वर के पुत्रों ने देखा कि ये लड़कियाँ सुन्दर

---

† **5:24:** हनोक ... रहा था शाब्दिक "हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था।"

हैं। इसलिए परमेश्वर के पुत्रों ने अपनी इच्छा के अनुसार जिससे चाहा उसी से विवाह किया। इन स्त्रियों ने बच्चों को जन्म दिया।

तब यहोवा ने कहा, "मनुष्य शरीर ही है। मैं सदा के लिए इनसे अपनी आत्मा को परेशान नहीं होने दूँगा। मैं उन्हें एक सौ बीस वर्ष का जीवन दूँगा।"*

इन दिनों और बाद में भी नेफिलिम लोग उस देश में रहते थे। ये प्रसिद्ध लोग थे। ये लोग प्राचीन काल से बहुत वीर थे।

5 यहोवा ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य बहुत अधिक पापी हैं।
यहोवा ने देखा कि मनुष्य लगातार बुरी बातें ही सोचता है। 6 यहोवा
को इस बात का दुःख हुआ, कि मैंने पृथ्वी पर मनुष्यों को क्यों
बनाया? यहोवा इस बात से बहुत दुःखी हुआ। 7 इसलिए यहोवा ने
कहा, "मैं अपनी बनाई पृथ्वी के सारे लोगों को खतम कर दूँगा। मैं
हर एक व्यक्ति, जानवर और पृथ्वी पर रेंगने वाले हर एक जीवजन्तु
को खतम करूँगा। मैं आकाश के पक्षियों को भी खतम करुँगा।
क्यों? क्योंकि मैं इस बात से दुःखी हूँ कि मैंने इन सभी चीजों को
बनाया।"
8 लेकिन पृथ्वी पर यहोवा को खुश करने वाला एक व्यक्ति था—
नूह।

नूह और जल प्रलय

9 यह कहानी नूह के परिवार की है। अपने पूरे जीवन में नूह ने
सदैव परमेश्वर का अनुसरण किया। 10 नूह के तीन पुत्र थे, शेम, हाम
और येपेत।
11-12 परमेश्वर ने पृथ्वी पर दृष्टि की और उसने देखा कि पृथ्वी
को लोगों ने बर्बाद कर दिया है। हर जगह हिंसा पैली हुई है। लोग

---

* **6:1-4:** मनुष्य … दूँगा मेरी आत्मा मनुष्य के साथ सदा नहीं रहेगी क्योंकि वे हाड़ माँस है। आदमी केवल 120 वर्ष जीवित रहेगा। या "मेरा विवेक लोगों का न्याय सदा नहीं करता रहेगा क्योंकि वे सभी 120 वर्ष की उम्र में ही मरेंगे।

पापी और भ्रष्ट हो गए है, और उन्होंने पृथ्वी पर अपना जीवन बर्बाद
कर दिया है।
13 इसलिए परमेश्वर ने नूह से कहा, “सारे लोगों ने पृथ्वी को क्रोध
और हिंसा से भर दिया है। इसलिए मैं सभी जीवित प्राणियों को नष्ट
करूँगा। मैं उनकी पृथ्वी से हटाऊँगा। 14 गोपेर की लकड़ी† का
उपयोग करो और अपने लिए एक जहाज बनाओ। जहाज में कमरे
बनाओ‡ और उसे राल से भीतर और बाहर पोत दो।
15 “जो जहाज मैं बनवाना चाहता हूँ उसका नाप तीन सौ हाथ§
लम्बाई, पचास हाथ** चौड़ाई, तीस हाथ†† ऊँचाई है। 16 जहाज के
लिए छत से करीब एक हाथ नीचे एक खिड़की बनाओ‡‡ जहाज
की बगल में एक दरवाजा बनाओ। जहाज में तीन मंजिलें बनाओ।
ऊपरी मंजिल, बीच की मंजिल और नीचे की मंजिल।”
17 “तुम्हें जो बता रहा हूँ उसे समझो। मैं पृथ्वी पर बड़ा भारी
जल का बाढ़ लाऊँगा। आकाश के नीचे सभी जीवों को मैं नष्ट कर
दूँगा। पृथ्वी के सभी जीव मर जायेंगे। 18 किन्तु मैं तुमको बचाऊँगा।
तब मैं तुम से एक विशेष वाचा करूँगा। तुम तुम्हारे पुत्र तुम्हारे पुत्र
तुम्हारी पत्नी तुम्हारे पुत्रों की पत्नियाँ सभी जहाज़ में सवार होगे।
19 साथ ही साथ पृथ्वी पर जीवित प्राणियों के जोड़े भी तुम्हें लाने
होंगे। हर एक के नर और मादा को जहाज़ में लाओ। अपने साथ
उनको जीवित रखो। 20 पृथ्वी की रह तरह की चिड़ियों के जोड़ों
को भी खोजो। पृथ्वी पर रेंगने वाले हर एक जीव के जोड़ों को भी
खोजो। पृथ्वी के हर प्रकार के जानवरों के नर और मादा तुम्हारे
साथ होंगे। जहाज़ पर उन्हें जीवित रखो। 21 पृथ्वी के सभी प्रकार के

† **6:14:** गोपेर की लकड़ी हम नहीं जानते कि यह असली में किस तरह की लकड़ी है। शायद यह एक किस्म का पेड़ हो या तराशी हुई लकड़ी। ‡ **6:14:** जहाज में कमरे बनाऔ जहाज के लिए तैल—जूट आदि बनाओ, “ये छोटे पौधे हो सकते हैं जो जहाजों के जोड़ों में घुसाए जाते थे और राल से पोते दिए।” § **6:15:** तीन सौ हाथ चार सौ पचास फीट। ** **6:15:** पचास हाथ पचहत्तर फीट। †† **6:15:** तीस हाथ पैंतालीस फीट। ‡‡ **6:16:** जहाज ... बनाओ जहाज के लिए करीब देढ़ फीट ऊँचा एक खुला भाग रखो।

भोजन भी जहाज़ पर लाओ। यह भोजन तुम्हारे लिए तथा जानवरों
के लिए होगा।”

22 नूह ने यह सब कुछ किया। नूह ने परमेश्वर की सारी आज्ञाओं
का पालन किया।

7

जल प्रलय आरम्भ होता है

1 तब यहोवा ने नूह से कहा, “मैंने देखा है कि इस समय के पापी
लोगों में तुम्हीं एक अच्छे व्यक्ति हो। इसलिए तुम अपने परिवार
को इकट्ठा करो और तुम सभी जहाज में चले जाओ। 2 हर एक शुद्ध
जानवर के सात जोड़े, (सात नर तथा सात मादा) साथ में ले लो और
पृथ्वी के दूसरे अशुद्ध जानवरों के एक—एक जोड़े (एक नर और
एक मादा) लाओ। इन सभी जानवरों को अपने साथ जहाज़ में ले
जाओ। 3 हवा में उड़ने वाले सभी पक्षियों के सात जोड़े (सात नर
और सात मादा) लाओ। इससे ये सभी जानवर पृथ्वी पर जीवित
रहेंगे, जब दूसरे जानवर नष्ट हो जायेंगे। 4 अब से सातवें दिन मैं पृथ्वी
पर बहुत भारी वर्षा भेजूँगा। यह वर्षा चालीस दिन और चालीस रात
होती रहेगी। पृथ्वी के सभी जीवित प्राणी नष्ट हो जायेंगे। मेरी बनाई
सभी चीज़े खतम हो जायेंगे।” 5 नूह ने उन सभी बातों को माना जो
यहोवा ने आज्ञा दी।

6 वर्षा आने के समय नूह छः सौ वर्ष का था। 7 नूह और उसका
परिवार बाढ़ के जल से बचने के लिए जहाज़ में चला गया। नूह की
पत्नी, उसके पुत्र और उनकी पत्नियाँ उसके साथ थीं। 8 पृथ्वी के
सभी शुद्ध जानवर एवं अन्य जानवर, पक्षी और पृथ्वी पर रेंगने वाले
सभी जीव 9 नूह के साथ जहाज में चढ़े। इन जानवरों के नर और
मादा जोड़े परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार जहाज में चढ़े। 10 सात
दिन बद बाढ़ प्रारम्भ हुई। धरती पर वर्षा होने लगी।

11-13 दूसरे महीने के सातवें दिन, जब नूह छः सौ वर्ष का था,
जमीन के नीचे के सभी सोते खुल पड़े और ज़मीन से पानी बहना शुरु
हो गया। उसी दिन पृथ्वी पर भारी वर्षा होने लगी। ऐसा लगा मानो
आकाश की खिड़कियाँ खुल पड़ी हों। चालीस दिन और चालीस
रात तक वर्षा पृथ्वी पर होती रही। ठीक उसी दिन नूह, उसकी
पत्नी, उसके पुत्र शेम, हाम और येपेत और उनकी पत्नियाँ जहाज़
पर चढ़ें। 14 वे लोग और पृथ्वी के हर एक प्रकार के जानवर जहाज़
में थे। हर प्रकार के मवेशी, पृथ्वी पर रेंगने वाले हर प्रकार के जीव
और हर प्रकार के पक्षी जहाज़ में थे। 15 ये सभी जानवर नूह के
साथ जहाज़ में चढ़े। हर जाति के जीवित जानवरों के ये जोड़े थे।
16 परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सभी जानवर जहाज़ में चढ़े। उनके
अन्दर जाने के बाद यहोवा ने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

17 चालीस दिन तक पृथ्वी पर जल प्रलय होता रहा। जल बढ़ना
शुरु हुआ और उसने जराज की जमीन से ऊपर उठा दिया। 18 जल
बढ़ता रहा और जहाज़ पृथ्वी से बहुत ऊपर तैरता रहा। 19 जल
इतना ऊँचा उठा कि ऊँचे–से–ऊँचे पहाड़ भी पानी में डूब गए।
20 जल पहाड़ों के ऊपर बढ़ता रहा। सबसे ऊँचे पहाड़ से तेरह हाथ
ऊँचा था।

21-22 पृथ्वी के सभी जीव मारे गए। हर एक स्त्री और पुरुष मर
गए। सभी पक्षियों और सभी तरह के जानवर मर गए। 23 इस तरह
परमेश्वर ने पृथ्वी के सभी जीवित हर एक मनुष्य, हर एक जानवर,
हर एक रेंगने वाले जीव और हर एक पक्षी को नष्ट कर दिया। वे
सभी पृथ्वी से खतम हो गए। केवल नूह, उसके साथ जहाज में
चढ़े लोगों और जानवरों का जीवन बचा रहा। 24 और जल एक सौ
पचास दिन तक पृथ्वी को डुबाए रहा।

8

जल प्रलय खतम होता है

1 लेकिन परमेश्वर नूह को नहीं भूला। परमेश्वर ने नूह और जहाज़
में उसके साथ रहने वाले सभी पशुओं और जानवरों के याद रखा।
परमेश्वर ने पृथ्वी पर आँधी चलाई और सारा जल गायब होने लगा।

2 आकाश से वर्षा रूक गई और पृथ्वी के नीचे से पानी का बहना
भी रूक गया। 3 पृथ्वी को डुबाने वाला पानी बरबर घटता चला
गया। एक सौ पचास दिन बाद पानी इतना उतर गया कि जहाज
फिर से भूमि पर आ गमा। 4 जहाज अरारात के पहाड़ों में से एक पर
आ टिका। यह सातवें महीने का सत्तरहवाँ दिन था। 5 जल उतरता
गया और दसवें महीने के पहले दिन पहाड़ों की चोटियाँ जल के
ऊपर दिखाई देने लगी।

6 जहाज में बनी खिड़की को नूह ने चालीस दिन बाद खोला। 7 नूह
ने एक कौवे को बाहर उड़ाया। कौवा उड़ कर तब तक फिरता रहा
जब तक कि पृथ्वी पूरी तरह से न सूख गयी। 8 नूह ने एक फाख्ता
भी बाहर भेजा। वह जानना चाहता था कि पृथ्वी का पानी कम
हुआ है या नहीं।

9 फ़ाख्ते को कहीं बैठने की जगह नहीं मिली क्योंकि अभी तक
पानी पृथ्वी पर फैला हुआ था। इसलिए वह नूह के पास जहाज़ पर
वापस लौट आया। नूह ने अपना हाथ बढ़ा कर फ़ाख्ते को वापस
जहाज़ के अन्दर ले लिया।

10 सात दिन बाद नूह ने फिर फ़ाख्ते को भेजा। 11 उस दिन दोपहर
बाद फ़ाख्ता नूह के पास आया। फ़ाख्ते के मुँह में एक ताजी जैतून
की पत्ती थी। यह चिन्ह नूह को यह बताने के लिए था कि अब पानी
पृथ्वी पर धीरे—धीरे कम हो रहा है। 12 नूह ने सात दिन बाद फिर
फ़ाख्ते को भेजा। किन्तु इस समय फ़ाख्ता लौटा ही नहीं।

13 उसके बाद नूह ने जहाज़ का दरवाजा खोला[*] नूह ने देखा और
पाया कि भूमि सूखी है। यह वर्ष के पहले महीने का पहला दिन था।

---

* **8:13:** दरवाजा खोला पर्दे को हटाया।

नूह छः सौ एक वर्ष का था। 14 दूसरे महीने के सत्ताइसवें दिन तक
भूमि पूरी तरह सूख गयी।
15 तब परमेश्वर ने नूह से कहा, 16 "जहाज़ को छोड़ो। तुम, तुम्हारी
पत्नी, तुम्हारे पुत्र और उनकी पत्नियाँ सभी अब बाहर निकलों।
17 हर एक जीवित प्राणी, सभी पक्षियों, जानवरों तथा पृथ्वी पर रेंगने
वाले सभी को जहाज़ के बाहर लाओ। ये जानवर अनेक जानवर
उत्पन्न करेंगे और पृथ्वी को फिर भर देंगे।"
18 अतः नूह अपने पुत्रों, अपनी पत्नी, अपने पुत्रों की पत्नियों के
साथ जहाज़ से बाहर आया। 19 सभी जानवरों, सभी रेंगने वाले जीवों
और सभी पक्षियों ने जहाज़ को छोड़ दिया। सभी जानवर जहाज़ से
नर और मादा के जोड़े में बाहर आए।
20 तब नूह ने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई। उसने कुछ शुद्ध
पक्षियों और कुछ शुद्ध जानवर† को लिया और उनको वेदी पर
परमेश्वर को भेंट के रूप में जलाया।
21 यहोवा इन बलियों की सुगन्ध पाकर खुश हुआ। यहोवा ने
मन—ही—मन कहा, "मैं फिर कभी मनुष्य के कारण पृथ्वी को शाप
नहीं दूँगा। मानव छोटी आयु से ही बुरी बातें सोचने लगता है।
इसलिए जैसा मैंने अभी किया है इस तरह मैं अब कभी भी सारे
प्राणियों को सजा नहीं दूँगा। 22 जब तक यह पृथ्वी रहेगी तब तक
इस पर फसल उगाने और फ़सल काटने का समय सदैव रहेगा।
पृथ्वी पर गरमी और जाड़ा तथा दिन औ रात सदा होते रहेंगे।"

9

नया आरम्भ

1 परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीष दी और उनसे
कहा, "बहुत से बच्चे पैदा करो और अपने लोगों से पृथ्वी को भर
दो। 2 पृथ्वी के सभी जानवर तुम्हारे डर से काँपेंगे और आकाश के

---

† **8:20:** शुद्ध जानवर वे पक्षियों और जानवर जिनके बारे में यहोवा ने कहा कि ये भोजन और बलि बनाए जा सकते हैं।

हर एक पक्षी भी तुम्हारा आदर करेंगे और तुमसे डरेंगे। पृथ्वी पर
रेंगने वाला हर एक जीव और समुद्र की हर एक मछली तुम लोगों
का आदर करेगी और तुम लोगों से डरेगी। तुम इन सभी के ऊपर
शासन करोगे। 3 बीते समय में तुमको मैंने हर पेड़—पौधे खाने को
दिए थे। अब हर एक जानवर भी तुम्हारा भोजन होगा। मैं पृथ्वी
की सभी चीजें तुमको देता हूँ—अब ये तुम्हारी हैं। 4 मैं तुम्हें एक
आज्ञा देता हूँ कि तुम किसी जानवर को तब तक न खाना जब तक
कि उसमें जीवन (खून) है। 5 मैं तुम्हारे जीवन बदले में तुम्हारा खून
मागूँगा। अर्थात् मैं उस जानवर का जीवन मागूँगा जो किसी व्यक्ति
को मारेगा और मैं हर एक ऐसे व्यक्ति का जीवन मागूँगा जो दूसरे
व्यक्ति की ज़िन्दगी नष्ट करेगा।"

6 "परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया है।
इसलिए जो कोई किसी व्यक्ति का खून बहाएगा, उसका खून
वयक्ति द्वारा ही बहाया जाएगा।"

7 "नूह तुम्हें और तुम्हारे पुत्रों के अनेक बच्चे हों और धरती को
लोगों से भर दो।"
8 तब परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों से कहा, 9 "अब मैं तुम्हें
और तुम्हारे वंशजों को वचन देता हूँ। 10 मैं यह वचन तुम्हारे साथ
जहाज़ से बाहर आने वाले सभी पक्षियों, सभी पशुओं तथा सभी
जानवरों को देता हूँ। मैं यह वचन पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों
को देता हूँ।" 11 मैं तुमको वचन देता हूँ, "जल की बाढ़ से पृथ्वी का
सारा जीवन नष्ट हो गया था। किन्तु अब यह कभी नहीं होगा। अब
बाढ़ फिर कभी पृथ्वी के जीवन को नष्ट नहीं करेगी।"
12 और परमेश्वर ने कहा, "यह प्रमाणित करने के लिए कि मैंने
तुमको वचन दिया है कि मैं तुमको कुछ दूँगा। यह प्रमाण बतायेगा
कि मैंने तुम से और पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों से एक वाचा

बाँधी है। यह वाचा भविष्य में सदा बनी रहेगी जिसका प्रमाण यह
है 13 कि मैंने बादलों में मेघधनुष बनाया है। यह मेघधनुष मेरे और
पृथ्वी के बीच हुए वाचा का प्रमाण है। 14 जब मैं पृथ्वी के ऊपर
बादलों को लाऊँगा तो तुम बादलों में मेघधनुष को देखोगे। 15 जब
मैं इस मेघधनुष को देखूँगा तब मैं तुम्हारे, पृथ्वी के सभी जीवित
प्राणियों और अपने बीच हुई वाचा को याद करूँगा। यह वाचा
इस बात की है कि बाढ़ फिर कभी पृथ्वी के प्राणियों को नष्ट नहीं
करेगी। 16 जब मैं ध्यान से बादलों में मेघधनुष को देखूँगा तब मैं
उस स्थायी वाचा को याद करूँगा। मैं अपने और पृथ्वी के सभी
जीवित प्राणियों के बीच हुई वाचा को याद करूँगा।”

17 इस तरह यहोवा ने नूह से कहा, “वह मेघधनुष मेरे और पृथ्वी
के सभी जीवित प्राणियों के बीच हुई वाचा का प्रमाण है।”

समस्यायें फिर शुरु होती है

18 नूह के पुत्र उसके साथ जहाज से बाहर आए। उनके नाम शेम,
हाम और येपेत था। (हाम तो कनान का पिता था।) 19 तीनों नूह के
पुत्र थे और संसार के सभी लोग इन तीनों से ही पैदा हुए।

20 नूह किसान बना। उसने अंगूरों का बाग लगाया। 21 नूह ने
दाखमधु बनाया और उसे पिया। वह मतवाला हो गया और अपने
तम्बू में लेट गया। नूह कोई कपड़ा नहीं पहना था। 22 कनान के पिता
हाम ने अपने पिता को नंगा देखा। तम्बू के बाहर अपने भाईयों से
हाम ने यह बताया। 23 तब शेम और येपेत ने एक कपड़ा लिया। वे
कपड़े को पीठ पर डाल कर तम्बू में ले गए। वे उल्टे मुँह तम्बू में
गए। इस तरह उन्होंने अपने पिता को नंगा नहीं देखा।

24 बाद में नूह सोकर उठा। (वह दाखमधु के कारण सो रहा था।)
तब उसे पता चला कि उसके सब से छोटे पुत्र हाम ने उसके बारे
में क्या किया है। 25 इसलिए नूह ने शाप दिया,

“यह शाप कनान के लिए हो
कि वह अपने भाईयों को दास हो।”

26 नूह ने यह भी कहा,

“शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य हो!
कनान शेम का दास हो।
27 परमेश्वर येपेत को अधिक भूमि दे।
परमेश्वर शेम के तम्बूओं में रहे
और कनान उनका दास बनें।”

28 बाढ़ के बाद नूह साढ़े तीन सौ वर्ष जीवित रहा। 29 नूह पूरे
साढ़े नौ सौ वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

10

राष्ट्र बढ़े और फैले

1 नूह के पुत्र शेम, हाम, और येपेत थे। बाढ़ के बाद ये तीनों बहुत से पुत्रों के पिता हुए। यहाँ शेम, हाम और येपेत से पैदा होने वाले पुत्रों की सूची दी जा रही है:

येपेत के वंशज

2 येपेत के पुत्र थे: गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल, मेशेक और तीरास।
3 गोमेर के पुत्र थे: अशकनज, रीपत और तोगर्मा
4 यावान के पुत्र थे: एलीशा, तर्शीश, कित्ती और दोदानी

5 भूमध्य सागर के चारों ओर तटों पर जो लोग रहने लगे वे येपेत के वंशज के ही थे। हर एक पुत्र का अपना अलग प्रदेश था। सभी परिवार बढ़े और अलग राष्ट्र बन गए। हर एक राष्ट्र की अपनी भाषा थी।

हाम के वंशज

6 हाम के पुत्र थे: कूश, मिस्र, फूत और कनान।
7 कूश के पुत्र थे: सबा, हबीला, सबता, रामा, सबूतका।
रामा के पुत्र थे: शबा और ददान।

8 कूश का एक पुत्र निम्रोद नाम का भी था। निम्रोद पृथ्वी पर
बहुत शक्तिशाली व्यक्ति हुआ। 9 यहोवा के सामने निम्रोद एक बड़ा
शिकारी था। इसलिए लोग दूसरे व्यक्तियों की तुलना निम्रोद से करते हैं और कहते है, "यह व्यक्ति यहोवा के सामने बड़ा शिकारी निम्रोद के समान है।"

10 निम्रोद का राज्य शिनार देश में बाबुल, एरेख और अव्कद
प्रदेश में प्रारम्भ हुआ। 11 निम्रोद अश्शूर में भी गया। वहाँ उसने
नीनवे, रहोबोतीर, कालह और 12 रेसेन नाम के नगरों को बसाया।
(रेसेन, नीनवे और बड़े शहर कालह के बीच का शहर है।)

13 मिस्रम (मिस्र) लूद, अनाम, लहाब, नप्तूह, 14 पत्रूस, कसलूह
और कप्तोर देशों के निवासियों का पिता था। (पलिश्ती लोग कसलूह लोगों से आए थे।)
15 कनान सीदोन का पिता था। सिदोन कनान का पहला पुत्र था।
कनान, हित का भी पिता था। 16 और कनान, यबूसी, एमोरी,
गिर्गाशी, 17 हिव्वी, अक◌्री, सीनी, 18 अर्बदी, समारी, हमाती
लोगों का पिता था।

कनान के परिवार संसार के विभिन्न भागों मे फैले। 19 कनान
लोगों का देश सीदोन से उत्तर में और दक्षिण में गरार तक, पश्चिम में अजा से पूर्व में सदोम और अमोरा तक, अदमा और सबोयीम से लाशा तक था।

20 ये सभी लोग हाम के वंशज थे। उन सभी परिवारों को अपनी भाषाएँ और अपने प्रदेश थे। वे अलग—अलग राष्ट्र बन गए।

शेम के वंशज

21 शेम येपेत का बड़ा भाई था। शेम का एक वंशज एबेर हिब्रू
लोगों का पिता था।*

22 शेम के पुत्र एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूद और अराम थे।
23 अराम के पुत्र ऊस, हूल, गेतेर और मश थे।
24 अर्पक्षद शेलह का पिता था।
शेलह एबेर का पिता था।
25 एबेर के दो पुत्र थे। एक पुत्र का नाम पेलेग था। उसे यह नाम
इसलिए दिया गया क्योंकि जीवन काल में धरती का विभाजन
हुआ। दूसरे भाई का नाम योक्तान था।
26 योक्तान अल्मोदाद, शेलेप, हसर्मावेत, येरह, 27 यदोरवाम,
ऊजाल, दिक्ला, 28 ओबाल, अबीमाएल, शवा, 29 ओपोर
हवीला और योबाब का पिता था। ये सभी लोग योक्तान की
संतान हुए। 30 ये लोग मेशा और पूर्वी पहाड़ी प्रदेश के बीच
की भूमि में रहते थे। मेशा सपारा प्रदेश की ओर था।

31 वे लोग शेम के परिवार से थे। वे परिवार, भाषा, प्रदेश और
राष्ट्र की इकाईयों में व्यवस्थित थे।
32 नूह के पुत्रों से चलने वाले परिवारों की यह सूची है। वे अपने—
अपने राष्ट्रो में बँटकर रहते थे। बाढ़ के बाद सारी पृथ्वी पर फैलने
वाले लोग इन्हीं परिवारों से निकले।

11

संसार बँटा

1 बाढ़ के बाद सारा संसार एक ही भाषा बोलता था। सभी लोग
एक ही शब्द समूह का प्रयोग करते थे। 2 लोग पूर्व से बढ़े। उन्हें
शिनार देश में एक मैदान मिला। लोग वहीं रहने के लिए ठहर गए।

---

* **10:21:** शेम … था एबेर के सन्तानों का पिता शेम से पैदा हुआ था।

3 लोगों ने कहा, “हम लोगों को ईंटें बनाना और उन्हें आग में तपाना
चाहिए, ताकि वे कठोर हो जाए।” इसलिए लोगों ने अपने घर बनाने के लिए पत्थरों के स्थान पर ईंटों का प्रयोग किया और लोगों ने गारे के स्थान पर राल का प्रयोग किया।

4 लोगों ने कहा, “हम अपने लिए एक नगर बनाएँ और हम एक
बहुत ऊँची इमारत बनाएँगे जो आकाश को छुएगी। हम लोग प्रसिद्ध हो जाएँगे। आगर हम लोग ऐसा करेंगे तो पूरी धरती पर बिखरेंगे नहीं, हम लोग एक जगह पर एक साथ रहेंगे।”

5 यहोवा नगर और बहुत ऊँची इमारत को देखने के लिए नीचे
आया। यहोवा ने लोगों को यह सब बनाते देखा। 6 यहोवा ने कहा,
“ये सभी लोग एक ही भाषा बोलते हैं और मैं देखता हूँ कि वे इस काम को करने के लिए एकजुट हैं। यह तो, ये जो कुछ कर सकते हैं उसका केवल आरम्भ है। शीघ्र ही वे वह सब कुछ करने के योग्य हो जाएँगे जो ये करना चाहेंगे। सब कुछ करने के योग्य हो जाएँगे
जो ये करना चाहेंगे। 7 इसलिए आओ हम नीचे चले और इनकी
भाषा को गड़बड़ कर दें। तब ये एक दूसरे की बात नहीं समझेगी।”

8 यहोवा ने लोगों को परी पृथ्वी पर फैला दिया। इससे लोगों ने
नगर को बनाना पूरा नहीं किया। 9 यही वह जगह थी जहाँ यहोवा
ने पूरे संसार की भाषा को गड़बड़ कर दिया था। इसलिए इस जगह का नाम बाबुल पड़ा। इस प्रकार यहोवा ने उस जगह से लोगों को पृथ्वी के सभी देशों में फैलाया।

शेम के परिवार की कथा

10 यह शेम के परिवार की कथा है। बाढ़ के दो वर्ष बाद जब शेम
सौ वर्ष का था उसके पुत्र अर्पक्षद का जन्म हुआ। 11 उसके बाद
शेम पाँच सौ वर्ष जीवित रहा। उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ थीं।

12 जब अर्पक्षद पैंतीस वर्ष का था उसके पुत्र शेलह का जन्म
हुआ। 13 शेलह के जन्म होने के बाद अर्पक्षद चार सौ तीन वर्ष
जीवित रहा। इन दिनों उसके दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुईं।

14 शेलह के तीस वर्ष के होने पर उसके पुत्र एबेर का जन्म हुआ।
15 एबेर के जन्म के बाद शेलह चार सौ तीन वर्ष जीवित रहा। इन
दिनों में उसके दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं।

16 एबेर के चौंतीस वर्ष के होने के बाद उसके पुत्र पेलेग का जन्म
हुआ। 17 पेलेग के जन्म के बाद एबेर चार सौ तीन वर्ष और जीवित
रहा। इन दिनों में इसको दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ हुईं।

18 जब पेलेग तीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र रु का जन्म हुआ।
19 रु के जन्म के बाद पेलेग दो सौ नौ वर्ष और जीवित रहा। उन
दिनों में उसके अन्य पुत्रियों और पुत्रों का जन्म हुआ।

20 जब रु बत्तीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र सरूग का जन्म हुआ।
21 सरूग के जन्म के बाद रु दो सौ सात वर्ष और जीवित रहा। इन
दिनों उसके दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ हुईं।

22 जब सरुग तीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र नाहोर का जन्म हुआ।
23 नाहोर के जन्म के बाद सरुग दो सौ वर्ष और जीवित रहा। इन
दिनों में उसके दूसरे पुत्रों और पुत्रियों का जन्म हुआ।

24 जब नाहोर उनतीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र तेरह का जन्म
हुआ। 25 तेरह के जन्म के बाद नाहोर एक सौ उन्नीस वर्ष और
जीवित रहा। इन दिनों में उसके दूसरी पुत्रियों और पुत्रों का जन्म
हुआ।

26 तेरह जब सत्तर वर्ष का हुआ, उसके पुत्र अब्राम, नाहोर और
हारान का जन्म हुआ।

तेरह के परिवार की कथा

27 यह तेरह के परिवार की कथा है। तेरह अब्राम, नाहोर और
हारान का पिता था। हारान लूत का पिता था। 28 हारान अपनी
जन्मभूमि कसदियों के उर नगर में मरा। जब हारान मरा तब उसका
पिता तेरह जीवित था। 29 अब्राम और नाहोर दोनों ने विवाह किया।
अब्राम की पत्नी सारै थी। नाहोर दोनों ने विवाह किया। अब्राहम
की पत्नी सारै थी। नाहोर की पत्नी मिल्का थी। मिल्का हारान की

पुत्री थी। हारान मिल्का और यिस्का का बाप था। 30 सारै के कोई
बच्चा नहीं था क्योंकि वह किसी बच्चे को जन्म देने योग्य नहीं थी।
31 तेरह ने अपने परिवार को साथ लिया और कसदियों के उर
नगर को छोड़ दिया। उन्होंने कनान की यात्रा करने का इरादा
किया। तेरह ने अपने पुत्र अब्राम, अपने पोते लूत (हारान का पुत्र),
अपनी पुत्रवधू (अब्राम की पत्नी) सारै को साथ लिया। उन्होंने
हारान तक यात्रा की और वहाँ ठहरना तय किया। 32 तेरह दो सौ
पाँच वर्ष जीवित रहा। तब वह हारान में मर गया।

12

परमेश्वर अब्राम को बुलाता है

1 यहोवा ने अब्राम से कहा,

“अपने देश और अपने लोगों को छोड़ दो।
अपने पिता के परिवार को छोड़ दो
और उस देश जाओ जिसे मै तुम्हें दिखाऊँगा।
2 मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा।
मैं तुझसे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा।
मैं तुम्हारे नाम को प्रसिद्ध करूँगा।
लोग तुम्हारे नाम का प्रयोग
दूसरों के कल्यान के लिए करेंगे।
3 मैं उन लोगों को आशीर्वाद दूँगा, जो तुम्हारा भला करेंगे।
किन्तु उनको दण्ड दूँगा जो तुम्हारा बुरा करेंगे।
पृथ्वी के सारे मनुष्यों को आशीर्वाद देने के लिए
मैं तुम्हारा उपयोग करूँगा।”

अब्राम कनान जाता है

4 अब्राम ने यहोवा को आज्ञा मानी। उसने हारान को छोड़ दिया
और लूत उसके साथ गया। इस समय अब्राम पचहत्तर वर्ष का था।

5 अब्राम ने जब हारान छोड़ा तो वह अकेला नहीं था। अब्राम अपनी पत्नी सारै, भतीजे लूत और हारान में उनके पास जो कुछ था, सहको साथ लाया। हारान में जो दास अब्राम को मिले थे वे भी उनके साथ गए। अब्राम और उसके दल ने हारान को छोड़ा और कनान देश
तक यात्रा की। 6 अब्राम ने कनान देश में शकेम के नगर और मोरे के बड़े पेड़ तक यात्रा की। उस समय कनानी लोग उस देश में रहते थे।

7 यहोव अब्राम के सामने आया* यहोवा ने कहा, "मैं यह देश तुम्हारे वंशजों को दूँगा।"

यहोवा अब्राम के सामने जिस जगह पर प्रकट हुआ उस जगह
पर अब्राम ने एक वेदी यहोवा की उपासना के लिए बनाया। 8 तब
अब्राम ने उस जगह को छोड़ा और बेतेल के पूर्व पहाड़ों तक यात्रा की। अब्राम ने वहाँ अपना तम्बू लगाया। बेतेल नगर पश्चिम में था। ये नगर पूर्व में था। उस जगह अब्राम ने यहोवा के लिए दूसरी वेदी
बनाई और अब्राम ने वहाँ यहोवा की उपासना की। 9 इसके बाद
अब्राम ने फिर यात्रा आरम्भ की। उसने नेगव की ओर यात्रा की।

मिस्र में अब्राम

10 इन दिनों भूमि बहुत सूखी थी। वर्षा नहीं हो रही थी और कोई खाने की चीज़ नहीं उग सकती थी। इसलिए अब्राम जीवित रहने के
लिए मिस्र चला गया। 11 अब्राम ने देखा कि उसकी पत्नी सारै बहुत सुन्दर थी। इसलिए मिस्रि में आने के पहले अब्राम ने सारै से कहा,
"मैं जानता हूँ कि तुम बहुत सुन्दर स्त्री हो। 12 मिस्र के लोग तुम्हें
देखेंगे। वे कहेंगे 'यह स्त्री इसकी पत्नी है।' तब वे मुझे मार डालेंगे
क्योंकि वे तुमको लेना चाहेंगे। 13 इसलिए तुम लोगों से कहना कि
तुम मेरी बहन हो। तब वे मुझको नहीं मारेंगे। वे मुझ पर दया करेंगे

* **12:7:** यहोवा … आया परमेश्वर प्राय: विशेष रीति से दिखाई पड़ा। जिससे लोग उसे देख सके जैसे आदमी, स्वर्गदूत, आग तो कभी तेज ज्योति बनता था।

क्योंकि वे समझेंगे कि मैं तुम्हारा भाई हूँ। इस तरह तुम मेरा जीवन
बचाओगी।”
14 इस प्रकार अब्राम मिस्र में पहुँचा। मिस्र के लोगों ने देखा, सारै
बहुत सुन्दर स्त्री है। 15 कुछ मिस्र के अधिकारियों ने भी उसे देखा।
उन्होंने फ़िरौन से कहा कि वह बहुत सुन्दर स्त्री है। वे अधिकारी
सारै को फ़िरौन के घर ले गए। 16 फिरौन ने अब्राम के ऊपर दया की
क्योंकि उसने समझा कि वह सारै का भाई है। फ़िरौन ने अब्राम को
भेड़ें, मवेशी और गधे दिए। अब्राम को ऊँटों के साथ—साथ आदमी
और स्त्रियाँ दास—दासी के रूप में मिले।
17 फ़िरौन अब्राम की पत्नी को रख लिया। इससे यहोवा ने फ़िरौन
और उसके घर के मनुष्यों में बुरी बीमारी फैला दी। 18 इसलिए
फिरौन ने अब्राम को बुलाया। फ़िरौन ने कहा, “तुमने मेरे साथ बड़ी
बुराई की है। तुमने यह नहीं बताया कि सारै तुम्हारी पत्नी है। क्यों?
19 तुमने कहा, ‘यह मेरी बहन है।’ तुमने ऐसा क्यों कहा? मैंने इसे
इसलिए रखा कि यह मेरी पत्नी होगी। किन्तु अब मैं तुम्हारी पत्नी
को तुम्हें लौटाता हूँ। इसे लो और जाओ।” 20 तब फ़िरौन ने अपने
पुरुषों को आज्ञा दी कि वे अब्राम को मिस्र के बाहर पहुँचा दे। इस
तरह अब्राम और उसकी पत्नी ने वह जगह छोड़ी और वे सभी चीज़े
अपने साथ ले गए जो उनकी थीं।

13

अब्राम कनान लौटा

1 अब्राम ने मिस्र छोड़ दिया। अब्राम ने अपनी पत्नी तथा अपने
सभी सामान के साथ नेगव से होकर यात्रा की। लूत भी उसके साथ
था। 2 इस समय अब्राम बहुत धनी था। उसके पास बहुत से जानवर,
बहुत सी चाँदी और बहुत सा सोना था।
3 अब्राम चारों तरफ यात्रा करता रहा। उसने नेगेव को छोड़ा और
बेतेल को लौट गया। वह बेतेल नगर और ऐ नगर के बीच के प्रदेश
में पहुँचा। यह वही जगह थी जहाँ अब्राम और उसका परिवार पहले

तम्बू लगाकर ठहरा था। 4 यह वही जगह थी जहाँ अब्राम ने एक
वेदी बनाई थी। इसलिए अब्राम ने यहाँ यहोवा की उपासना की।

अब्राम और लूत अलग हुए

5 इस समय लूत भी अब्राम के साथ यात्रा कर रहा था। लूत के
पास बहुत से जानवर और तम्बू थे। 6 अब्राम और लूत के पास इतने
अधिक जानवर थे कि भूमि एक साथ उनको चारा नहीं दे सकती
थी। 7 (उन दिनों कनानी लोग और परिजी लोग भी इसी प्रदेश में
रहते थे।) अब्राम और लूत के मज़दूर आपस में बहस करने लगे।

8 अब्राम ने लूत से कहा, "हमारे और तुम्हारे बीच कोई बहस नहीं
होनी चाहिए। हमारे और तुम्हारे लोग भी बहस न करें। हम सभी
भाई हैं। 9 हम लोगों को अलग हो जाना चाहिए। तुम जो चाहो जगह
चुन लो। अगर तुम बायीं ओर जाओगे तो मैं बायीं ओर जाऊँगा।"
अगर तुम बायीं ओर जाओगे तो मैं दाहिनी ओर जाऊँगा। अगर तुम
दाहिनी ओर जाओगे तो मैं बायीं ओर जऊँगा।

10 लूत ने निगाह दौड़ाई और यरदन की घाटी को देखा। लूत ने
देखा कि वहाँ बहुत पानी है। (यह बात उस समय की है जब यहोवा
ने सदोम और अमोरा को नष्ट नहीं किया था। उस समय यरदन की
घाटी सोअर तक यहोवा के बाग की तरह पूरे रास्ते के साथ–साथ
फैली थी। यह प्रदेश मिस्र देश की तरह अच्छा था।) 11 इसलिए
लूत ने यरदन घाटी में रहना स्वीकार किया। इस तरह दोनों व्यक्ति
अलग हुए और लूत ने पूर्व की ओर यात्रा शुरू की। 12 अब्राम कनान
प्रदेश में रहा और लूत घाटी के नगरों में रहा। लूत सदोम के दक्षिण
में बढ़ा और ठहर गया। 13 सदोम के लोग बहुत पापी थे। वे हमेशा
यहोवा के विरुद्ध पाप करते थे।

14 जब लूत चला गया तब यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने चारों
ओर देखो, उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की ओर देखो। 15 यह सारी
भूमि, जिसे तुम देखते हो, मैं तुमको और तुम्हारे बाद जो तुम्हारे लोग

रहेंगे उनको देता हूँ। यह प्रदेश सदा के लिए तुम्हारा है। 16 मै तुम्हारे
लोगों को पृथ्वी के कणों के समान अनगिनत बनाऊँगा। अगर कोई
व्यक्ति पृथ्वी के कणों को गिन सके तो वह तुम्हारे लोगों को भी
गिन सकेगा। 17 इसलिए जाओ। अपनी भूमि पर चलो। मैं इसे अब
तुमको देता हूँ।"

18 इस तरह अब्राम ने अपने तम्बू हटाया। वह मम्रे के बड़े पेड़ों
के पास रहने लगा। यह हेब्रोन नगर के करीब था। उस जगह पर
अब्राम ने एक वेदी यहोवा की उपासना के लिए बनायी।

14

लूत पकड़ा गया

1 अम्रपेल शिनार का राजा था। अर्योक एल्लासार का राजा था।
कदोर्लाओमेर एलाम का राजा था। तिदाल गोयीम का राजा था।
2 इन सभी राजाओं ने सदोम के राजा बेरा, अमोरा के राजा बिर्शा,
अद्मा के राजा शिनाब, सबोयीम के राजा शेमेबेर तथा बेला (बेला
सोअर भी कहा जाता है) के राजा के साथ एक लड़ाई लड़ी।

3 सिद्दीम की घाटी में ये सभी राजा अपनी सेनाओं से मिले।
(सिद्दीम की घाटी आज—कल लवण सागर है।) 4 इन राजाओं ने
कदोर्लाओमेर की सेवा बारह वर्ष तक की थी। किन्तु तेरहवें वर्ष
वे सभी उसके विरुद्ध हो गए। 5 इसलिए चौदहवें वर्ष कदोर्लाओमेर
अन्य राजाओं के साथ उनसे लड़ने आया। कदोर्लाओमेर और
उसके साथ के राजाओं ने रपाई लोगों को अशतरोत्कनम में हराया।
उन्होंने हाम में जीजि लोगों को भी हराया। उन्होंने एमि लोगों को
शाबेकिर्यातैम में हराया 6 और उन्होंने होरीत लोगों को सेईर के
पहाड़ी प्रदेश से हराकर एल्पारान की ओर भगाया। (एल्पारान
मरूभूमि के करीब है।) 7 तब राजा कदोर्लाओमेर पीछे को मुड़ा
और एन्मिशपात को गया। (यह कादेश भी कहलाता है।) और सभी
अमालेकी लोगों को हराया। उसने एमोरी लोगों को भी हराया। ये
लोग हससोन्तामार में रहते हैं।

8 उस समय सदोम का राजा, अमोरा का राजा, अदमा का राजा,
सबोयीम का राजा, और बेला का राजा, (बेला सोओर की है।) सभी
एक साथ मिलकर अपने शत्रुओं से लड़ने के लिए गए। 9 वे एलाम
के राजा कदोर्लाओमेर, गोयीम के राजा तिदाल, शिनार के राजा
अम्रापेल, और एल्लासार के राजा अर्योक से लड़े। इस तरह चार
राजा पाँच राजाओं से लड़ रहे थे।

10 सिद्दीम की घाटी में राल से भरे हुए अनेक गर्के थे। सदोम
और अमोरा के राजा और उनकी सेनाँए भाग गई। अनेक सैनिक
उन गद्‌ढों में गिर गए। किन्तु दूसरे लोग पहाड़ी में भाग गए।

11 सदोम और अमोरा के पास जो कुछ था उसे उनके शत्रुओं ने ले
लिया। उन्होंने उनके सारे भोजन—वस्त्रों को ले लिया और वे चले
गए। 12 अब्राम के भाई का पुत्र लूत सदोम में रहता था, उसे शत्रुओं
ने पकड़ लिया। उसके पास जो कुछ था उसे भी शत्रु लेकर चले
गए। 13 एक व्यक्ति ने, जो पकड़ा नहीं जा सका था उसने अब्राम
(जो हिब्रू था) को ये सारी बातें बतायीं। एमोरी मम्रे के पेड़ों के पास
अब्राम ने अपना डेरा डाला था। मम्रे एशकोल और आनेर के एक
सन्धि एक दूसरे की मदद के लिए की थी* और उन्होंने अब्राम की
मदद के लिए भी एक वाचा की थी।

अब्राम लूत को छूड़ाता है

14 जब अब्राम को पता चला कि लूत पकड़ा गया है। तो उसने
अपने पूरे परिवार को इकट्ठा किया और उनमें से तीन सौ अट्ठारह
प्रशिक्षित सैनिकों को लेकर अब्राम ने दान नगर तक शत्रुओं का
पीछा किया। 15 उसी रात उसने और उसके पुरुषों ने शत्रुओं पर
अचानक धावा बोल दिया। उन्होंने शत्रुओं को हराया था दमिश्क
के उत्तर में होबा तक उनका पीछा किया। 16 तब अब्राम शत्रु द्वारा
चुराई गई सभी चीज़ें लाया। अब्राम स्त्रियों, नौकर, लूत और लूत
की अपनी सभी चीज़ें ले आया।

* **14:13:** मम्रे … थी एश्कोल का भाई और अनेर का भाई था।

17 कदोर्लाओमेर और उसके साथ के सभी राजाओं को हराने के
बाद अब्राम अपने घर लौट आय। जब वह घर आया तो सदोम का
राजा उससे मिलने शावे की घाटी पहुँचा। (इसे अब राजा की घाटी
कहते हैं।)

मेल्कीसेदेक

18 शालेम का राजा मेल्कीसेदेक भी अब्राम से मिलने गया।
मेल्कीसेदेक, सबसे महान परमेश्वर का याजक था। मेल्कीसेदेक
रोटी और दाखरस लाय। 19 मेल्कीसेदेक ने अब्राम को आशीर्वाद
दिया और कहा:

"अब्राम, सबसे महान परमेश्वर तुम्हें आशीष दे।
परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश बनाया।
20 और हम सबसे महान परमेश्वर की स्तुति करते हैं।
परमेश्वर ने शत्रुओं को हराने में तुम्हारी मदद की।"

तब अब्राम ने लड़ाई में मिली हर एक चीज़ का दसवाँ हिस्सा
मल्कीसेदेक को दिया। 21 तब सदोम के राजा ने कहा, "तुम ये सभी
चीज़ें अपने पास रख सकते हो, मुझे केवल मेरे उन मनुष्यों को दे
दो जिन्हें शत्रु पकड़ कर ले गए थे।"

22 किन्तु अब्राम ने सदोम के राजा से कहा, "मैंने सबसे महान
परमेश्वर यहोवा जिसने पृथ्वी और आकाश को बनाया हाय। उसके
सम्मुख यह शपथ ली है 23 कि जो आपकी चीज़ है उसमें से कुछ भी
न लूँगा। यहाँ तक कि एक धागा व जूते का तस्मा भी नहीं लूँगा।
मैं यह नहीं चाहता कि आप कहें, 'मैंने अब्राम को धनी बनाया।'
24 मैं केवल वह भोजन स्वीकार करूँगा जो हमारे जवानों ने खाया
है किन्तु आप दूसरे लोगों को उनका हिस्सा दें। हमारी लड़ाई में
जीती हुई चीज़ें आप लें और इसमें से कुछ आनेर, एश्कोल और
मस्रे को दें। इन लोगों ने लड़ाई में मेरी मदद की थी।"

15

अब्राम के साथ परमेश्वर की वाचा

1 इन बातों के हो जाने के बाद यहोवा का आदेश अब्राम को एक दर्शन में आया। परमेश्वर ने कहा, "अब्राम, डरो नहीं। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा और मैं तुम्हें एक बड़ा पुरस्कार दूँगा।"

2 किन्तु अब्राम ने कहा, "हे यहोवा ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे तू मुझे देगा और वह मुझे प्रसन्न करेगा। क्यों? क्योंकि मेरे पुत्र नहीं है। इसलिए मेरा दास दमिश्क का निओवासी एलीएजेर मेरे मरने के
बाद मेरा सब कुछ पाएगा।" 3 अब्राम ने कहा, "तू ही देख, तूने मुझे
कोई पुत्र नहीं दिया है। इसलिए मेरे घर में पैदा एक दास मेरी सभी चीज़ें पाएगा।"

4 तब यहोवा ने अब्राम से बातें की। परमेश्वर ने कहा, "तुम्हारी चीज़ों को तुम्हारा यह दास नहीं पाएग। तुमको एक पुत्र होगा और तुम्हारा पुत्र ही तुम्हारी चीज़ें पाएगा।"

5 तब परमेश्वर अब्राम को बाहर ले गया। परमेश्वर ने कहा, "आकाश को देखो। अनेक तारों को देखो। ये इतने हैं कि तुम गिन नहीं सकते। भविष्य में तुम्हारा कुटुम्ब ऐसा ही होगा।"

6 अब्राम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और परमेश्वर ने उसके
विश्वास को एक अच्छा काम माना, 7 परमेश्वर ने अब्राम से कहा,
"मैं ही वह यहोवा हूँ जो तुम्हें कसदियों के ऊर से बाहर लाया। यह मैंने इसलिए किया कि यह प्रदेश मैं तुम्हें दे सकूँ, तुम इस प्रदेश को अपने कब्ज़े में कर सको।"

8 किन्तु अब्राम ने कहा, "हे यहोवा, मेरे स्वामी, मुझे कैसे विश्वास हो कि यह प्रदेश मुझे मिलेगा?"

9 परमेश्वर ने अब्राम से कहा, "हम लोग एक वाचा बांधेंगे। तुम मुझको तीन वर्ष की एक गाय, तीन वर्ष की एक बकरी, और तीन वर्ष का एक भेड़ लाओ। एक फ़ाख्ता और एक कबूतर का बच्चा भी लाओ।"

10 अब्राम ये सभी चीज़ें परमेश्वर के पास लाया। अब्राम ने इन
प्राणियों को मार डला और हर एक के दो टुकड़े कर डाले। अब्राम
ने एक आधा टुकड़ा एक तरफ तथा उसका दूसरा आधा टुकड़ा
उसके विपरीत दूसरी तरफ रखा। अब्राम ने पक्षियों के दो टुकड़े
नहीं किए। 11 थोड़ी देर बाद माँसहारी पक्षी वेदी पर चढ़ाए हुए मृत
जीवों को खाने के लिए नीचे आए किन्तु अब्राम ने उनको भगा
दिया।

12 बाद में सूरज डूबने लगा। अब्राम को गहरी नींद आ गयी।
घन—घोर अंधकार ने उसे चारों तरफ से घेर लिया। 13 तब यहोवा
ने अब्राम से कहा, "तुम्हें ये बातें जाननी चहिए। तुम्हारे वंशज विदेशी
बनेंगे और वे उस देश में जांएगे जो उनका नहीं होगा। वे वहाँ दास
होंगे। चार सौ वर्ष तक उनके साथ बुरा व्यवहार होगा। 14 मैं उस
राष्ट्र का न्याय करूँगा तथा उसे सजा दूँगा, जिसने उन्हें गुलाम
बनाया और जब तुम्हारे बाद स्न्र ब्स्ल्र लोग उस देश को छेड़ेंगे तो
अपने साथ अनेक अच्छी वस्तुएं ले जायेंगे।"

15 "तुम बहुत लम्बी आयु तक जीवित रहोगे। तुम शान्ति के साथ
मरोगे और तुम अपने पुरखाओं के पास दफनाए जाओगे। 16 चार
पीढ़ियों के बाद तुम्हारे लोग इसी प्रदेश में फिर आएंगे। उस समय
तुम्हारे लोग एमोरियों को हरांएगे। यहाँ रहने वाले एमोरियों को, दण्ड
देने के लिए मैं तुम्हारे लोगों का प्रयोग करूँगा। यह बात भविष्य में
होगी क्योंकि एमोरी दण्ड पाने येग्य बुरे अही नहीं हुए हैं।"

17 जब सूरज ढ़ल गया, तो बहुत अंधेरा छा गया। मृत जानवर
अभी तक जमीन पर पड़े हुए थे। हर जानवर दो भागों में कटे पड़े थे।
उसी समय धुएँ तथा आग का एक खम्भा* मरे जानवरों के तुकड़ों

* **15:17:** धुँए ... का खम्भा इन चिन्हों को परमेश्वर दिखाया करता था जिससे लोग जाने कि परमेश्वर उनके साथ है।

के बीच से गुजरा।†

18 इस तरह उस दिन यहोवा ने अब्राम को वचन दिया और उसके
साथ वाचा की। यहोवा ने कहा, "मैं यह प्रदेश तुम्हारे वंशजों को
दूँगा। मैं मिस्र की नदी और बाड़ी नदी परात के बीच का प्रदेश उनको
दूँगा। 19 यह देश केनी, कनिज्जी, कदमोनी, 20 हित्ती, परीज्जी, रपाई,
21 एमोरी, कनानी, गिर्गाशी तथा यबूसी लोगों का है।"

16

दासी हाजिरा

1 सारै अब्राम की पत्नी थी। अब्राम और उसके कोई बच्चा नहीं
था। सारै के पास एक मिसर की दासी थी। उसका नाम हाजिरा था।
2 सारै ने अब्राम से कहा, "देखो, यहोवा ने मुझे कोई बच्चा नहीं दिया
है। इसलिए मेरी दासी को रख लो। मैं इसके बच्चे को अपना बच्चा
ही मान लूँगी।" अब्राम ने अपनी पत्नी का कहना मान लिया।

3 कनान में अब्राम के दस वर्ष रहने के बाद यह बात हुई और
सारै (हाजिरा मिस्री दासी थी।)

4 हाजिरा, अब्राम से गर्भवती हुई। जब हाजिरा ने यह देखा तो उसे
बहुत गर्व हुआ और यह अनुभव करने लगी कि मैं अपनी मालकिन
सारै से अच्छी हूँ। 5 लेकिन सारै ने अब्राम से कहा, "मेरी दासी अब
मुझसे घृणा करती हऐ और इसके लिए मैं तुमको दोषी मानती हूँ।
मैंने उसको तुमको दिया। वह गर्भवती हुई और तब वह अनुभव
करने लगी कि वह मुझसे अच्छी है। मैं चाहती हूँ कि यहोवा सही
न्याय करे।"

---

† **15:17:** मरे … गुजरा इससे यह पता चला कि परमेश्वर ने अब्राम और अपने बीच की वाचा पर इस्ताक्षर कर दिया है या अपनी मुहर लगा दी है। जब लोग वाचा करते थे तो कटे जानवरों के बीच से जाते थे और कछ इस तरह कहते थे। यदि मैं वाचा का पालन न करूँ तो मेरे साथ भी ऐसा ही हो।

6 लेकिन अब्राम ने सारै से कहा, "तुम हाजिरा की मालकिन हो।
तुम उसके साथ जो चाहो कर सकती हो।" इसलिए सारै ने अपनी
दासी को दाण्ड दिया और उसकी दासी भाग गई।

हाजिरा का पुत्र इश्माएल

7 यहोवा के दूत ने मरुभूमि में पानी के सोते के पास दासी को
पाया। यह सोता शूर जाने वाले रास्ते पर था। 8 दूत ने कहा, "हाजिरा,
तुम सारै की दासी हो। तुम यहाँ क्यों हो? तुम कहाँ जा रही हो?"

हाजिरा ने कहा, "मैं अपनी मालकिन सारै के यहाँ से भाग रही हूँ।"

9 यहोवा के दूत ने उससे कहा, "तुम अपनी मालकिन के घर
जाओ और उसकी बातें मानो।" 10 यहोवा के दूत ने उससे यह भी
कहा, "तुमसे बहुत से लोग उत्पन्न होंगे। ये लो गितने हो जाएंगे कि
गिने नहीं जा सकेंगे।"

11 दूत ने और भी कहा,

"अभी तुम गर्भवती हो और तुम्हे एक पुत्र होगा।
तुम उसका नाम इश्माएल रखना।
क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे कष्ट को सुना है
और वह तुम्हारी मदद करेगा।
12 इश्माएल जंगली और आजाद होगा
एक जंगली गधे की तरह।
वह सबके विरुद्ध होगा।
वह एक स्थान से दूसरे स्थान को जाएगा।
वह अपने भाइयों के पास अपना डेरा डालेगा
किन्तु वह उनके विरुद्ध होगा।"

13 तब यहोवा ने हाजिरा से बातें की उसने परमेश्वर को जो उससे
बातें कर रहा था, एक नए नाम से पुकारा। उसने कहा, "तुम वह
'यहोवा हो जो मुझे देखता है।' " उसने उसे वह नाम इसलिए दिया

क्योंकि उसने अपने–आप से कहा, "मैंने देखा है कि वह मेरे ऊपर
नज़र रखता है।" 14 इसलिए उस कुएँ का नाम लहैरोई पड़ा। यह
कुआँ कादेश तथा बेरेद के बीच में है।

15 हाजिरा ने अब्राम के पुत्र को जन्म दिया। अब्राम ने पुत्र का
नाम इश्माएल रखा। 16 अब्राम उस समय छियासी वर्ष का था जब
हाजिरा ने इश्माएल को जन्म दिया।

17

खतना वाचा का सबूत

1 जब अब्राम निन्यानवे वर्ष का हुआ, यहोवा ने उससे बात की।
यहोवा ने कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ।* मेरे लिए ये काम
करो। मेरी आज्ञा मानो और सही रास्ते पर चलो। 2 अगर तुम यह
करो तो मैं अपने और तुम्हारे बीच एक वाचा तैयार करूँगा। मैं
तुम्हारे लोगों को एक महान राष्ट्र बनाने का वचन दूँगा।"

3 अब्राम ने अपना मुँह जमीन की ओर झुकाया। तब परमेश्वर
ने उससे बात–चीत की और कहा, 4 "हमारी वाचा का यह भाग
मेरा है। मैं तुम्हें कई राष्ट्रों का पिता बनाऊँगा। 5 मैं तुम्हारे नाम को
बदल दूँगा। तुम्हारा नाम अब्राम नहीं रहेगा। तुम्हारा नां इब्राहीम
होगा। मैं तुम्हें यह नाम इसलिए दे रहा हूँ कि तुम बहुत से राष्ट्रों के
पिता बनोगे।" 6 "मैं तुमको बहुत वंशज दूँगा। तुमसे नए राष्ट्र उत्पन्न
होंगे। तुमसे नए राजा उत्पन्न होंगे 7 और मैं अपने और तुम्हारे बीच
एक वाचा करूँगा। यह वाचा तुम्हारे सभी वंशजों के लिए होगी।
मैं तुम्हारा और तुम्हारे सभी वंशजों का परमेश्वर रहूँगा। यह वाचा
सदा के लिए बनी रहेगी 8 और मैं यह प्रदेश तुमको और तुम्हारे सभी
वंशजों को दूँगा। मैं वह प्रदेश तुम्हें दूँगा जिससे होकर तुम यात्रा कर

* **17:1:** मैं … परमेश्वर हूँ शाब्दिक, "अल शददइ।"

रहे हो। मैं तुम्हें कनान प्रदेश दूँगा। मैं तुम्हें यह प्रदेश सदा के लिए
दूँगा और मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा।”

9 परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, “अब वाचा का यह तुम्हारा भाग
है। मेरी इस वाचा का पालन तुम और तुम्हारे वंशज करोगे। 10 यह
वाचा है जिसका तुम पालन करोगे। यह वाचा मेरे और तुम्हारे बीच
है। यह तुम्हारे सभी वंशजों के लिए है। हर एक बच्चा जो पैदा होगा
उसका खतना अवश्य होगा। 11 तुम चमड़े को यह बताने के लिए
काटोगे कि तुम अपने और मेरे बीच के वाचा का पालन करते
हो। 12 जब बच्चा आठ दिन का हो जाए, तब तुम उसका खतना
करना। हर एक लड़का जो तुम्हारे लोगों में पैडा हो या कोई लड़का
जो तुम्हारे लोगों का दास हो, उसका खतना अवश्य होगा। 13 इस
प्रकार तुम्हारे राष्ट्र के प्रत्येक बच्चे का खतना होगा। जो लड़का
तुम्हारे परिवार में उत्पन्न होगा या दास के रूप में खरीदा जाएगा
उसका खतना होगा। 14 यही मेरा नियम है और मेरे और तुम्हारे
बीच वाचा है। जिस किसी व्यक्ति का खतना नहीं होगा वह तुम्हारे
लोगों से अलग कर दिया जाएगा। क्यों? क्योंकि उस व्यक्ति ने मेरी
वाचा तोड़ी है।”

इसहाक प्रतिज्ञा का पुत्र

15 परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, “मैं सारै को जो तुम्हारी पत्नी है,
नया नाम दूँगा। उसका नाम सारा होगा। 16 मैं उसे आशीर्वाद दूँगा।
मैं उसे पुत्र दूँगा और तुम पिता होगे। वह बहुत से नए राष्ट्रों की माँ
होगी। उससे राष्ट्रों के राजा पैदा होंगे।”

17 इब्राहीम ने अपना सिर परमेश्वर को भक्ति दिखाने के लिए
जमीन तक झुकाया। लेकिन वह हँसा और अपने से बोला, “मैं सौ
वर्ष का बूढ़ा हूँ। मैं पुत्र पैदा नहीं कर सकता और सारा नब्बे वर्ष
की बुढ़िया है। वह बच्चों को जन्म नहीं दे सकती।”

18 तब इब्राहीम के कहने का मतलब परमेश्वर से पूछा, “क्या
इश्माएल जीवित रहे और तेरी सेवा करे?”
19 परमेश्वर ने कहा, “नहीं, मैंने कहा कि तुम्हारी पत्नी सारा पुत्र
को जन्म देगी। तुम उसका नाम इसहाक रखोगे। मैं उसके साथ
वाचा करूँगा। यह वाचा ऐसी होगी जो उसके सभी वंशजों के साथ
सदा बनी रहेगी।
20 “तुमने मुझसे इश्माएल के बारे में पूछा और मैंने तुम्हारी बात
सुनी। मैं उसे आशीर्वाद दूँगा। उसके बहुत से बच्चे होंगे। वह बारह
बड़े राजाओं का पिता होगा। उसका परिवार एक बड़ा राष्ट्र बनेगा।
21 मैं अपनी वाचा इसहाक के साथ बनाऊँगा। इसहाक ही वह पुत्र
होगा जिसे सारा जनेगी। यह पुत्र अगले वर्ष इसी समय में पैदा
होगा।”
22 परमेश्वर ने जब इब्राहीम से बात करनी बन्द की, इब्राहीम
अकेला रह गया। परमेश्वर इब्राहीम के पास से आकाश की ओर उठ
गया। 23 परमेश्वर ने कहा था कि तुम अपने कुटुम्ब के सभी लड़कों
और पुरुषों का खतना कराना। इसलिए इब्राहीम ने इश्माएल और
अपने घर में पैदा सभी दासों को एक साथ बुलाया। इब्राहीम ने उन
दासों को भी एक साथ बुलाया जो धन से खरीदे गए थे। इब्राहीम के
घर के सभी पुरुष और लड़के इकट्ठे हुए और उन सभी का खतना
उसी दिन उनका माँस काट कर दिया गया।
24 जब खतना हुआ इब्राहीम निन्यानबे वर्ष का था 25 और उसका
पुत्र इश्माएल खतना होने के समय तेरह वर्ष का था। 26 इब्राहीम
और उसके पुत्र का खतना उसी दिन हुआ। 27 उसी दिन इब्राहीम
के सभी पुरुषों का खतना हुआ। इब्राहीम के घर में पैदा सभी दासों
और खरीदे गए सभी दासों का खतना हुआ।

18

तीन अतिथि

1 बाद में यहोवा फिर इब्राहीम के सामने प्रकट हुआ। इब्राहीम
मम्रे के बांज के पेड़ों के पास रहता था। एक दिन, दिन के सबसे गर्म
पहर में इब्राहीम अपने तम्बू के दरवाज़े पर बैठा था। 2 इब्राहीम ने
आँख उठा कर देखा और अपने सामने तीन पुरुषों को खड़े पाया।
जब इब्राहीम ने उनको देखा, वह उनके पास गया और उन्हें प्रणाम
किया। 3 इब्राहीम ने कहा, "महोदयों,* आप अपने इस सेवक के
साथ ही थोड़ी देर ठहरें। 4 मैं आप लोगों के पैर धोने के लिए पानी
लाता हूँ। आप पेड़ों के नीचे आराम करें। 5 मैं आप लोगों के लिए
कुछ भोजन लाटा हूँ और आप लोग जितना चाहें खाए। इसके बाद
आप लोग अपनी यात्रा आरम्भ कर सकते हैं।"

तीनों ने कहा, "यह बहुत अच्छा है। तुम जैसा कहते हो, करो।"

6 इब्राहीम जल्दी से तम्बू में घुसा। इब्राहीम ने सारा से कहा,
"जल्दी से तीन रोटियों के लिए आटा तैयार करो।" 7 तब इब्राहीम
अपने मवेशियों की ओर दौड़ा। इब्राहीम ने सबसे अच्छा एक जवान
बछड़ा लिया। इब्राहीम ने बछड़ा नौकर को दिया। इब्राहीम ने नौकर
से कहा कि तुम जल्दी करो, इस बछड़े को मारो और भोजन के लिए
तैयार करो। 8 इब्राहीम ने तीनों को भोजन के लिए माँस दिया। उसने
दूध और मक्खन दिया। जब तक तीनों पुरुष खाते रहे तब तक
इब्राहीम पेड़ के नीचे उनके पास खड़ा रहा।

9 उन व्यक्तियों ने इब्राहीम से कहा, "तुम्हारी पत्नी सारा कहाँ
है?"

इब्राहीम ने कहा, "वह तम्बू में है।"

10 तब यहोवा ने कहा, "मैं बसन्त में फिर आऊँगा उस समय
तुम्हारी पत्नी सारा एक पुत्र को जन्म देगी।"

सारा तम्बू में सुन रही थी और उसने इन बातों को सुना।
11 इब्राहीम और सारा दोनों बहुत बूढ़े थे। सारा प्रसव की उम्र को

---

* **18:3:** महोदय इस हिब्रू शब्द का अर्थ "सामन्त" या "यहोवा" हो सकता है। इससे पता चल सकता है कि वे साधारण पुरुष नहीं थे।

पार कर चुकी थी। 12 सारा मन ही मन मुस्करायी। उसे अपने कानों
पर विश्वास नहीं हुआ। उसने अपने आप से कहा, "मैं और मेरे पति
दोनों ही बूढे हैं। मैं बच्चा जनने के लिए काफी बूढ़ी हूँ।"

13 तब यहोवा ने इब्राहीम से कहा, "सारा हंसी और बोली, 'मैं
इतनी बूढ़ी हूँ कि बच्चा जन नहीं सकती।' 14 क्या यहोवा के लिए
कुछ भी असम्भव है? नही, मैं फिर बसन्त में अपने बताए समय पर
आऊँगा और तुम्हारी पत्नी सारा पुत्र जनेगी।"

15 लेकिन सारा ने कहा, "मैं हंसी नहीं।" (उसने ऐसा कहा, क्योंकि
वह डरी हुई थी।)

लेकिन यहोवा ने कहा, "नहीं, मैं मानता हूँ कि तुम्हारा कहना
सही नहीं है। तुम ज़रूर हँसी।"

16 तब वे पुरुष जाने के लिए उठे। उन्होंने सदोम की ओर देखा
और उसी ओर चल पड़े। इब्राहीम उनको विदा करने के लिए कुछ
दूर तक उनके साथ गया।

परमेश्वर के साथ इब्राहीम का सौदा

17 यहोवा ने मन में कहा, "क्या मैं इब्राहीम से वह कह दूँ जो
मैं अभी करूँगा? 18 इब्राहीम एक बड़ा और शक्तिशाली राष्ट्र बन
जाएगा। इसी के कारण पृथ्वी के सारे मनुष्य आशीर्वाद पायेंगे।
19 मैंने इब्राहीम के साथ खास वाचा की है। मैंने यह इसलिए किया
है कि वह अपने बच्चे और अपने वंशज को उस तरह जीवन बिताने
के लिए आज्ञा देगा जिस तरह का जीवन बिताना यहोवा चाहता है।
मैंने यह इसलिए किया कि वे सच्चाई से रहेंगे और भले बनेंगे। तब
मैं यहोवा प्रतिज्ञा की गई चीज़ों को दूँगा।"

20 तब यहोवा ने कहा, "मैंने बार—बार सुना है कि सदोम और
अमोरा के लोग बहुत बुरे हैं। 21 इसलिए मैं वहाँ जाऊँगा और देखूँगा
कि क्या हालत उतनी ही खराब है जितनी मैंने सुनी है। तब मैं ठीक—
ठीक जान लूँगा।"

22 तब वे लोग मुड़े और सदोम की ओर चल पड़े। किन्तु इब्राहीम
यहोवा के सामने खड़ा रहा। 23 तब इब्राहीम यहोवा से बोला, “हे
यहोवा, क्या तू बुरे लोगों को नष्ट करने के साथ अच्छे लोगों को भी
नष्ट करने की बात सोच रहा है? 24 यदि उस नगर में पचास अच्छे
लोग हों तो क्या होगा? क्या तब भी तू नगर को नष्ट कर देगा?
निश्चय ही तू वहाँ रहने वाले पचास अच्छे लोगों के लिए उस नगर
को बचा लेगा। 25 निश्चय ही तू नगर को नष्ट नहीं करेगा। बुरे लोगों
को मारने के लिए तू पचास अच्छे लोगों को नष्ट नहीं करेगा। अगर
ऐसा हुआ तो अच्छे और बुरे लोग एक ही हो जाएँगे, दोनों को ही
दण्ड मिलेगा। तू पूरी पृथ्वी को न्याय देने वाला हऐ। मैं जानता हूँ
कि तू न्याय करेगा।”

26 तब यहोवा ने कहा, “यदि मुझे सदोम नगर में पचास अच्छे
लोग मिले तो मैं पूरे नगर को बचा लूँगा।”

27 तब इब्राहीम ने कहा, “हे यहोवा, तेरी तुलना में, मैं केवल धूलि
और राख हूँ। लेकिन तू मुझको फिर थोड़ा कष्ट देने का अवसर दे
और मुझे यह पूछने दे कि 28 यदि पाँच अच्छे लोग कम हों तो क्या
होगा? यददि नगर में पैंतालीस ही अच्छे लोग हो तो क्या होगा।
क्या तू केवल पाँच लोगों के लिए पूरा नगर नष्ट करेगा?”

तब यहोवा ने कहा, “यदि मुझे वहाँ पैंतालीस अच्छे लोग मिले
तो मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।”

29 इब्राहीम ने फिर यहोवा से कहा, “यदि तुझे वहाँ केवल चालीस
अच्छे ओग मिले तो क्या तू नगर को नष्ट कर देगा?”

यहोवा ने कहा, “यदि मुझे चालीस अच्छे लोग वहाँ मिले तो मैं
नगर को नष्ट नहीं करूँगा।”

30 तब इब्राहीम ने कहा, “हे यहोवा कृपा करके मुझ पर नाराज़
न हो। मुझे यह पूछने दे कि यदि नगर में केवल तीस अच्छे लोग
हो तो क्या तू नगर को नष्ट करेगा?”

यहोवा ने कहा, "यदि मुझे तीस अच्छे लोग वहाँ मिले तो मैं नगर
को नष्ट नहीं करूँगा।"
31 तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा, क्या मैं तुझे फिर कष्ट दूँ और
पूछ लूँ कि यदि बीस ही अच्छे लोग वहाँ हुए तो?"
यहोवा ने उत्तर दिया, "अगर मुझे बीस अच्छे लोग मिले तो मैं
नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"
32 तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा तू मुझसे नाराज़ न हो मुझे
अन्तिम बार कष्ट देने का मौका दे। यदि तुझे वहाँ दस अच्छे लोग
मिले तो तू क्या करेगा?"
यहोवा ने कहा, "यदि मुझे नगर में दस अच्छे लोग मिले तो भी
मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"
33 यहोवा न इब्राहीम से बोलना बन्द कर दिया, इसलिए यहोवा
चला गया और इब्राहीम अपने घर लौट आया।

19

लूत के अतिथि

1 उनमें से दो स्वर्गदूत साँझ को सदोम नगर में आए। लूत नगर
के द्वार पर बैठा था और उसने स्वर्गदूतों को देखा। लूत ने सोचा कि
वे लोग अन्गर के बीच से यात्रा कर रहे हैं। लूत उठा और स्वर्गदूतों
के पास गया तथा जमीन तक सामने झुका। 2 लूत ने कहा, "आप
सब महोदय, कृप्या कर मेरे घर चलें और मैं आप लोगों की सेवा
करूँगा। वहाँ आप लोग अपने पैर धो सकते हैं और रात को ठहर
सकते हैं। तब कल आप लोग अपनी यात्रा आरम्भ कर सकते हैं।"
स्वर्गदूतों ने उत्तर दिया, "नहीं, हम लोग रात को मैदान* में
ठहरेंगे।"
3 किन्तु लूत अपने घर चलने के लिए बार—बार कहता रहा। इस
तरह स्वर्गदूत लूत के घर जाने के लिए तैयार हो गए। जब वे घर

---

* **19:2:** मैदान नगर में खुली जगह, शायद नगर के द्वार के पास ही। कभी—कभी यात्री नगर में आने पर मैदान में डेरा डालते थे।

पहुँचे तो लूत उनके पीने के लिए कुछ लाया। लूत ने उनके लिए रोटियाँ बनाई। लूत का पकाया भोजन स्वर्गदूतों ने खाया।

4 उस शाम सोने के समय के पहले ही नगर के सभी भागों से लोग
लूत के घर आए। सदोम के पुरुषों ने लूत का घर घेर लिया और
बोले। 5 उन्होंने कहा, “आज रात को जो लोग तुम्हारे पास आए, वे
दोनों पुरुष कहाँ हैं? उन पुरुषों को बाहर हमें दे दो। हम उनके साथ
कुकर्म करना चाहते हैं।”

6 लूत बाहर निकला और अपने पीछे से उसने दरवाज़ा बन्द कर
लिया। 7 लूत ने पुरुषों से कहा, “नहीं मेरे भाइयों मैं प्रार्थना करता हूँ
कि आप यह बुरा काम न करें। 8 देखों मेरी दो पुत्रियाँ हैं, वे इसके
पहले किसी पुरुष के साथ नहीं सोयी हैं। मैं अपनी पुत्रियों को तुम
लोगों को दे देता हूँ। तुम लोग उनके साथ जो चाहो कर सकते हो।
लेकिन इन व्यक्तियों के साथ कुछ न करो। ये लोग हमारे घर आए
हैं और मैं इनकी रक्षा जरूर करूँगा।”

9 घर के चारों ओर के लोगों ने उत्तर दिया, “रास्ते से हट जाओ।”
तब पुरुषों ने अपने मन में सोचा, “यह व्यक्ति लूत हमारे नगर में
अतिथि के रूप में आया। अब यह सिखाना चाहता है कि हम लोग
क्या करें।” तब लोगों ने लूत से कहा, “हम लोग उनसे भी अधिक
तुम्हारा बुरा करेंगे।” इसलिए उन व्यक्तियों ने लूत को घेर कर उसके
निकट आना शुरू किया। वे दरवाज़े को तोड़कर खोलना चाहते थे।

10 किन्तु लूत के साथ ठहरे व्यक्तियों ने दरवाज़ा खोला और
लूत को घर के भीतर खींच लिया। तब उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर
लिया। 11 दोनों व्यक्तियों ने दरवाज़े के बाहर के पुरुषों को अन्धा
कर दिया। इस तरह घर में घुसने की कोशिश करने वाले जवान व
बूढ़े सब अन्धे हो गए और दरवाज़ा न पा सके।

सदोम से बच निकलना

12 दोनों व्यक्तियों ने लूत से कहा, "क्या इस नगर में ऐसा व्यक्ति
है जो तुम्हारे परिवार का है? क्या तुम्हारे दामाद, तुम्हारा पुत्रियाँ या
अन्य कोई तुम्हारे परिवार का व्यक्ति है? यदि कोई दूसरा इस नगर
में तुम्हारे परिवार का है तो तुम अभी नगर छोड़ने के लिए कह दो।
13 हम लोग इस नगर को नष्ट करेंगे। यहोवा ने उन सभी बुराइयों
को सुन लिया है जो इस नगर में है। इसलिए यहोवा ने हम लोगों
को इसे नष्ट करने के लिए भेजा है।"

14 इसलिए लूत बाहर गया और अपनी अन्य पुत्रियों से विवाह
करने वाले दामादों से बातें की। लूत ने कहा, "शीघ्रता करो और
इस नगर को छोड़ दो।" यहोवा इसे तुरन्त नष्ट करेगा। लेकिन उन
लोगों ने समझा कि लूत मज़ाक कर रहा है।

15 दूसरी सुबह को भोर के समय ही स्वर्गदूत लूत से जल्दी करने
की कोशिश की। उन्होंने कहा, "देखो इस नगर को दण्ड मिलेगा।
इसलिए तुम अपनी पत्नी और तुम्हारे साथ जो दो पुत्रियाँ जो अभी
तक हैं, उन्हें लेकर इस जगह को छोड़ दो। तब तुम नगर के साथ
नष्ट नहीं होगे।"

16 लेकिन लूत दुविधा में रहा और नगर छोड़ने की जल्दी उसने
नहीं की। इसलिए दोनों स्वर्गदूतों ने लूत, उसकी पत्नी और उसकी
दोनों पुत्रियों के हाथ पकड़ लिए। उन दोनों ने लूत और उसके
परिवार को नगर के बाहर सुरक्षित स्थान में पहुँचाया। लूत और
उसके परिवार पर यहोवा की कृपा थी। 17 इसलिए दोनों ने लूत
और उसके परिवार को नगर के बाहर पहुँचा दिया। जब वे बाहर
हो गए तो उनमें से एक ने कहा, "अपना जीवन बचाने के लिए अब
भागो। नगर को मुड़कर भी मत देखो। इस घाटी में किसी जगह न
रूको। तब तक भागते रहो जब तक पहाड़ों में न जा पहुँचो। अगर
तुम ऐसा नहीं करते, तो तुम नगर के साथ नष्ट हो जाओगे।"

18 तब लूत ने दोनों से कहा, "महोदयों, कृपा करके इतनी दूर

दौड़ने के लिए विवश न करें। 19 आप लोगों ने मुझ सेवक पर
इतनी अधिक कृपा की है। आप लोगों ने मुझे बचाने की कृपा की
है। लेकिन मैं पहाड़ी तक दौड़ नहीं सकता। अगर मैं आवश्यकता
से अधिक धीरे दौड़ा तो कुछ बुरा होगा और मैं मारा जाऊँगा।
20 लेकिन देखें यहाँ पास में एक बहुत छोटा नगर है। हमें उस नगर
तक दौड़ने दें। तब हमारा जीवन बच जाएगा।"

21 स्वर्गदूत ने लूत से कहा, "ठीक है, मैं तुम्हें ऐसा भी करने दूँगा।
मैं उस नगर को नष्ट नहीं करूँगा जिसमें तुम जा रहे हो। 22 लेकिन
वहाँ तक तेज दौड़ो। मैं तब तक सदोम को नष्ट नहीं करूँगा जब
तक तुम उस नगर में सुरक्षित नहीं पहुँच जाते।" (इस नगर का नाम
सोअर है, क्योंकि यह छोटा है।)

सदोम और अमोरा नष्ट किए गए

23 जब लूत सोअर में घुस रहा था, सबेरे का सूरज चमकने
लगा 24 और यहोवा ने सदोम और अमोरा को नष्ट करना आरम्भ
किया। यहोवा ने आग तथा जलते हुए गन्धक को आकाश से नीचें
बरसाया। 25 इस तरह यहोवा ने उन नगरों को जला दिया और पूरी
घाटी के सभी जीवित मनुष्यों तथा सभी पेड़ पौधों को भी नष्ट कर
दिया।

26 जब वे भाग रहे थे, तो लूत की पत्नी ने मुड़कर नगर को देखा।
जब उसने मुड़कर देखा तब वह एक नमक की ढेर हो गई। 27 उसी
दिन बहुत सबेरे इब्राहीम उठा और उस जगह पर गया जहाँ वह
यहोवा के सामने खड़ा होता था। 28 इब्राहीम ने सदोम और अमोरा
नगरों की ओर नज़र डाली। इब्राहीम ने उस घाटी की पूरी भूमि की
ओर देखा। इब्राहीम ने उस प्रदेश से उठते हुए घने धुँए को देखा।
बड़ी भयंकर आग से उठते धुँए के समान वह दिखाई पड़ा।

29 घाटी के नगरों को परमेश्वर ने नष्ट कर दिया। जब परमेश्वर ने
यह किया तब इब्राहीम ने जो कुछ माँगा था उसे उसने याद रखा।

परमेश्वर ने लूत का जीवन बचाया लेकिन परमेश्वर ने उस नगर को
नष्ट कर दिया जिसमें लूत रहता था।

लूत और उसकी पुत्रियाँ

30 लूत सोअर में लगातार रहने से डरा। इसलिए वह और उसकी
दोनों पुत्रियाँ पहाड़ों में गई और वहीं रहने लगी। वे वहाँ एक गुफा
में रहते थे। 31 एक दिन बड़ी पुत्री ने छोटी से कहा, "पृथ्वी पर चारों
ओर पुरुष और स्त्रियाँ विवाह करते हैं। लेकिन यहाँ आस पास
कोई पुरुष नहीं है जिससे हम विवाह करें। हम लोगों के पिता बूढ़े
हैं। 32 इसलिए हम लोग अपने पिता का उपयोग बच्चों को जन्म देने
के लिए करें जिससे हम लोगों का वंश चल सके। हम लोग अपने
पिता के पास चलेंगे और दाखरस पिलायेंगे तथा उसे मदहोश कर
देंगे। तब हम उसके साथ सो सकते हैं।"

33 उस रात दोनों पुत्रियाँ अपने पिता के पास गई और उसे उन्होंने
दाखरस पिलाकर मदहोश कर दिया। तब बड़ी पुत्री पिता के बिस्तर
में गई और उसके साथ सोई। लूत अधिक मदहोश था इसलिए यह
न जान सका कि वह उसके साथ सोया।

34 दूसरे दिन बड़ी पुत्री ने छोटी से कहा, "पिछली रात मैं अपने
पिता के साथ सोई। आओ इस रात फिर हम उसे दाखरस पिलाकर
मदहोश कर दें। तब तुम उसके बिस्तर में जा सकती हो और उसके
साथ सो सकती हो। इस तरह हम लोगों को अपने पिता का उपयोग
बच्चों को जन्म देकर अपने वंश को चलाने के लिए करना चाहिए।"
35 इसलिए उन दोनों पुत्रियों ने अपने पिता को दाखरस पिलाकर
मदहोश कर दिया। तब छोटी पुत्री उसके बिस्तर में गई और उसके
पास सोई। लूत इस बार भी न जान सका कि उसकी पुत्री उसके
साथ सोई।

36 इस तरह लूत की दोनों पुत्रियाँ गर्भवती हुईं। उनका पिता ही
उनके बच्चों का पिता था। 37 बड़ी पुत्री ने एक पुत्र को जन्म दिया।
उसने लड़के का नाम मोआब रखा। मोआब उन सभी मोआबी लोगों

का पिता है, जो अब तक रह रहे हैं। 38 छोटी पुत्री ने भी एक पुत्र
जना। इसने अपने पुत्र का नाम बेनम्मी रखा। बेनम्मी अभी उन सबी अम्मोनी लोगों का पिता है जो अब तक रह रहे हैं।

20

इब्राहीम गरार जाता है

1 इब्राहीम ने उस जगह को छोड़ दिया और नेगेव की यात्रा की।
इब्राहीम कादेश और शूर के बीच गरार में बस गया। 2 गरार में
इब्राहीम ने लोगों से कहा कि सारा मेरी बहन है। गरार के राजा अबीमेलेक ने यह बात सुनी। अबीमेलेक सारा को चाहता था
इसलिए उसने कुछ नौकर उसे लाने के लिए भेजे। 3 लेकिन एक
रात परमेश्वर ने अबीमेलेक से स्वप्न में बात की। परमेश्वर ने कहा, “देखो, तुम मर जाओगे। जिस स्त्री को तुमने लिया है उसका विवाह हो चुका है।”

4 लेकिन अबीमेलेक अभी सारा के साथ नहीं सोया था। इसलिए
अबीमेलेक ने कहा, “हे यहोवा, मैं दोषी नहीं हूँ। क्या तू निर्दोष
व्यक्ति को मारेगा। 5 इब्राहीम ने मुझसे खुद कहा, ‘यह स्त्री मेरी
बहन है’ और स्त्री ने भी कहा, ‘यह पुरुष मेरा भाई है।’ मैं निर्दोष हूँ। मैं नहीं जानता था कि मैं क्या कर रहा हूँ?”

6 तब परमेश्वर ने अबीमेलेक से स्वप्न में कहा, “हाँ, मैं जानता
हूँ कि तुम निर्दोष हो और मैं यह भी जानता हूँ कि तुम यह नहीं जानते थे कि तुम क्या कर रहे थे? मैंने तुमको बचाया। मैंने तुम्हें अपने विरुद्ध पाप नहीं करने दिया। यह मैं ही था जिसने तुम्हें उसके
साथ सोने नहीं दिया। 7 इसलिए इब्राहीम को उसकी पत्नी लौटा
दो। इब्राहीम एक नबी है। वह तुम्हारे लिए प्रार्थना करेगा और तुम जीवित रहोगे किन्तु यदि तुम सारा को नहीं लौटाओगे तो मैं शाप देता हूँ कि तुम मर जाओगे। तुम्हारा सारा परिवार तुम्हारे साथ मर जाएगा।”

8 इसलिए दूसरे दिन बहुत सबेरे अबीमेलेक ने अपने सभी नौकरों
को बुलाया। अबीमेलेक ने सप्ने में हुई सारी बातें उनको बताई।
नौकर बहुत डर गए। 9 तब अबीमेलेक ने इब्राहीम को बुलाया और
उससे कहा, “तुमने हम लोगों के साथ ऐसा क्यों किया? मैंने तुम्हारा
क्या बिगाड़ा था? तुम ने यह झूठ क्यों बोला कि वह तुम्हारी बहन
है। तुमने हमारे राज्य पर बहुत बड़ी विपत्ति ला दी है। यह बात तुम्हें
मेरे साथ नहीं करनी चाहिए थी। 10 तुम किस बात से डर रहे थे?
तुमने ये बातें मेरे साथ क्यों की?”

11 तब इब्राहीम ने कहा, “मैं डरता था। क्योंकि मैंने सोचा कि
यहाँ कोई भी परमेश्वर का आदर नहीं करता। मैंने सोचा कि सारा
को पाने के लिए कोई मुझे मार डालेगा। 12 वह मेरी पत्नी है, किन्तु
वह मेरी बहन भी है। वह मेरे पिता की पुत्री तो है परन्तु मेरी माँ
की पुत्री नहीं है। 13 परमेश्वर ने मुझे पिता के घर से दूर पहुँचाया है।
परमेश्वर ने कोई अलग–अलग प्रदेशों में मुझे भटकाया। जब ऐसा
हुआ तो मैंने सारा से कहा, ‘मेरे लिए कुछ करो, लोगों से कहो कि
तुम मेरी बहन हो।’ ”

14 तब अबीमेलेक ने जाना कि क्या हो चुका है। इसलिए
अबीमेलेक ने इब्राहीम को सारा लौटा दी। अबीमेलेक ने इब्राहीम
को कुछ भेड़ें, मवेशी तथा दास भी दिए। 15 अबीमेलेक ने कहा,
“तुम चारों और देख लो। यह मेरा देश है। तुम जिस जगह चाहो, रह
सकते हो।”

16 अबीमेलेक ने सारा से कहा, “देखो, मैंने तुम्हारे भाई को एक
हजार चाँदी के टुकड़े दिए हैं। मैंने यह इसलिए किया कि जो कुछ
हुआ उससे मैं दुःखी हूँ। मैं चाहता हूँ कि हर एक व्यक्ति यह देखें
कि मैंने अच्छे काम किए हैं।”

17-18 परमेश्वर ने अबीमेलेक के परिवार की सभी स्त्रियों को बच्चा
जनने के अयोग्य बनाया। परमेश्वर ने वह इसलिए किया कि उसने
इब्राहीम की पत्नी सारा को रख लिया था। लेकिन इब्राहीम ने

परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने अबीमेलेक, उसकी पत्नियों और दास—कन्याओं को स्वस्थ कर दिया।

21

अन्त में सारा को एक बच्चा

1 यहोवा ने सारा को यह वचन दिया था कि वह उस पर कृपा
करेगा। यहोवा अपने वचन के अनुसार उस पर दयालु हुआ। 2 सारा
गर्भवती हुई और बुढ़ापे में इब्राहीम के लिए एक बच्चा जनी। सही
समय पर जैसा परमेश्वर ने वचन दिया था वैसा ही हुआ। 3 सारा ने
पुत्र जना और इब्राहीम ने उसका नाम इसहाक रखा। 4 परमेश्वर की
आज्ञा के अनुसार इब्राहीम ने आठ दिन का होने पर इसहाक का
खतना किया।

5 इब्राहीम सौ वर्ष का था जब उसका पुत्र इसहाक उत्पन्न हुआ
6 और सारा ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे सुखी* बना दिया है। हर एक
व्यक्ति जो इस बारे में सुनेगा वह मुझसे खुश होगा। 7 कोई भी यह
नहीं सोचता था कि सारा इब्राहीम को उसके बुढ़ापे के लिए उसे
एक पुत्र देगी। लेकिन मैंने बूढ़े इब्राहीम को एक पुत्र दिया है।”

घर में परेशानी

8 अब बच्चा इतना बड़ा हो गया कि माँ का दूध छोड़ वह ठोस
भोजन खाना शुरू करे। जिस दिन उसका दूध छुड़वाया गया उस
दिन इब्राहीम ने एक बहुत बड़ा भोज रखा। 9 सारा ने हाजिरा के पुत्र
को खेलते हुए देखा। (बीते समय में मिस्री दासी हाजिरा ने एक पुत्र
को जन्म दिया था। इब्राहीम उस पुत्र का भी पिता था।) 10 इसलिए
सारा ने इब्राहीम से कहा, “उस दासी स्त्री तथा उसके पुत्र को यहाँ
से भेज दो। जब हम लोग मरेंगे हम लोगों की सभी चीज़ें इसहाक
को मिलेंगी। मैं नहीं चाहती कि उसका पुत्र इसहाक के साथ उन
चीज़ों में हिस्सा ले।”

---

* **21:6:** सुखी हिब्रू में “सुखी” शब्द इसहाक के नाम की तरह है।

11 इन सभी बातों ने इब्राहीम को बहुत दुःखी कर दिया। वह अपने
पुत्र इश्माएल के लिए दुःखी था। 12 किन्तु परमेश्वर ने इब्राहीम से
कहा, "उस लड़के के बारे में दुःखी मत होओ। उस दासी स्त्री के
बारे में भी दुःखी मत होओ। जो सारा चाहती है तुम वही करो।
तुम्हारा वंश इसहाक के वंश से चलेगा। 13 लेकिन मैं तुम्हारी दासी
के पुत्र को भी अशीर्वाद दूँगा। वह तुम्हारा पुत्र है इसलिए मैं उसके
परिवार को भी एक बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा।"

14 दूसरे दिन बहुत सवेरे इब्राहीम ने कुछ भोजन और पानी लिया।
इब्राहीम ने यह चीज़ें हाजिरा को दे दी। हाजिरा ने वे चीज़ें ली और
बच्चे के साथ वहाँ से चली गई। हाजिरा ने वह स्थान छोड़ा और
वह बेर्शेबा की मरुभूमि में भटकने लगी।

15 कुछ समय बाद हाजिरा का सारा पानी स्माप्त हो गया। पीने के
लिए कुछ भी पानी न बचा। इसलिए हाजिरा ने अपने बच्चे को एक
झाड़ी के नीचे रखा। 16 हाजिरा वहाँ से कुछ दूर गई। तब वह रुकी
और बैठ गई। हाजिरा ने सोचा कि उसका पुत्र मर जाएगा क्योंकि
वहाँ पानी नहीं था। वह उसे मरता हुआ देखना नहीं चाहती थी। वह
वहाँ बैठ गई और रोने लगी।

17 परमेश्वर ने बच्चे का रोना सुना। स्वर्ग से एक दूत हाजिरा के
पास आया। उसने पूछा, "हाजिरा, तुम्हें क्या कठिनाई हाय। परमेश्वर
ने वहाँ बच्चे का रोना सुन लिया। 18 जाओ, और बच्चे को संभालो।
उसका हाथ पकड़ लो और उसे साथ ले चलो। मैं उसे बहुत से
लोगों का पिता बनाऊँगा।"

19 परमेश्वर ने हाजिरा की आँखे इस प्रकार खोली कि वह एक
पानी का कुआँ देख सकी। इसलिए कुएँ पर हाजिरा गई और उसके
थैले को पानी से भर लिया। तब उसने बच्चे को पीने के लिए पानी
दिया।

20 बच्चा जब तक बड़ा न हुआ तब तक परमेश्वर उसके साथ रहा।
इश्माएल मरुभूमि में रहा और एक शिकारी बन गया। उसने बहुत

अच्छा तीर चलाना सीख लिया। 21 उसकी माँ मिस्र से उसके लिए
दुल्हन लाई। वे पारान मरुभूमि में रहने लगे।

इब्राहीम की अबीमेलेक से सन्धि

22 तब अबीमेलेक और पीकोल ने इब्राहीम से बातें की। पीकोल
अबीमेलेक की सेना का सेनापति था। उन्होंने इब्राहीम से कहा,
"तुम जो कुछ करते हो, परमेश्वर तुम्हारा साथ देता है। 23 इसलिए
तुम परमेश्वर के सामने वचन दो। यह वचन दो कि तुम मेरे और मेरे बच्चों के लिए भले रहोगे। तुम यह वचन दो कि तुम मेरे प्रति और जहाँ रहे हो उस देश के प्रति दयालु रहोगे। तुम यह भी वचन दो कि मैं तुम्हारे प्रति जितना दयालु रहा उतना तुम मुझ पर भी दयालु रहोगे।"

24 इब्राहीम ने कहा, "मैं वचन देता हूँ कि तुमसे मैं वैसा ही
व्यवहार करूँगा जैसा तुमने मेरे साथ व्यवहार किया है।" 25 तब
इब्राहीम ने अबीमेलेक से शिकायत की। इब्राहीम ने इसलिए शिकायत की कि अबीमेलेक के नौकरों ने पानी के एक कुएँ पर कब्ज़ा कर लिया था।

26 अबीमेलेक ने कहा, "इसके बारे में मैंने यह पहली बार सुना है! मुझे नहीं पता है, कि यह किसने किया है, और तुमने भी इसकी चर्चा मुझसे इससे पहले कभी नहीं की।"

27 इसलिए इब्राहीम और अबीमेलेक ने एक सन्धि की।
28 इब्राहीम ने सन्धि के प्रमाण के रूप में अबीमेलेक को कुछ भेड़
और मवेशी दिए। इब्राहीम सात मादा मेमने भी अबीमेलेक के सामने लाया।

29 अबीमेलेक ने इब्राहीम से पूछा, "तुम ये सात मादा मेमने अलग क्यों दे रहे हो?"

30 इब्राहीम ने कहा, "जब तुम इन सात† मेमनों को मुझसे लोगे तो यह सबूत रहेगा कि यह कुआँ मैंने खोदा है।"

---

† **21:30:** सात "सात" के लिये हिब्रू शब्द "शपथ," या "वचन देना" जैसा है इसलिए "सात" जानवर उसे वचन देने के प्रमाण थे।

31 इसलिए इसके बाद वह कुआँ बेर्शेबा कहलाया। उन्होंने कुएँ
को यह नाम दिया क्योंकि यह वह जगह थी जहाँ उन्होंने एक दूसरे
को वचन दिया था।

32 इस प्रकार इब्राहीम और अबीमेलेक ने बेर्शेबा में सन्धि की।
तब अबीमेलेक और सेनापति दोनों पलिश्तियों के प्रदेश में लौट
गए।

33 इब्राहीम ने बेर्शेबा में एक विशेष पेड़ लगाया। उस जगह
इब्राहीम ने यहोवा परमेश्वर से प्रार्थना की 34 और इब्राहीम
पलिश्तियों के देश में बहुत समय तक रहा।

22

इब्राहीम, अपने पुत्र को मार डालो!

1 इन बातों के बाद परमेश्वर ने इब्राहीम के विश्वास की परीक्षा
लेना तय किया। परमेश्वर ने उससे कहा, "इब्राहीम!"

और इब्राहीम ने कहा, "हाँ।"

2 परमेश्वर ने कहा, "अपना पुत्र लो, अपना एकलौता पुत्र, इसहाक
जिससे तुम प्रेम करते हो मोरिय्याह पर जाओ, तुम उस पहाड़ पर
जाना जिसे मैं तुम्हें दिखाऊँगा। वहाँ तुम अपन पुत्र को मारोगे और
उसको होमबलि स्वरूप मुझे अर्पण करोगे।"

3 सवेरे इब्राहीम उठा और उसने गधे को तैयार किया। इब्राहीम
ने इसहाक और दो नौकरों को साथ लिया। इब्राहीम ने बलि के लिए
लकड़ियाँ काटकर तैयार कीं। तब वे उस जगह गए जहाँ जाने के
लिए परमेश्वर ने कहा। 4 उनकी तीन दिन की यात्रा के बाद इब्राहीम
ने ऊपर देखा और दूर उस जगह को देखा जहाँ वे जा रहे थे। 5 तब
इब्राहीम ने अपने नौकरों से कहा, "यहाँ गधे के साथ ठहरो। मैं
अपने पुत्र को उस जगह ले जाऊँगा और उपासना करूँगा। तब हम
बाद में लौट आएगे।"

6 इब्राहीम ने बलि के लिए लकड़ियाँ ली और इन्हें पुत्र के कन्धों पर रखा। इब्राहीम ने एक विशेष छुरी और आग ली। तब इब्राहीम और उसका पुत्र दोनों उपासना के लिए उस जगह एक साथ गए।

7 इसहाक ने अपने पिता इब्राहीम से कहा, “पिताजी!”

इब्राहीम ने उत्तर दिया, “हाँ, पुत्र।”

इसहाक ने कहा, “मैं लकड़ी और आग तो देखता हूँ, किन्तु वह मेमना कहाँ है जिसे हम बलि के रूप में जलाएगे?”

8 इब्राहीम ने उत्तर दिया, “पुत्र परमेश्वर बलि के लिए मेमना स्वयं जुटा रहा हऐ।”

इस तरह इब्राहीम और उसका पुत्र उस जगह साथ—साथ गए।
9 वे उस जगह पर पहुँचे जहाँ परमेश्वर ने पहुँचने को कहा था। वहाँ
इब्राहीम ने एक बलि की वेदी बनाई। इब्राहीम ने वेदी पर लकड़ियाँ
रखी। तब इब्राहीम ने अपने पुत्र को बाँधा। इब्राहीम ने इसहाक को
वेदी की लकड़ियों पर रखा। 10 तब इब्राहीम ने अपनी छुरी निकाली
और अपने पुत्र को मारने की तैयारी की।

11 तब यहोवा के दूत ने इब्राहीम को रोक दिया। दूत ने स्वर्ग से पुकारा और कहा, “इब्राहीम, इब्राहीम।”

इब्राहीम ने उत्तर दिया, “हाँ।”

12 दूत ने कहा, “तुम अपने पुत्र को मत मारो अथवा उस किसी प्रकार की चोट न पहुँचाओ। मैंने अब देख लिया कि तुम परमेश्वर का आदर करते हो और उसकी आज्ञा मानते हो। मैं देखता हूँ कि तुम अपने एक लौते पुत्र को मेरे लिए मारने के लिए तैयार हो।”

13 इब्राहीम ने ऊपर दृष्टि की और एक मेढ़े को देखा। मेढ़े के सींगे
एक झाड़ी में फँस गए थे। इसलिए इब्राहीम वहाँ गया, उसे पकड़ा
और उसे मार डाला। इब्राहीम ने मेढ़े को अपने पुत्र के स्थान पर
बलि चढ़ाया। इब्राहीम का पुत्र बच गया। 14 इसलिए इब्राहीम ने

उस जगह का नाम “यहोवा यिरे”* रखा। आज भी लोग कहते हैं,
“इस पहाड़ पर यहोवा को देखा जा सकता है।”
15 यहोवा के दूत ने स्वर्ग से इब्राहीम को दूसरी बार पुकारा।
16 दूत ने कहा, “तुम मेरे लिए अपने पुत्र को मारने के लिए तैयार थे।
यह तुम्हारा एकलौता पुत्र था। तुमने मेरे लिए ऐसा किया है इसलिए
मैं, यहोवा तुमको वचन देता हूँ कि, 17 मैं तुम्हें निश्चय ही आशीर्वाद
दूँगा। मैं तुम्हें उतने वंशज दूँगा जितने आकाश में तारे हैं। ये इतने
अधिक लोग होंगे जितने समुद्र के तट पर बालू के कण और तुम्हारे
लोग अपने सभी शत्रुओं को हराएगे। 18 संसार के सभी राष्ट्र तुम्हारे
परिवार के द्वारा आशीर्वाद पाएँगे।† मैं यह इसलिए करूँगा क्योंकि
तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया।”
19 तब इब्राहीम अपने नौकरों के पास लौटा। उन्होंने बेर्शेबा तक
वापसी यात्रा की और इब्राहीम वहीं रहने लगा।
20 इसके बाद, इब्राहीम को यह खबर मिली। खबर यह थी,
“तुम्हारे भाई नाहोर और उसकी पत्नी मिल्का के अब बच्चे हैं।
21 पहला पुत्र ऊस है। दूसरा पुत्र बूज है। तीसरा पुत्र अराम का
पिता कमूएल है। 22 इसके अतिरिक्त केसेद, हजो, पिल्दाश, यिदलाप
और बतूएल है।” 23 बतूएल, रिबका का पिता था। मिल्का इन आठ
पुत्रों की माँ थी और नाहोर पिता था। नाहोर इब्राहीम का भाई था।
24 नाहोर के दूसरे चार लड़के उसकी एक रखैल रुमा से थे। ये पुत्र
तेबह, गहम, तहश, माका थे।

23

सारा मरती है

1 सारा एक सौ सत्ताईस वर्ष तक जीवित रही। 2 वह कनान प्रदेश
के किर्यतर्बा (हेब्रोन) नगर में मरी। इब्राहीं बहुत दुःखी हुआ और

---

* **22:14:** यहोवा … यिरे या “यहोवा यिरे ” इसका अर्थ “ईश्वर देखता है” या “ईश्वर पूर्ति करता है” है। † **22:18:** तुम्हारे … पाएंगे या “तुम्हारे वंशजों द्वारा पृथ्वी के सभी राष्ट्र वरदान पाएंगें।”

उसके लिए वहाँ रोया। 3 तब इब्राहीम ने अपनी मरी पत्नी को छोड़ा
और हित्ती लोगों से बात करने गया। उसने कहा, 4 "मैं इस प्रदेश में
नहीं रहता। मैं यहाँ केवल एक यात्री हूँ। इसलिए मेरे पास अपनी
पत्नी को दफनाने के लिए कोई जगह नहीं है। मैं कुछ भूमि चाहता
हूँ जिसमें अपनी पत्नी को दफना सकूँ।"

5 हित्ती लोगों ने इब्राहीम को उत्तर दिया, 6 "महोदय, आप हम
लोगों के बीच परमेश्वर के प्रमुख व्यक्तियों में से एक हैं। आप अपने
मरे को दफनाने के लिए सबसे अच्छी जगह, जो हम लोगों के पास
है, ले सकते हैं। आप हम लोगों की कोई भी दफनाने की जगह, जो
आप चाहते हैं, ले सकते हैं। हम लोगों मे से कोई भी आपको पत्नी
को दफनाने से नहीं रोकेगा।"

7 इब्राहीम उठा और लोगों की तरफ सिर झुकाया। 8 इब्राहीम ने
उनसे कहा, "यदि आप लोग सचमुच मेरी मरी हुई पत्नी को दफनाने
में मेरी मद्द करना चाहते हैं तो सोहर के पुत्र एप्रोन से मेरे लिए बात
करें। 9 मैं मकपेला की गुफा को खरीदना पसन्द करूँगा। एप्रोन
इसका मालिक है। यह उसके खेत के सिरे पर है। मैं इसके मूल्य
के अनुसार उसे पूरी कीमत दूँगा। मैं चाहता हूँ कि आप लोग इस
बात के गवाह रहे कि मैं इस भूमि को कब्रिस्तान के रूप में खरीद
रहा हूँ।"

10 एप्रोन वहीं लोगों के बीच बैठा था। एप्रोन ने इब्राहीम को उत्तर
दिया, 11 "नहीं, महोदय। मैं आपको भूमि दूँगा। मैं आपको वह गुफा
दूँगा। मैं यह आपको इसलिए दूँगा कि आप इसमें अपनी पत्नी को
दफना सकें।"

12 तब इब्राहीम ने हित्ती लोगों के सामने अपना सिर झुकाया।
13 इब्राहीम ने सभी लोगों के सामने एप्रोन से कहा, "किन्तु मैं तो
खेत की पूरी कीमत देना आहता हूँ। मेरा धन स्वीकार करें। मैं
अपने मरे हुए को इसमें दफनाऊँगा।"

14 एप्रोन ने इब्राहीम को उत्तर दिया, 15 "महोदय, मेरी बात सुनें।
चार सौ चाँदी के शेकेल हमारे और आपके लिए क्या अर्थ रखते
हैं? भूमि लें और अपनी मरी पत्नी को दफनाएँ।"

16 इब्राहीम ने समझा कि एप्रोन उसे भूमि की कीमत बता रहा है,
इसलिए हित्ती लोगों को गवाह मानकर, इब्राहीम ने चाँदी के चार
सौ शेकेल एप्रोन के लिए तौले। इब्राहीम ने पैसा उस व्यापारी* को
दे दिया जो इस भूमि के बेचने का धन्धा कर रहा था।

17-18 इस प्रकार एप्रोन के खेत के मालिक बदल गए। वह खेत
मस्रे के पूर्व मकपेला में था। नगर के सभी लोगों ने एप्रोन और
इब्राहीम के बीच हुई वाचा को देखा। 19 इसके बाद इब्राहीम ने
अपनी पत्नी सारा को मम्रे कनान प्रदेश में (हेब्रोन) के निकट उस
खेत की गुफा में दफनाया। 20 इब्राहीम ने खेत और उसकी गुफा
को हित्ती लोगों से खरीद। यह उसकी सम्पत्ति हो गई, और उसने
इसका प्रयोग कब्रिस्तान के रूप में किया।

24

इसहाक के लिए पत्नी

1 इब्राहीम बहुत बुढ़ापे तक जीवित रहा। यहोवा ने इब्राहीम को
आशीर्वाद दिया और उसके हर काम में उसे सफलता प्रदान की।
2 इब्राहीम का एक बहुत पुराना नौकर था जो इब्राहीम का जो कुछ
था उसका प्रबन्धक था। इब्राहीम ने उस नौकर को बुलाया और
कहा, "अपने हाथ मेरी जांघों के नीचे रखो। 3 अब मैं चाहता हूँ कि
तुम मुझे एक वचन दो। धरती और आकाश के परमेश्वर यहोवा के
सामने तुम वचन दो कि तुम अकनान की किसी लड़की से मेरे पुत्र
का विवाह नहीं होने दोगे। हम लोग उनके बीच रहते हैं, किन्तु एक
कनानी लड़की से उसे विवाह न करने दो। 4 तुम मेरे देश और मेरे

* **23:16:** व्यापारी कोई व्यक्ति जो अपनी रोजी खरीद और बेचकर चलैंता है। यह एप्रोन या कोई दूसरा व्यक्ति हो सकता है।

अपने लोगों में लौटकर जाओ। वहाँ मेरे पुत्र इसहाक के लिए एक
दुल्हन खोजो। तब उसे यहाँ उसके पास लाओ।"
5 नौकर ने उससे कहा, "यह हो सकता है कि वह दुल्हन मेरे
साथ इस देश में लौटना न चाहे। तब, क्या मैं तुम्हारे पुत्र को तुम्हारी
जन्मभूमि को ले जाऊँ?"
6 इराहीम ने उससे कहा, "नहीं, तुम हमारे पुत्र को उस देश में न
ले जाओ। 7 यहोवा, स्वर्ग का परमेश्वर मुझे मेरी जन्मभूमि से यहाँ
लाया। वह देश मेरे पुइता और मेरे परिवार का घर था। किन्तु यहोवा
ने यह वचन दिया कि वह नया प्रदेश मेरे परिवार वालों का होगा।
यहोवा अपना एक दूत तुम्हारे सामने भेजे जिससे तुम मेरे पुत्र के
लिए दुल्हन चुन सको। 8 किन्तु यदि लड़की तुम्हारे साथ आना मना
करे तो तुम अपने वचन से छुटकारा पा जाओगे। किन्तु तुम मेरे पुत्र
को उस देश में वापस मत ले जाना।"
9 इस प्रकार नौकर ने अपने मालिक की जांघों के नीचे अपना
हाथ रखकर वचन दिया।

खोज आरम्भ होती है

10 नौकर ने इब्राहीम के दस ऊँट लिए और उस जगह से वह
चला गया। नौकर कई प्रकार की सुन्दर भेंटें अपने साथ ले गया।
वह नाहोर के नगर मेसोपोटामिया को गया। 11 वह नगर के बाहर
के कुएँ पर ग्या। यह बात शाम को हुई जब स्त्रियाँ पानी भरने के
लिए बाहर आती हैं। नौकर ने वहीं ऊँटों को घुटनों के बल बिठाया।
12 नौकर ने कहा, "हे यहोवा, तू मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर
है। आज तू उसके पुत्र के लिए मुझे एक दुल्हन प्राप्त करा। कृप्या
मेरे स्वामी इब्राहीम पर यह दया कर। 13 मैं यहाँ इस जल के कुएँ
के पास खड़ा हूँ और पानी भरने के लिए नगर से लड़कियाँ आ रहीं
हैम। 14 मैं एक विशेष चिन्ह की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जिससे मैं जान
सकूँ कि इसहाक के लिए कौन सी लड़की ठीक है। यह विशेष
चिन्ह है: मैं लड़की से कहूँगा 'कृप्या कर आप घड़े को नीचे रखे

जिससे मैं पानी पी सकूँ।' मैं तब समझूँगा कि यह ठीक लड़की हऐ
जब वह कहेगी, 'पीओ, और मैं तुम्हारे ऊँटों के लिए भी पानी दूँगी।'
यदि ऐसा होगा तो तू प्रमाणित कर देगा कि इसहाक के लिए यह
लड़की ठीक है। मैं समझूँगा कि तूने मेरे स्वामी पर कृपा की है।"

एक दुल्हन मिली

15 तब नौकर की प्रार्थना पूरी होने के पहले ही रिबका नाम की
एक लड़की कुएँ पर आई। रिबका बतूएल की पुत्री थी। (बतूएल
इब्राहीम के भाई नाहोर और मिल्का का पुत्र था।) रिबका अपने कंधे
पर पानी का घड़ा लेकर कुएँ पर आई थी। 16 लड़की बहुत सुन्दर
थी। वह कुँवारी थी। वह किसी पुरुष के साथ कभी नहीं सोई थी।
वह अपना घड़ा भरने के लिए कुएँ पर आई। 17 तब नौकर उसके
पास तक दौड़ कर गया और बोला, "कृप्या करके अपने घड़े से
पीने के लिए थोड़ा जल दें।"

18 रिबका ने जल्दी कंधे से घड़े को नीचे उतारा और उसे पानी
पिलाया। रिबका ने कहा, "महोदय, यह पिएँ।" 19 ज्यों ही उसने पीने
के लिए कुछ पानी देना खतम किया, रिबका ने कहा, "मैं आपके
ऊँटों को भी पानी दे सकती हूँ।" 20 इसलिए रिबका ने झट से घड़े
का सारा पानी ऊँटों के लिए बनी नाद में उड़ेल दिया। तब वह और
पानी लाने के लिए कुएँ को दौड़ गई और उसने सभी ऊँटों को पानी
पिलाया।

21 नौकर ने उसे चुप—चाप ध्यान से देखा। वह तय करना चाहता
था कि यहोवा ने शायद बात मान ली है और उसकी यात्रा को सफल
बना दिया है। 22 जब ऊँटों ने पानी पी लिया तब उसने रिबका को
चौथाई औंस* तौल कर एक सोने की अँगूठी दी। उसने उसे दो
बाजूबन्द भी दिए जो तौल में हर एक पाँच औंस† थे। 23 नौकर ने

* **24:22:** चौथाई औंस शाब्दिक, "एक बेक।" † **24:22:** पाँच औंस शाब्दिक, "पाँच माप।"

पूछा, “तुम्हारा पिता कौन है? क्या तुम्हारे पिता के घर में इतनी जगह है कि हम सब के रहने तथा सोने का प्रबन्ध हो सके?”

24 रिबका ने उत्तर दिया, “मेरे पिता बतूएल हैं जो मिल्का और
नाहोर के पुत्र हैं।” 25 तब उसने कहा, “और हाँ हम लोगों के पास
तुम्हारे ऊँटों के लिए चारा हऐ और तुम्हारे लिए सोने की जगह है।”

26 नौकर ने सिर झुकाया और यहोवा की उपासना की। 27 नौकर
ने कहा, “मेरे मालिक इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा की कृपा है। यहोवा हमारे मालिक पर दयालु है। यहोवा ने मुझे अपने मालिक के पुत्र के लिए सही दुल्हन‡ दीया है।”

28 तब रिबका दौड़ी और जो कुछ हुआ था अपने परिवार को
बताया। 29-30 रिबका का एक भाई था। उसका नाम लाबान था।
रिबका ने उसे वे बातें बताई जो उससे उस व्यक्ति ने की थी। लाबान उसकी बातें सुन रहा था। जब लाबान ने अँगूठी और बहन की बाहों पर बाज़ूबन्द देकहआ तो वह दौड़कर कुएँ पर पहुँचा और वहाँ वह
व्यक्ति कुएँ के पास, ऊँटों के बगल में खड़ा था। 31 लाबान ने कहा,
“महोदय, आप पधारें आपका स्वागत है। आपको यहाँ बाहर खड़ा नहीं रहना है। मैंने आपके ऊँटों के लिए एक जगह बना दी है और आपके सोने के लिए एक कमरा ठीक कर दिया है।”

32 इसलिए इब्राहीम का नौकर घर में गया। लाबान ने ऊँटों और
उस की मदद की और ऊँटों को खाने के लिए चारा दिया। तब लाबान ने पानी दिया जिससे वह व्यक्ति तथा उसके साथ आए हुए
दूसरे नौकर अपने पैर धो सकें। 33 तब लाबान ने उसे खाने के लिए
भोजन दिया। लेकिन नौकर ने भोजन करना मना किया। उसने कहा, “मैं तब तक भोजन नहीं करूँगा जब तक मैं यह न बता दूँ कि मैं यहाँ किसलिए आया हूँ।”

इसलिए लाबान ने कहा, “तब हम लोगों को बताओ।”

‡ **24:27:** सही दुल्हन शाब्दिक, “मेरे मालिक के भाई के घर।”

रिबका इसहाक की पत्नी बनी

34 नौकर ने कहा, "मैं इब्राहीम का नौकर हूँ। 35 यहोवा ने हमारे
मालिक पर हर एक विषय में कृपा की है। मेरे मालिक महान व्यक्ति
हो गए हैं। यहोवा ने इब्राहीम को कई भेड़ों की रेवड़ तथा बवेशियों
के झुण्ड दिए हैं। इब्राहीम के पास बहुत सोना, चाँदी और नौकर
हैं। इब्राहीम के पास बहुत से ऊँट और गधे हैं। 36 सारा, मेरे मालिक
की पत्नी थी। जब वह बहुत बूढ़ी हो गई थी उसने एक पुत्र को
जन्म दिया और हमारे मालिक ने अपना सब कुछ उस पुत्र को दे
दिया है। 37 मेरे स्वामी ने मुझे एक वचन देने के लिए विवश किया।
मेरे मालिक ने मुझसे कहा, 'तुम मेरे पुत्र को कनान की लड़की से
किसी भी तरह विवाह नहीं करने दोगे। हम लोग उनके बीच रहते
हैं, किन्तु मैं नहीं चाहता कि वह किसी कनानी लड़की से विवाह
करे। 38 इसलिए तुम्हें वचन देना होगा कि तुम मेरे पिता के देश
को जाओगे। मेरे परिवार में जाओ और मेरे पुत्र के लिए एक दुल्हन
चुनो।' 39 मैंने अपने मालिक से कहा, 'यह हो सकता है कि वह
दुल्हन मेरे साथ इस देश को न आए।' 40 लेकिन मेरे मालिक ने
कहा, 'मैं यहोवा की सेवा करता हूँ और यहोवा तुम्हारे साथ अपना
दूत भेजेगा और तुम्हारी मद्द करेगा। तुम्हें वहाँ मेरे अपने लोगों में
मेरे पुत्र के लिए एक दुल्हन मिलेगी। 41 किन्तु यदि तुम मेरे पिता के
देश को जाते हो और वे लोग मेरे पुत्र के लिए एक दुल्हन देने से
मना करते हैं तो तुम्हें इस वचन से छुटकारा मिल जाएगा।'

42 "आज मैं इस कुएँ पर आया और मैंने कहा, 'हे यहोवा मेरे
मालिक के परमेश्वर कृपा करके मेरी यात्रा सफल बना। 43 मैं यहाँ
कुएँ के पास ठहरूँगा और पानी भरने के लिए आने वाली किसी
युवती की प्रतीक्षा करूँगा। तब मैं कहूँगा, "कृपा करके आप अपने
घड़े से पीने के लिए पानी दें।" 44 उपयुक्त लड़की ही विशेष रूप
से उत्तर देगी। वह कहेगी, "यह पानी पीओ और मैं तुम्हारे ऊँटों के

लिए भी पानी लाती हूँ।" इस तरह मैं जानूँगा कि यह वही स्त्री हऐ
जिसे यहोवा ने मेरे मालिक के पुत्र के लिए चुना है।' "

45 "मेरी प्रार्थना पूरी होने के पहले ही रिबका कुएँ पर पानी भरने
आई। पानी का घड़ा उसने अपने कंधे पर ले रखा था। वह कुएँ
तक गई और उसने पानी भरा। मैंने इससे कहा, "कृपा करके मुझे
पानी दें। 46 उसने तुरन्त कंधे से घड़े को झुकाया और मेरे लिए पानी
डाला और कहा, 'यह पीएँ और मैं आपके ऊँटों के लिए भी पानी
लाऊँगी।' इसलिए मैंने पानी पीया और अपने ऊँटों को भी पानी
पिलाया। 47 तब मैंने इससे पूछा, 'तुम्हारे पिता कौन है?' इसने उत्तर
दिया, 'मेरा पिता बतूएल है। मेरे पिता के माता–पिता मिल्का और
नाहोर हैं।' तब मैंने इसे अँगूठी और बाहों के लिए बाजीबन्द दिए।
48 उस समय मैंने अपना सिर झुकाया और यहोवा को धन्य कहा।
मैंने अपने मालिक इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा को कृपालु कहा।
मैंने उसे धन्य कहा क्योंकि उसने सीधे मेरे मालिक के भाई की
पोती तक मुझे पहुँचाया। 49 अब बताओ कि तुम क्या करोगे? क्या
तुम मेरे मालिक पर दयालु और श्रद्धालु बनोगे और अपनी पुत्री उसे
दोगे? या तुम अपनी पुत्री देना मना करोगे? मुझे बताओ, जिससे मैं
यह समझ सकूँ कि मुझे क्या करना है।"

50 तब लाबान और बतूएल ने उत्तर दिया, "हम लोग यह देखते हैं
कि यह यहोवा की ओर से है। इसे हम टाल नहीं सकते। 51 रिबका
तुम्हारी है। उसे लो और जाओ। अपने मालिक के पुत्र से इसे विवाह
करने दो। यही है जिसे यहोवा चाहता है।"

52 इब्राहीम के नौकर ने यह सुना और वह यहोवा के सामने भूमि
पर झुका। 53 तब उसने रिबका को वे भेंटे दी जो वह साथ लाया
था। उसने रिबका को सोने और चाँदी के गहने और बहुत से सुन्दर
कपड़े दिए। उसने, उसके भाई और उसकी माँ को कीमती भेंटे दी।
54 नौकर और उसके साथ के व्यक्ति वहाँ ठहरे तथा खाया और

पीया। वे वहाँ रातभर ठहरे। वे दूसरे दिन सवेरे उठे और बोले
“अब हम अपने मालिक के पास जाएँगे।”
55 रिबका की माँ और भाई ने कहा, “रिबका को हम लोगों के
पास कुछ दिन और ठहरने दो। उसे दस दिन तक हमारे साथ ठहरने
दो। इसके बाद वह जा सकई है।”
56 लेकिन नौकर ने उनसे कहा, “मुझसे प्रतीक्षा न करवाएँ। यहोवा
ने मेरी यात्रा सफल की है। अब मुझे अपने मालिक के पास लौट
जाने दें।”
57 रिबका के भाई और माँ ने कहा, “हम लोग रिबका को बुलाएँगे
और उस से पूछेंगे कि वह क्या चाहती है?” 58 उन्होंने रिबका को
बुलाया और उससे कहा, “क्या तुम इस व्यक्ति के साथ अभी जाना
चाहती हो?”

रिबका ने कहा, “हाँ, मैं जाऊँगी।”
59 इसलिए उन्होंने रिबका को इब्राहीम के नौकर और उसके
साथियों के साथ जाने दिया। रिबका की धाय भी उनके साथ गई।
60 जब वह जाने लगी तब वे रिबका से बोले,

“हमारी बहन, तुम लाखों लोगों की
  जननी बनो
और तुम्हारे वंशज अपने शत्रुओं को हराएँ
  और उनके नगरों को ले लें।”

61 तब रिबका और धाय ऊँट पर चढ़ी और नौकर तथा उसके
साथियों के पीछे चलने लगी। इस तरह नौकर ने रिबका को साथ
लिया और घर को लौटने की यात्रा शुरू की।
62 इस समय इसहाक ने लहैरोई को छोड़ दिया था और नेगेव में
रहने लगा था। 63 एक शाम इसहाक मैदान में विचरण§ करने गया।
इसहाक ने नज़र उठाई और बहुत दूर से ऊँटों को आते देखा।

§ **24:63:** विचरण इस शब्द का अर्थ, “प्रार्थना करना” या “टहलना” है।

64 रिबका ने नज़र डाली और इसहाक को देखा। तब वह ऊँट
से कूद पड़ी। 65 उसने नौकर से पूछा, "हम लोगों से मिलने के लिए
खेतों में टहलने वाला वह युवक कौन है?"

नौकर ने कहा, "यह मेरे मालिक का पुत्र है।" इसलिए रिबका ने अपने मुँह को पर्दे में छिपा लिया।

66 नौकर ने इसहाक को वे सभी बातें बताई जो हो चुकी थी।
67 तब इसहाक लड़की को अपनी माँ के तम्बू में ले आया। उसी
दिन इसहाक ने रिबका से विवाह कर लिया। वह उससे बहुत प्रेम
करता था। अतः उसे उसकी माँ की मृत्यु के पश्चात् भी सांत्वना
मिली।

25

इब्राहीम का परिवार

1 इब्राहीम ने फिर विवाह किया। उसकी नई पत्नी का नाम कतूरा
था। 2 कतूरा ने जिम्रान, योक्षान, मदना, मिद्यान, यिशबाक और शूह
को जन्म दिया। 3 योक्षान, शबा और ददान का पिता हुआ। ददान
के वंशज अश्शूर और लुम्मी लोग थे। 4 मिद्यान के पुत्र एपा, एपेर,
हनोक, अबीद और एल्दा थे। ये सभी पुत्र इब्राहीम और कतूरा से
पैदा हुए। 5-6 इब्राहीम ने मरने से पहले अपनी दासियों* के पुत्रों
को कुछ भेंट दिया। इब्राहीम ने पुत्रों को पूर्व को भेजा। उसने इन्हें
इसहाक से दूर भेजा। इसके बाद इब्राहीम ने अपनी सभी चीज़ें
इसहाक को दे दीं।

7 इब्राहीम एक सौ पचहत्तर वर्ष की उम्र तक जीवित रहा।
8 इब्राहीम धीरे—धीरे कमज़ोर पड़ता गया और भरे—पूरे जीवन के
बाद चल बसा। उसने लम्बा भरपूर जीवन बिताया और फिर वह
अपने पुरखों के साथ दफनाया गया। 9 उसके पुत्र इसहाक और
इश्माएल ने उसे मकपेला की गुफा में दफनाया। यह गुफा सोहर

---

* **25:5-6:** दासियों शाब्दिक, "रखैल" दास स्त्रियाँ जो उसके लिये पत्नियाँ थीं।

के पुत्र एप्रोन के खेत में है। यह मम्रे के पूर्व में थी। 10 यह वही
गुफा है जिसे इब्राहीम ने हित्ती लोगों से खरीदा था। इब्राहीम को
उसकी पत्नी सारा के साथ दफनाया गया। 11 इब्राहीम के मरने के
बाद परमेश्वर ने इसहाक पर कृपा की और इसहाक लहैरोई में रहता
रहा।

12 इश्माएल के परिवार की यह सूची है। इश्माएल इब्राहीम और
हाजिरा का पुत्र था। (हाजिरा सारा की मिस्री दासी थी।) 13 इश्माएल
के पुत्रों के ये नाम हैं पहला पुत्र नबायोत था, तब केदार पैदा हुआ,
तब अदबेल, मिबसाम, 14 मिश्मा, दूमा, मस्सा, 15 हदर, तेमा, यतूर,
नापीश और केदमा हुए। 16 ये इश्माएल के पुरों के नाम थे। हर एक
पुत्र के अपने पड़ाव थे जो छोटे नगर में बदल गए। ये बारह पुत्र
अपने लोगों के साथ बारह राजकुमारों के समान थे। 17 इश्माएल
एक सौ सैंतीस वर्ष जीवित रहा। 18 इश्माएल के लोग हवीला से
लेकर शूर के पास मिस्र की सीमा और उससे भी आगे अश्शूर के
किनारे तक, घूमते रहे और अपने भाईयों और उनसे सम्बन्धित देशों
में आक्रमण करते रहे।†

इसहाक का परिवार

19 यह इसहाक की कथा है। इब्राहीम का एक पुत्र इसहाक था।
20 जब इसहाक चालीस वर्ष का था तब उसने रिबका से विवाह
किया। रिबका पद्दनराम की रहने वाली थी। वह अरामी बतूएल
की पुत्री थी और लाबान की बहन थी। 21 इसहाक की पत्नी बच्चे
नहीं जन सकी। इसलिए इसहाक ने यहोवा से अपनॊई पत्नी के
लिए प्रार्थना की। यहोवा ने इसहाक की प्रार्थना सुनी और यहोवा
ने रिबका को गर्भवती होने दिया।

22 जब रिबका गर्भवती थी तब वह अपने गर्भ के बच्चों से परेशान
तहई, लड़के उसके गर्भ में आपस में लिपट के एक दूसरे को मारने

† **25:18:** अपने भाईयों ... रहे देखें उत्पत्ति 16:12

लगे। रिबका ने यहोवा से प्रार्थना की और बोली, “मेरे साथ ऐसा
क्यों हो रहा है।” 23 यहोवा ने कहा,

“तुम्हारे गर्भ में दो राष्ट्र हैं।
दो परिवारों के राजा तुम से पैदा होंगे
और वे बँट जाएंगे।
एक पुत्र दूसरे से बलवान होगा।
बड़ा पुत्र छोटे पुत्र की सेवा करेगा।”

24 और जब समय पूरा हुआ तो रिबका ने जुड़वे बच्चों को जन्म
दिया। 25 पहला बच्चा लाल हुआ। उसकी त्वचा रोंएदार पोशाक की
तरह थी। इसलिए उसका नाम एसाव पड़ा। 26 जब दूसरा बच्चा पैदा
हुआ, वह एसाव की एड़ी को मज़बूती से पकड़े था। इसलिए उस
बच्चे का नाम याकूब पड़ा। इसहाक की उम्र उस समय साठ वर्ष
की थी। जब याकूब और एसाव पैदा हुए।

27 लड़के बड़े हुए। एसाव एक कुशल शिकारी हुआ। वह मैदानों
में रहना पसन्द करने लगा। किन्तु याकूब शान्त व्यक्ति था। वह
अपने तम्बू में रहता था। 28 इसहाक एसाव को प्यार करता था।
वह उन जानवरों को खाना पसन्द करता था जो एसाव मारकर
लाता था। किन्तु रिबका याकूब को प्यार करती थी।

29 एक बार एसाव शिकार से लौटा। वह थका हुआ और भूख
से परेशान था। याकूब कुछ दाल‡ पका रहा था।

30 इसलिए एसाव ने याकूब से कहा, “मैं भूख से कमज़ोर हो रहा
हूँ। तुम उस लाल दाल में से कुछ मुझे दो।” (यही कारण है कि लोग
उसे एदोम कहते हैं।)

---

‡ **25:29:** दाल या “अरहर।”

31 किन्तु याकूब ने कहा, “तुम्हें पहलौठा होने का अधिकार§
मुझको आज बेचना होगा।”
32 एसाव ने कहा, “मैं भूख से मरा जा रहा हूँ। यदि मैं मर जाता हूँ तो मेरे पिता का सारा धन भी मेरी सहायता नहीं कर पाएगा। इसलिए तुमको मैं अपना हिस्सा दूँगा।”
33 किन्तु याकूब ने कहा, “पहले वचन दो कि तुम यह मुझे दोगे।”
इसलिए एसाव ने याकूब को वचन दिया। एसाव ने अपने पिता के
धन का अपना हिस्सा यकूब को बेच दिया। 34 तब याकूब ने एसाव
को रोटी और भोजन दिया। एसाव ने खाया, पिया और तब चला गया। इस तरह एसाव ने यह दिखाया कि वह पहलौठे होने के अपने हक की परवाह नहीं करता।

26

इसहाक अबीमेलेक से झूठ बोलता है

1 एक बार अकाल* पड़ा। यह अकाल वैसा ही था जैसा इब्राहीम के समय में पड़ा था। इसलिए इसहाक गरार नगर में पलिश्तियों के
रजा अबीमेलेक के पास गया। 2 यहोवा ने इसहाक से बात की।
यहोवा ने इसहाक से यह कहा, “मिस्र को न जाओ। उसी देश में
रहो जिामें न का आदेश मैंने तुम्हें दिया है। 3 उसी देश में रहो और
मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। मैं तुम्हें और तुम्हारे परिवार को यह सारा प्रदेश दूँगा। मैं वही करूँगा जो मैंने तुम्हारे
पिता इब्राहीम को वचन दिया है। 4 मैं तुम्हारे परिवार को आकाश
के तारागणों की तरह बहुत से बनाऊँगा और मैं सारा प्रदेश तुम्हारे परिवार को दूँगा। पृथ्वी के सभी राष्ट्र तुम्हारे परिवार के कारण

§ **25:31:** पहलौठा … अधिकार पिता के मरने के बाद पिता की अधिक से अधिक सम्पत्ति पहलौठे पुत्र को प्राय: मिलती थी और बड़ा पुत्र ही परिवार का नया संरक्षक होता था। * **26:1:** अकाल वह समय जब बहुत समय तक वर्षा न हो और कोई फसल न उग सके। आमतौर पर आदमी और जानवर पर्याप्त खाना और पानी न मिलने से मर जाते हैं।

मेरा आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। 5 मैं यह इसलिए करूँगा कि तुम्हारे
पिता इब्राहीम ने मेरी आज्ञा का पालन किया और मैंने जो कुछ
कहा, उसने किया। इब्राहीम ने मेरे आदेशों, मेरी विधियों और मेरे
नियमों का पालन किया।”

6 इसहान ठहरा और गरार में रहा। 7 इसहाक की पत्नी रिबका
बहुत ही सुन्दर थी। उस जगह के लोगों ने इसहाक से रिबका के
बारे में पूछा। इसहाक ने कहा, “यह मेरी बहन है।” इसहाक यह
कहने से डर रहा था कि रिबका मेरी पत्नी है। इसहाक डरता था
कि लोग उसकी पत्नी को पाने के लिए उसको मार डालेंगे।

8 जब इसहाक वहाँ बहुत समय तक रह चुका, अबीमेलेक ने
अपनी खिड़की से बाहर झाँका और देखा कि इसहाक, रिबका के
साथ छेड़खानी कर रहा है। 9 अबीमेलेक ने इसहाक को बुलाया
और कहा, “यह स्त्री तुम्हारी पत्नी है। तुमने हम लोगों से यह क्यों
कहा कि यह मेरी बहन है।”

इसहाक ने उससे कहा, “मैं डरता था कि तुम उसे पाने के लिए
मुझे मार डालोगे।”

10 अबीमेलेक ने कहा, “तुमने हम लोगों के लिए बुरा किया है।
हम लोगों का कोई भी पुरुष तुम्हारी पत्नी के साथ सो सकता था।
तब वह बड़े पाप का दोषी होता।”

11 इसलिए अबीमेलेक ने सभी लोगों को चेतावनी दी। उसने
कहा, “इस पुरुष और इस स्त्री को कोई चोट नहीं पहुँचाएगा। यदि
कोई इन्हें चोट पहुँचाएगा तो वह व्यक्ति जान से मार दिया जाएगा।”

इसहाक धनी बना

12 इसहाक ने उस भूमि पर खेती की और उस साल उसे बहुत
फसल हुई। यहोवा ने उस पर बहुत अधिक कृपा की। 13 इसहाक
धनी हो गया। वह अधिक से अधिक धन तब तक बटोरता रहा
जब तक वह धनी नहीं हो गया। 14 उसके पास बहुत सी रेवड़े
और मवेशियों के झुण्ड थे। उसके पास अनेक दास भी थे। सभी

पलिश्ती उससे डाह रखते थे। 15 इसल; इए पलिश्तियों ने उन सभी
कुओं को नष्ट कर दिया जिन्हें इसहाक के पिता इब्राहीम और उसके
साथियों ने वर्षों पहले खोदा था। पलिश्तीयों ने उन्हें मिट्टी से भर
दिया। 16 और अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, "हमारा देश छोड़
दो। तुम हम लोगों से बहुत अधिक शक्तिशाली हो गए हो।"

17 इसलिए इसहाक ने वह जगह छोड़ दी और गरार की छोटी
नदी के पास पड़ाव डाला। इसहाक वहीं ठहरा और वहीं रहा।
18 इसके बहुत पहले इब्राहीम ने कई कुएँ खोदे थे। जब इब्राहीम
मरा तो पलिश्तीयों ने मिट्टी से कुओं को भर दिया। इसलिए वहीं
इसहाक लौटा और उन कुओं को फिर खोद डाला। 19 इसहाक के
नौकरों ने छोटी दी के पास एक कुआँ खोदा। उस कुएँ से एक पानी
का सोता फूट पड़ा। 20 तब गरार के गड़ेंरिए उस कुएँ की वजह से
इसहाक के नौकरों से झगड़ा करने लगे। उन्होंने कहा, "यह पाणी
हमारा है।" इसलिए इसहाक ने उसका नाम एसेक रखा। उसने यह
नाम इसलिए दिया कि उसी जगह पर उन लोगों ने उससे झगड़ा
किया था।

21 तब इसहाक के नौकरों ने दूसरा कुआँ खोदा। वहाँ के लोगों
ने उस कुएँ के लिए भी झगड़ा किया। इसलिए इसहाक ने उस कुएँ
का नाम सित्रा रखा।

22 इसहाक वहाँ से हटा और दूसरा कुआँ खोदा। उस कुएँ के
लिए झगड़ा करने कोई नहीं आया। इसलिए इसहाक ने उस कुएँ
का नाम रहोबोत रखा। इसहाक ने कहा, "यहोवा ने यहाँ हमारे लिए
जगह उपलब्ध कराई है। हम लोग बढ़ेंगे और इसी भूमि पर सफल
होंगे।"

23 उस जगह से इसहाक बेर्शेबा को गया। 24 यहोवा उस रात
इसहाक से बोला, "मैं तुम्हारे पिता इब्राहीम का परमेश्वर हूँ। डरो
मत। मैं तुम्हारे साथ हूँ और मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। मैं तुम्हारे
परिवार को महान बनाऊँगा। मैं अपने सेवक इब्राहीम के कारण
यह करूँगा।" 25 इसलिए इसहाक ने उस जगह यहोवा की उपासना

के लिए एक वेदी बनाई। इसहाक ने वहाँ पड़ाव डाला और उसके नौकरों ने एक कुआँ खोदा।

26 अबीमेलेक गरार से इसहाक को देखने आया। अबीमेलेक अपने साथ सलाहकार अहुज्जत और सेनापति पीकोल को लाया।

27 इसहाक ने पूछा, "तुम मुझे देखने क्यों आए हो? तुम इसके पहले मेरे साथ मित्रता नहीं रखते थे। तुमने मुझे अपना देश छोड़ने को विवश किया।"

28 उन्होंने जवाब दिय, "अब हम लोग जानते हैं कि यहोवा तुम्हारे साथ है। हम चाहते हैं कि हम तुम्हारे साथ एक वाचा करें। हम चाहते
हैं कि तुम हमें एक वचन दो। 29 हम लोगों ने तुम्हें चोट नहीं पहुँचाई,
अब तुम्हें यह वचन देना चाहिए कि तुम हम लोगों को चोट नहीं पहुँचाओगे। हम लोगों ने तुमको भेजा। लेकिन हम लोगों ने तुम्हें शान्ति से भेजा। अब साफ है कि यहोवा ने तुम्हें आशीर्वाद दिया है।"

30 इसलिए इसहाक ने उन्हें दावत दी। सभी ने खाया और पीया।
31 दूसरे दिन सवेरे हर एक व्यक्ति ने वचन दिया और शपथ खाई।
तब इसहाक ने उनको शान्ति से विदा किया और वे सकुशल उसके पास से चले आए।

32 उस दिन इसहाक के नौकर आए और उन्होंने अपने खोदे हुए कुएँ के बारे में बताया। नौकरों ने कहा, "हम लोगों ने उस कुएँ से
पानी पिया।" 33 इसलिए इसहाक ने उसका नाम शिबा रखा और
वह नगर अभी भी बेर्शेबा कहलाता है।

एसाव की पत्नियाँ

34 जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ, उसने हित्ती स्त्रियों से विवाह किया। एक बेरी की पुत्री यहूदीत थी। दूसरी एलोन की पुत्री बाशमत
थी। 35 इन विवाहों ने इसहाक और रिबका का मन दुःखी कर दिया।

27

वसीयत के झगड़े

1 जब इसहाक बूढ़ा हो गया तो उसकी आँखें अच्छी न रहीं।
इसहाक साफ—साफ नहीं देख सकता था। एक दिन उसने अपने
बड़े पुत्र एसाव को बुलाया। इसहाक ने कहा, "पुत्र।"

एसाव ने उत्तर दिया, "हाँ, पिताजी।"

2 इसहाक ने कहा, "देखो, मैं बूढ़ा तो गया। हो सकता है मैं जल्दी
ही मर जाऊँ। 3 अब तू अपना तरकश और धनुष लेकर, मेरे लिए
शिकार पर जाओ। मेरे खाने के लिए एक जानवर मार लाओ। 4 मेरा
प्रिय भोजन बनाओ। उसे मेरेपास लाओ, और मैं इसे खाऊँगा। तब
मैं मरने से पहले तुम्हें आशीर्वाद दूँगा।" 5 इसलिए एसाव शिकार
करने गया।

रिबका ने वे बातें सुन ली थी, जो इसहाक ने अपने पुत्र एसाव से
कही। 6 रिबका ने अपने पुत्र याकूब से कहा, "सुनो, मैंने तुम्हारे पिता
को, तुम्हारे भाई से बातें करते सुना है। 7 तुम्हारे पिता ने कहा, 'मेरे
खाने के लिए एक जानवर मारो। मेरे लिए भोजन बनाओ और मैं उसे
खाऊँगा। तब मैं मरने से पहले तुमको आशीर्वाद दूँगा।' 8 इसलिए
पुत्र सुनो। मैं जो कहती हूँ, करो। 9 पनी बकरियों के बीच जाओ और
दो नई बकरियाँ लाओ। मैं उन्हें वैसा बनाऊँगी जैसा तुम्हारे पिता
को प्रिय है। 10 तब तुम वह भोजन अपने पिता के पास ले जाओगे
और वह मरने से पहले तुमको ही आशीर्वाद देंगे।"

11 लेकिन याकूब ने अपनी माँ रिबका से कहा, "किन्तु मेरा भाई
रोएदार हऐ और मैं उसकी तरह रोएदार नहीं हूँ। 12 यदि मेरे पिता
मुझको छूते हैं, यो जान जाएंगे कि मैं एसाव नहीं हूँ। तब वे मुझे
आशीर्वाद नहईं देंगे। वे मुझे शाप* देंगे क्योंकि मैंने उनके साथ
चाल चलने का प्रयत्न किया।"

---

* **27:12:** शाप यह माँगना कि किसी का बुरा हो।

13 इस पर रिबका ने उससे कहा, “यदि कोई परेशानी होगी तो मैं अपना दोष मान लूँगी। जो मैं कहती हूँ करो। जाओ, और मेरे लिए बकरियाँ लाओ।”

14 इसलिए याकूब बाहर गया और उसने दो बकरियों को पकड़ा
और अपनी माँ के पास लाया। उसकी माँ ने इसहाक की पसंद के
अनुसार विशेष ढंग से उन्हें पकाया। 15 तब रिबका ने उस पोशाक
को उठाया जो उसका बड़ा पुत्र एसाव पहनना पसंद करता था।
रिबका ने अपने छोटे पुत्र याकूब को वे कपड़े पहना दिए। 16 रिबका
ने बकरियों के चमड़े को लिया और याकूब के हाथों और गले पर
बांध दिया। 17 तब ररिबका ने अपना पकाया भोजन उठाया और
उसे याकूब को दियआ।

18 याकूब पिता के पास गया और बोला, “पिताजी।”

और उसके पिता ने पूछा, “हाँ पुत्र, तुम कौन हो?”

19 याकूब ने अपने पिता से कहा, “मैं आपका बड़ा पुत्र एसाव हूँ। आपने जो कहा हऐ, मैंने कर दिया है। अब आप बैठें और उन जानवरों को खाएं जिनका शिकार मैंने आपके लिए किया है। तब आप मुझे आशीर्वाद दे सकते हैं।”

20 लेकिन इसहाक ने अपने पुत्र से कहा, “तुमने इतनी जल्दी शिकार करके जानवरों को कैसे मारा हैं?”

याकूब ने उत्तर दिया, “क्योंकि आपके परमेश्वर यहोवा ने मुझे जल्दी ही जानवरों को प्राप्त करा दिया।”

21 तब इसहाक ने याकूब से कहा, “मेरे पुत्र मेरे पास आओ जिससे मैं तुम्हें छू सकूँ। यदि मैं तुम्हें छू सकूँगा तो मैं यह जान जाऊँगा कि तुम वास्तव में मेरे पुत्र एसाव ही हो।”

22 याकूब अपने पिता इसहाक के पास गया। इसहाक ने
उसे छुआ और कहा, “तुम्हारी आवाज़ याकूब की आवाज़ जैसी
है। लेकिन तुम्हारी बाहें एसाव की रोंएदार बाहों की तरह हैं।”
23 इसहाक यह नहीं जान पाया कि यह याकूब है क्योंकि उसकी

बाहें एसाव की बाहों की तरह रोएंदार थी। इसलिए इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया।

24 इसहाक ने कहा, "क्या सचमुच तुम मेरे पुत्र एसाव हो?"

याकूब ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं हूँ।"

याकूब के लिए "आशीर्वाद"

25 तब इसहाक ने कहा, "भोजन लाओ। मैं इसे खाऊँगा और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा।" इसलिए याकूब ने उसे भोजन दिया और उसने खाया। याकूब ने उसे दाखमधु दी, और उसने उसे पिया।

26 तब इसहाक ने उससे कहा, "पुत्र, मेरे करीब आओ और मुझे
चूमो।" 27 इसलिए याकूब अपने पिता के पास गया और उसे चूमा।
इसहाक ने एसाव के कपड़ों की गन्ध पाई और उसको आशीर्वाद दिया। इसहाक ने कहा,

"अहा, मेरे पुत्र की सुगन्ध यहोवा से वरदान पाए
खेतों की सुगन्ध की तरह है।
28 यहोवा तुम्हें बहुत वर्षा दे।
जिससे तुम्हें बहुत फसल और दाखमधु मिले।
29 सभी लोग तुम्हारी सेवा करें।
राष्ट्र तुम्हारे सामने झुकें।
तुम अपने भाईयों के ऊपर शासक होगे।
तुम्हारी माँ के पुत्र तुम्हारे सामने झुकेंगे और तुम्हारी आज्ञा मानेंगे।
हर एक व्यक्ति जो तुम्हें शाप देगा, शाप पाएगा
और हर एक व्यक्ति जो तुम्हें आशीर्वाद देगा, आशीर्वाद पाएगा।"

एसाव को "आशीर्वाद"

30 इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देना पूरा किया। तब ज्योंही याकूब अपने पिता इसहाक के पास से गया त्योंही एसाव शिकार

करके अन्दर आया। 31 एसाव ने अपनेपिता की पसंद का विशेष
भोजन बनाया। एसाव इसे अपने पिता के पास लाया। उसने अपने
पिटा से कहा, “पिताजी, उठें और उस भोजन को खाएं जो आपके
पुत्र ने आपके लिए मारा है। तब आप मुझे आशीर्वाद दे सकते हैं।”

32 किन्तु इसहाक ने उससे कहा, “तुम कौन हो?”

उसने उत्तर दिया, “मैं आपका पहलौठा पुत्र एसाव हूँ।”

33 तब इसहाक बहुत झल्ला गया और बोला, “तब तुम्हारे आने
से पहले वह कौन था? जिसने भोजन पकाया और जो मेरे पास
लाया। मैंने वह सब खाया और उसको आशीर्वाद दिया। अब अपने
आशीर्वादों को लौटाने का समय निकल चुका है।”

34 एसाव ने अपने पिता की बात सुनी। उसका मन बहुत गुस्से
और कड़वाहट से भर गया। वह चीखा। वह अपने पिता से बोला,
“पिताजी, तब मुझे भी आशीर्वाद दें।”

35 इसहाक ने कहा, “तुम्हारे भाई ने मुझे धोखा दिया। वह आया
और तुम्हारा आशीर्वाद लेकर गया।”

36 एसाव ने कहा, “उसका नाम ही याकूब (चालबाज़) है। यह
नाम उसके लिए ठीक ही है। उसका यह नाम बिल्कुल सही रखा
गया है वह सचमुच में चालबाज़ हैम। उसने मुझे दो बार धोखा
दिया। वह पहलौठा होने के मेरे अधिकार को ले ही चुका था और
अब उसने मेरे हिस्से के आशीर्वाद को भी ले लिया। क्या आपने
मेरे लिए कोई आशीर्वाद बचा रखा है?”

37 इसहाक ने जवाब दिया, “नहीं, अब बहुत देर हो गई। मैंने
याकूब को तुम्हारे ऊपर शासन करने का अधिकार दे दिया है। मैंने
यह भी कह दिया कि सभी भाई उसके सेवक होंगे। मैंने उसे बहुत
अधिक अन्न और दाखमधु का आशीर्वाद दिया है। पुत्र तुम्हें देने के
लिए कुछ नहीं बचा है।”

38 किन्तु एसाव अपने पिता से माँगता रहा। "पिताजी, क्या
आपके पास एक भी आशीर्वाद नहीं है? पिताजी, मुझे भी आशीर्वाद
दें।" यूँ एसाव रोने लगा।

39 तब इसहाक ने उससे कहा,

"तुम अच्छी भूमि पर नहीं रहोगे।
तुम्हारे पास बहुत अन्न नहीं होगा।
40 तुम्हें जीने के लिए संघर्ष करना होगा।
और तुम अपने भाई के दास होगे।
किन्तु तुम आज़ादी के लिए लड़ोगे,
और उसके शासन से आज़ाद हो जाओगे।"

41 इसके बाद इस आशीर्वाद के कारण एसाव याकूब से घृणा
करता रहा। एसाव ने मन ही मन सोचा, "मेरा पिता जल्दी ही मरेगा
और मैं उसका शोक मनाऊँगा। लेकिन उसके बाद मैं याकूब को
मार डालूँगा।"

42 रिबका ने एसाव द्वारा याकूब को मारने का षड़यन्त्र सुना।
उसने याकूब को बुलाया और उससे कहा, "सुनो, तुम्हारा भाई
एसाव तुम्हें मारने का षडयन्त्र कर रहा है। 43 इसलिए पुत्र जो मैं
कहती हूँ, करो। मेरा भाई लाबान हारान में रहता है। उसके पास
जाओ और छिपे रहो। 44 उसके पास थोड़े समय तक ही रहो जब
तक तुम्हारे भाई का गुस्सा नहीं उतरता। 45 थोड़े समय बाद तुम्हारा
भाई भूल जाएगा कि तुमने उसके साथ क्या किया? तब मैं तुम्हें
लौटाने के लिए एक नौकर को भेजूँगी। मैं एक ही दिन दोनों पुत्रों
को खोना नहीं चाहती।"

46 तब रिबका ने इसहाक से कहा, "तुम्हारे पुत्र एसाव ने हित्ती
स्त्रियों से विवाह कर लिया है। मैं इन स्त्रियों से परेशान हूँ क्योंकि

ये हमारे लोगों में से नहीं हैं। यदि याकूब भी इन्हीं स्त्रियों में से किसी के साथ विवाह करता है तो मैं मर जाना चाहूँगी।"

28

1 इसहाक ने याकूब को बुलाया और उसको आशीर्वाद दिया।
तब इसहाक ने उसे आदेश दिया। इसहाक ने कहा, "तुम कनानी
स्त्री से विवाह नहीं कर सकते। 2 इसलिए इस जगह को छोड़ो
और पद्दनराम को जाओ। अपने नाना बतूएल के घराने में जाओ।
वहाँ तुम्हारा मामा लाबान रहता है। उसकी किसी एक पुत्री से
विवाह करो। 3 मैं प्रार्थना करता हूँ कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम्हें
आशीर्वाद दे और तुम्हें बहुत से पुत्र दे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम
एक महान राष्ट्र के पिता बनो। 4 मैं प्रार्थना करता हूँ कि जिस तरह
परमेश्वर ने इब्राहीम को वरदान दिया था उसी तरह वह तुमको भी
आशीर्वाद दे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर तुम्हें इब्राहीम का
आशीर्वाद दे, यानी वह तुम्हें और तुम्हारी आने वाली पीढ़ी को,
यह जगह जहाँ तुम आज परदेशी की तरह रहते हो, हमेशा के लिए
तुम्हारी सम्पत्ति बना दे।"

5 इस तरह इसहाक ने याकूब को पद्दनराम के प्रदेश को भेजा।
याकूब अपने मामा लाबान और रिबका का पिता था और रिबका
याकूब और एसाव की माँ थी।

6 एसाव को पता चला कि उसके पिता इसहाक ने याकूब को
आशीर्वाद दिया है और उसने याकूब को पद्दरनाम में एक पत्नी की
खोज के लिए भेजा है। एसाव को यह भी पता लगा कि इसहाक
ने याकूब को आदेश दिया है कि वह कनानी स्त्री से विवाह न
करे। 7 एसाव ने यह समझा कि याकूब ने अपने पिता और माँ की
आज्ञा मानी और वह पद्दरनाम को चला गया। 8 एसाव ने इससे यह
समझा कि उसका पिता नहीं चाहता कि उसके पुत्र कनानी स्त्रियों
से विवाह करें। 9 एसाव की दो पत्नियाँ पहले से ही थी। किन्तु उसने

इश्माएल की पुत्री महलत से विवाह किया। इश्माएल इब्राहीम का पुत्र था। महलत नबायोत की बहन थी।

परमेश्वर का घर बेतेल

10 याकूब ने बेर्शेबा को छोड़ा और वह हारान को गया। 11 याकूब
के यात्रा करते समय ही सूरज डूब गया था। इसलिए याकूब रात
बिताने के लिए एक जगह ठहरने गया। याकूब ने उस जगह एक
चट्टान देखी और सोने के लिए इस पर अपना सिर रखा। 12 याकूब
ने सपना देखा। उसने देखा कि एक सीढ़ी पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुँची
है। 13 याकूब ने स्वर्गदूतों को उस सीढ़ी पर चढ़ते उतरते देखा और
यहोवा को सीढ़ी के पास खड़ा देखा। यहोवा ने कहा, "मैं तुम्हारे
पितामह इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं इसहाक का परमेश्वर
हूँ। मैं तुम्हें वह भूमि दूँगा जिस पर तुम अब सो रहे हो। मैं यह
भूमि तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को दूँगा। 14 तुम्हारे वंशज उतने होंगे
जितने पृथ्वी पर मिट्टी के कण हैं। वे पूर्व, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण
में फैलेंगे। पृथ्वी के सभी परिवार तुम्हारे वंशजों के कारण वरदान
पाएँगे।

15 "मैं तुम्हारे साथ हूँ और मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा जहाँ भी जाओगे और मैं इस भूमि पर तुम्हें लौटा ले आऊँगा। मैं तुमको तब तक नहीं छोड़ूँगा जब तक मैं वह नहीं कर लूँगा जो मैंने करो का वचन दिया है।"

16 तब याकूब अपनी नींद से उठा और बोला, "मैं जानता हूँ कि यहोवा इस जगह पर है। किन्तु यहाँ जब तक मैं सोया नहीं था, मैं नहीं जानता था कि वह यहाँ है।"

17 याकूब डर गया। उसने कहा, "यह बहुत महान जगह है। यह तो परमेश्वर का घर है। यह तो स्वर्ग का द्वार है।"

18 याकूब दूसरे दिन बहुत सबेरे उठा। याकूब ने उस शिला को उठाया और उसे किनारे से खड़ा कर दिया। तब उसने इस पर

तेल चढ़ाया। इस तरह उसने इसे परमेश्वर का स्मरण स्तम्भ बनाया।
19 उस जगह का नाम लूज था किन्तु याकूब ने उसे बेतेल नाम दिया।
20 तब याकूब ने एक वचन दिया। उसने कहा, "यदि परमेश्वर मेरे
साथ रहेगा और अगर परमेश्वर, जहाँ भी मैं जाता हूँ, वहाँ मेरी रक्षा
करेगा, अगर परमेश्वर मुझे खाने को भोजन और पहनने को वस्त्र
देगा। 21 अगर मैं अपने पिता के पास शान्ति से लौटूँगा, यदि परमेश्वर
ये सभी चीजें करेगा, तो यहोवा मेरा परमेश्वर होगा। 22 इस जगह,
जहाँ मैंने यह पत्थर खड़ा किया है, परमेश्वर का पवित्र स्थान होगा
और परमेश्वर जो कुछ तू मुझे देगा उसका दशमांश मैं तुझे दूँगा।"

29

याकूब राहेल से मिलता है

1 तब याकूब ने अपनी यात्रा जारी रखी। वह पूर्व के प्रदेश में गया।
2 याकूब ने दृष्टि डाली, उसने मैदान में एक कुआँ देखा। वहाँ कुएँ
के पास भेड़ों की तीन रेवड़े पड़ी हुई थी। यही वह कुआँ था जहाँ ये
भेड़े पानी पीती थी। वहाँ एक बड़े शिला से कुएँ का मुँह ढका था।
3 जब सभी भेड़े वहाँ इकट्ठी हो जातीं तो गड़ेंरिये चट्टान को कुएँ के
मुँह पर से हटाते थे। तब सभी भेड़े उसका जल पी सकती थी। जब
भेड़े पी चुकती थी तब गड़ेंरिये शिला को फिर अपनी जगह पर रख
देते थे।

4 याकूब ने वहाँ गड़ेंरियों से कहा, "भाईयों, आप लोग कहीं के
हैं?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हम हारान के है।"

5 तब याकूब ने कहा, "क्या आप लोग नाहोर के पुत्र लाबान को
जानते हैं?"

गड़ेंरियों ने जवाव दिया, "हम लोग उसे जानते हैं।"

6 तब याकूब ने पूछा, "वह कुशल से तो हैं?"

उन्होंने कहा, “वे ठीक हैं। सब कुछ बहुत अच्छा है। देखो, वह उसकी पुत्री राहेल अपनी भेड़ों के साथ आ रही है।”

7 याकूब ने कहा, “देखो, अभी दिन है और सूरज डूबने में अभी काफी देर है। रात के लिए जानवरों को इकट्ठा करने का अभी समय नहीं है। इसलिए उन्हें पानी दो और उन्हें मैदान में लौट जाने दो।”

8 लेकिन उस गड़ेंरियें ने कहा, “हम लोग यह तब तक नहीं कर सकते जब तक सभी रेबड़े इकट्ठी नहीं हो जाती। तब हम लोग शिला को कुएँ हटाएँगें और सभी भेड़े पानी पीएँगी।”

9 याकूब जब तक गड़ेंरियों से बातें कर रहा था तब राहेल अपने पिता को भेड़ों के साथ आई। (राहेल का काम भेड़ों की देखभाल
करना था।) 10 राहेल लाबान की पुत्री थी। लाबान, रिबका का भाई
था, जो याकूब की माँ थी। जब याकूब ने राहेल को देखा तो जाकर
शिला को हटाया और भेड़ों को पानी पिलाया। 11 तब याकूब ने
राहेल को चूमा और जोर से रोया। 12 याकूब ने बताया कि मैं तुम्हारे
पिता के खानदान से हूँ। उसने राहेल को बताया कि मैं रिबका का पुत्र हूँ। इसलिए राहेल घर को दौड़ गई और अपने पिता से यह सब कहा।

13 लाबान ने अपनी बहन के पुत्र, याकूब के बारे में खबर सुनी। इसलिए लाबन उससे मिलने के लिए दौड़ा। लाबान उससे गले मिला, उसे चूमा और उसे अपने घर लाया। याकूब ने जो कुछ हुआ था, उसे लाबान को बताया।

14 तब लाबान ने कहा, “आश्चर्य है, तुम हमारे खानदान से हो।” अतः याकूब लाबान के साथ एक महीने तक रूका।

लाबान याकूब के साथ धोखा करता है

15 एक दिन लाबान ने याकूब से कहा, “यह ठीक नहीं है कि तुम हमारे यहाँ बिना बेतन में काम करते रहो। तुम रिश्तेदार हो, दास नहीं। मैं तुम्हें क्या वेतन दूँ?”

16 लाबान की दो पुत्रियाँ थी। बड़ी लिआ थी और छोटी राहेल।
17 राहेल सुन्दर थी और लिआ की धुंधली आँखें थीं।* 18 याकूब
राहेल से प्रेम करता था। याकूब ने लाबान से कहा, "यदि तुम मुझे
अपनी पुत्री राहेल के साथ विवाह करने दो तो मैं तुम्हारे यहाँ सात
साल तक काम कर सकता हूँ।"

19 लाबान ने कहा, "यह उसके लिए अच्छा होगा कि किसी दूसरे
के बजाय वह तुझसे विवाह करे। इसलिए मेरे साथ ठहरो।"

20 इसलिए याकूब ठहरा और सात साल तक लाबान के लिए
काम करता रहा। लेकिन यह समय उसे बहुत कम लगा क्योंकि
वह राहेल से बहुत प्रेम करता था।

21 सात साल के बाद उसने लाबान से कहा, "मुझे राहेल को दो
जिससे मैं उससे विवाह करूँ। तुम्हारे यहाँ मेरे काम करने का समय
पूरा हो गया।"

22 इसलिए लाबान ने उस जगह के सभी लोगों को एक दावत दी।
23 उस रात लाबान अपनी पुत्री लिआ को याकूब के पास लाया।
याकूब और लिआ ने परस्पर शारीरिक सम्बन्ध स्थापित किया।
24 (लाबान ने अपनी पुत्री को, सेविका के रूप में अपनी नौकरानी
जिल्पा को दिया।) 25 सबेरे याकूब ने जाना कि वह लिआ के साथ
सोया था। याकूब ने लाबान से कहा, "तुमने मुझे धोखा दिया है। मैंने
तुम्हारे लिए कठिन परिश्रम इसलिए किया कि मैं राहेल से विवाह
कर सकूँ। तुमने मुझे धोखा क्यों दिया?"

26 लाबान ने कहा, "हम लोग अपने देश में छोटी पुत्री का बड़ी
पुत्री से पहले विवाह नहीं करने देंगे। 27 किन्तु विवाह के उत्सव
को पूरे सप्ताह मनाले रहो और मैं राहेल को भी तुम्हें विवाह के लिए
दूँगा। परन्तु तुम्हें और सात वर्ष तक मेरी सेवा करनी पड़ेगी।"

---

* **29:17:** लिआ ... थी यह यही कहने का एक विनम्र ढँग हो सकता है कि लिआ बहुत सुन्दर नहीं थी।

28 इसलिए याकूब ने यही किया और सप्ताह को बिताया। तब
लाबान ने अपनी पुत्री राहेल को भी उसे उसकी पत्नी के रूप में
दिया। 29 (लाबान ने अपनी पुत्री राहेल की सेविका के रूप में अपनी
नौकरानी बिल्हा को दिया।) 30 इसलिए याकूब ने राहेल के साथ भी
शारीरिक सम्बन्ध स्थापित किया और याकूब ने राहेल को लिआ
से अधिक प्यार किया। याकूब ने लाबान के लिए और सात वर्ष
तक काम किया।

याकूब का परिवार बढ़ता है

31 यहोवा ने देखा कि याकूब लिआ से अधिक राहेल को प्यार
करता है। इसलिए यहोवा ने लिआ को इस योग्य बनाया कि वह
बच्चों को जन्म दे सके। लेकिन राहेल को कोई बच्चा नहीं हुआ।

32 लिआ ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसने उसका नाम रूबेन
रखा। लिआ ने उसका यह नाम इसलिए रखा क्योंकि उसने कहा,
"यहोवा ने मेरे कष्टों को देखा है। मेरा पति मुझको प्यार नहीं करता,
इसलिए हो सकता है कि मेरा पति अब मुझसे प्यार करे।"

33 लिआ फिर गर्भवती हुई और उसने दूसरे पुत्र को जन्म दिया।
उसने इस पुत्र का नाम शिमोन रखा। लिआ ने कहा, "यहोवा ने सुना
कि मुझे प्यार नहीं मिलता, इसलिए उसने मुझे यह पुत्र दिया।"

34 लिआ फिर गर्भवती हुई और एक ओर पुत्र को जन्म दिया।
उसने पुत्र का नाम लेवी रखा। लिआ ने कहा, "अब निश्चय ही मेरा
पति मुझको प्यार करेगा। मैंने उसे तीन पुत्र दिए हैं।"

35 तब लिआ ने एक और पुत्र को जन्म दिया। उसने इस लड़के
का नाम यहूदा रखा। लिआ ने उसे यह नाम दिया क्योंकि उसने कहा,
"अब मैं यहोवा की स्तुति करूँगी।" तब लिआ को बच्चा होना बन्द
हो गया।

30

1 राहेल ने देखा कि वह याकूब के लिए किसी बच्चे को जन्म नहीं
दे रही है। राहेल अपनी बहन लिआ से ईर्ष्या करने लगी। इसलिए
राहेल ने याकूब से कहा, “मुझे बच्चो दो, वरना मैं मर जाऊँगी।”
2 याकूब राहेल पर क्रुद्ध हुआ। उसने कहा, “मैं परमेश्वर नहीं हूँ।
वह परमेश्वर ही है जिसने तुम्हें बच्चों को जन्म देने से रोका है।”
3 तब राहेल ने कहा, “तुम मेरी दासी बिल्हा को ले सकते हो।
उसके साथ सोओ और वह मेरे लिए बच्चे को जन्म देगी।* तब मैं
उसके द्वारा माँ बनूँगी।”
4 इस प्रकार राहेल ने अपने पति याकूब के लिए बिल्हा को
दिया। याकूब ने बिल्हा के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। 5 बिल्हा
गर्भवती हुई और याकूब के लिए एक पुत्र को जन्म दिया।
6 राहेल ने कहा, “परमेश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली है। उसने मुझे
एक पुत्र देने का निश्चय किया।” इसलिए राहेल ने इस पुत्र का नाम
दान रखा।
7 बिल्हा दूसरी बार गर्भवती हुई और उसने याकूब को दूसरा
पुत्र दिया। 8 राहेल ने कहा, “अपनी बहन से मुकाबले के लिए मैंने
कठिन लड़ाई लड़ी है और मैंने विजय पा ली है।” इसलिए उसने
इस पुत्र क नाम नप्ताली रखा।
9 लिआ ने सोचा कि वह और अधिक बच्चों को जन्म नहीं दे
सकती। इसलिए उसने अपनी दासी जिल्पा को याकूब के लिए
दिया। 10 तब जिल्पा ने एक पुत्र को जन्म दिया। 11 लिआ ने कहा,
“मैं भाग्यवती हूँ। अब स्त्रियाँ मुझे भाग्यवती कहेंगी।” इसलिए उसने
पुत्र का नाम गाद रखा। 12 जिल्पा ने दूसरे पुत्र को जन्म दिया।
13 लिआ ने कहा, “मैं बहुत प्रसन्न हूँ।” इसलिए उसने लड़के का
नाम आशेर रखा।

---

* **30:3:** वह … देगी शाब्दिक, “वह मेरी गोद में ही बच्चे को जन्म देगी और उसके द्वारा मेरा भी पुत्र होगा।”

14 गेहूँ कटने के समय रूबेन खेतों में गया और कुछ विशेष फूलों को देखा। रूबेन इन फूलों को अपनी माँ लिआ के पास लाया। लेकिन राहेल ने लिआ से कहा, "कृपाकर अपने पुत्र के फूलों में से कुछ मुझे दे दो।"

15 लिआ ने उत्तर दिया, "तुमने तो मेरे पति को पहले ही ले लिया है। अब तुम मेरे पुत्र के फूलों को भी ले लेना चाहती हो।"

लेकिन राहेल ने उत्तर दिया, "यदि तुम अपने पुत्र के फूल मुझे दोगी तो तुम आज रात याकूब के साथ सो सकती हो।"

16 उस रात याकूब खेतों से लौटा। लिआ ने उसे देखा और उससे मिलने गई। उसने कहा, "आज रात तुम मेरे साथ सोओगे। मैंने अपने पुत्र के फूलों को तुम्हारी कीमत के रूप में दिया है।" इसलिए याकूब उस रात लिआ के साथ सोया।

17 तब परमेश्वर ने लिआ को फिर गर्भवती होने दिया। उसने पाँचवें
पुत्र को जन्म दिया। 18 लिआ ने कहा, "परमेश्वर ने मुझे इस बात का
पुरस्कार दिया है कि मैंने अपनी दासी को अपने पति को दिया।"
इसलिए लिआ ने अपने पुत्र का नाम इस्साकर रखा।

19 लिआ फिर गर्भवती हुई और उसने छठे पुत्र को जन्म दिया।
20 लिआ ने कहा, "परमेश्वर ने मुझे एक सुन्दर भेंट दी है। अब
निश्चय ही याकूब मुझे अपनाएगा, क्योंकि मैंने उसे छः बच्चे दिए
है।" इसलिए लिआ ने पुत्र का नाम जबूलून रखा।

21 इसके बाद लिआ ने एक पुत्री को जन्म दिया। उसने पुत्रों का नाम दीना रखा।

22 तब परमेश्वर ने राहेल की प्रार्थना सुनी। परमेश्वर ने राहेल के
लिए बच्चे उत्पन्न करना सभंव बनाया। 23-24 राहेल गर्भवती हुई और
उसने एक पुत्र को जन्म दिया। राहेल ने कहा, "परमेश्वर ने मेरी
लज्जा समाप्त कर दी है और मुझे एक पुत्र दिया है।" इसलिए राहेल
ने अपने पुत्र का नाम यूसुफ रखा।

याकूब ने लाबान के साथ चाल चली

25 यूसुफ के जन्म के बाद याकूब ने लाबान से कहा, “अब मुझे
अपने घर लौटने दो। 26 मुझे मेरी पत्नियाँ और बच्चे दो। मैंने चौदह
वर्ष तक तुम्हारे लिए काम करके उन्हें कमाया है। तुम जानते हो
कि मैंने तुम्हारी अच्छी सेवा की है।”

27 लाबान ने उससे कहा, “मुझे कुछ कहने दो।† मैं अनुभव करता
हूँ‡ कि यहोवा ने तुम्हारी वजह से मुझ पर कृपा की है। 28 बताओ
कि तुम्हें मैं क्या हूँ और मैं वही तुमको दूँगा।”

29 याकूब ने उत्तर दिया, “तुम जानते हो, कि मैंने तुम्हारे लिए
कठिन परिश्रम किया है। तुम्हारी रेवड़े बड़ी हैं और जब तक मैंने
उनकी देखभाल की है, ठीक रही है। 30 जब मैं आया था, तुम्हारे
पास थोड़ी सी थीं। अब तुम्हारे पास बहुत अधिक हैं। हर बार जब
मैंने तुम्हारे लिए कुछ किया है यहोवा ने तुम पर कृपा की है। अब
मेरे लिए समय आ गया है कि मैं अपने लिए काम करूँ, यह मेरे
लिए अपना घर बनाने का समय है।”

31 लाबान ने पूछा, “तब मैं तुम्हें क्या दूँ?”

याकूब ने उत्तर दिया, “मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे कुछ दो। मैं
केवल चाहता हूँ कि तुम जो मैंने काम किया है उसकी कीमत चुका
दो। केवल यही ेक काम करो। मैं लौटूँगा और तुम्हारी भेड़ों की
देखभाल करूँगा। 32 मुझे अपनी सभी रेवड़ों के बीच से जाने दो और
दागदार औ धारीदार हर एक मेमने को मुझे ले लेने दो और काली
नई बकरी को ले लेने दी हर एक दागदार और धारीदार बकरी को
ले लेने दो। यही मेरा वेतन होगा। 33 भविष्य में तुम सरलता से देख
लोग कि मैं ईम्मानदार हूँ। तुम मेरी रेवड़ों को देखने आ सकते हो।

---

† **30:27:** मुझे … दो “यदि आपकी दृष्टि में मैं कृपापात्र हुँ।” कुछ कहने के लिए आज्ञा पाने का यह तरीका प्राय: प्रयोग में आता है। ‡ **30:27:** मैं … हूँ “अनुमान किया” “दिव्य ज्ञान हुआ” या “निर्णय किया।”

यदि कोई बकरी दागदार नहीं होगी या कोई भेड़ काली नहीं होगी तो तुम जान लोगे कि मैंने उसे चुराया है।”

34 लाबान ने उत्तर दिया, “मैं इसे स्वीकार करता हूँ। हम तुमको
जो कुछ मागोगे देंगे।” 35 लेकिन उस दिन लाबान ने दागदार बकरों
को छिपा दिया और लाबान ने सभी दागदार या धारीदार बकरियों
को छिपा दिया। लाबान ने सभी काली भेड़ों की देखभाल करने को
कहा। 36 इसलिए पुत्रों ने सभी दागदार जानवरों को लिया और वे
दूसरी जगह चले गए। उन्होंने तीन दिन तक यात्रा की। याकूब रूक
गया और बच्चे हुए जानवरों की देखभाल करने लगा। किन्तु उनमें
कोई जानवर दागदार या काला नहीं था।

37 इसलिए याकूब ने चिनार, बादाम और अर्मोन पेड़ों की हरी
शाखाएँ काटी। उसने उनकी छाल इस तरह उतारी कि शाखाएँ
सफेद धारीदार बन गई। 38 याकूब ने पानी पिलाने की जगह पर
शाखाओं को रेवड़े के सामने रख दिया। जब जानवर पानी पीने आए
तो उस जगह पर वे गाभिन होने के लिए मिले। 39 तब बकरियाँ जब
शाखाओं के सामने गाभिन होने के लिए मिली तो जो बच्चे पैदा हुए
वे दागदार, धारीदार या काले हुए।

40 याकूब ने दागदार और काले जानवरों को रेवड़ के अन्य
जानवरों से अलग किया। सो इस प्रकार, याकूब ने अपने जानवरों
को लाबान के जानवरों से अलग किया। उसने अपनी भेड़ों को
लाबान की भेड़ों के पास नहीं भटकने दिया। 41 जब कभी रेवड़ में
स्वस्थ जानवर गाभिन होने के लिए मिलते थे तब याकूब उनकी
आँखों के सामने शाखाएँ रख देता था, उन शाखाओं के करीब ही
ये जानवर गाभिन होने के लिए मिलते थे। 42 लेकिन जब कमजोर
जानवर गाभिन होने के लिए मिलते थे। तो याकूब वहाँ शाखाएँ नहीं
रखता था। इस प्रकार कमजोर जानवरों से पैदा बच्चे लाबान के थे।
स्वस्थ जानवरों से पैदा बच्चे याकूब के थे। 43 इस प्रकार याकूब
बहुत धनी हो गया। उसके पास बड़ी रेवड़ें, बहुत से नौकर, ऊँट

और गधे थे।

31

विदा होने के समय याकूब भागता है

1 एक दिन याकूब ने लाबान के पुत्रों को बात करते सुना। उन्होंने
कहा, "हम लोगों के पिता का सब कुछ याकूब ने ले लिया है।
याकूब धनी हो गया है, और यह सारा धन उसने हमारे पिता से
लिया है।" 2 याकूब ने यह देखा कि लाबान पहले की तरह प्रेम
भाव नहीं रखता है। 3 परमेश्वर ने याकूब से कहा, "तुम अपने पूर्वजों
के देश को वापस लौट जाओ जहाँ तुम पैदा हुए। मैं तुम्हारे साथ
रहूँगा।"

4 इसलिए याकूब ने राहेल और लिआ से उस मैदान में मिलने
के लिए कहा जहाँ वह बकरियों और भेड़ों की रेवड़े रखता था।
5 याकूब ने राहेल और लिआ से कहा, "मैंने देखा है कि तुम्हारे
पिता मुझ से क्रोधित हैं। उन का मेरे प्रति वह पहले जैसा प्रेम—भाव
अब नहीं रहा। 6 तुम दोनों जानती हो कि मैंने तुम लोगों के पिता के
लिए उतनी कड़ी मेहनत की, जितनी कर सकता था। 7 लेकिन तुम
लोगों के पिता ने मुझे धोखा दिया। तुम्हारे पिता ने मेरा वेतन दस
बार बदला है। लेकिन इस पूरे समय में परमेश्वर ने लाबान के सारे
धोखों से मुझे बचाया है।"

8 "एक बार लाबान ने कहा, 'तुम दागदार सभी बकरियों को रख
सकते हो। यह तुम्हारा होगा।' जब से उसने यह कहा तब से सभी
जानवरों ने धारीदार बच्चे दिए। इस प्रकार वे सभी मेरे थे। लेकिन
लाबान ने तब कहा, 'मैं दागदार बकरियों को रखूँगा। तुम सारी
धारीदार बकरियाँ ले सकते हो। यही तुम्हारा वेतन होगा।' उसके
इस तरह कहने के बाद सभी जानवरों न धारीदार बच्चे दिये। 9 इस
प्रकार परमेश्वर ने जानवरों को तुम लोगों के पिता से ले लिया है
और मुझे दे दिया है।

10 “जिस समय जानवर गाभिन होने के लिए मिल रहे थे मैंने एक
स्वप्न देखा। मैंने देखा कि केवल नर जानवर जो गाभिन करने के
लिए मिल रहे थे धारीदार और दागदार थे। 11 स्वप्न में परमेश्वर के
दूत ने मुझ से बातें की। स्वर्गदूत ने कहा, ‘याकूब!’

“मैंने उत्तर दिया, ‘हाँ!’

12 “स्वर्गदूत कहा, ‘देखो, केवल दागदार और धारीदार बकरियाँ
ही गाभिन होने के लिए मिल रही हैं। मैं ऐसा कर रहा हूँ। मैंने वह
सब बुरा देखा है जो लाबान तुम्हारे लिए करता है। मैं यह इसलिए
कर रहा हूँ कि सभी नये बकरियों के बच्चे तुम्हारे हो जायें। 13 मैं वही
परमेश्वर हूँ जिससे तुमने बेतेल में वाचा बाँधी थी। उस जगह तुमने
एक स्मरण स्तम्भ बनाया था और जैतून के तेल से उसका अभिषेक
किया था और उस जगह तुमने मुझसे एक प्रतिज्ञा की थी। अब, उठो
और यह जगह छोड़ दो और वापस अपने जन्म को लौट जाओ।’ ”

14 राहेल और लिआ ने याकूब को उत्तर दिया, “हम लोगों के
पिता के पास मरने पर हम लोगों को देने के लिए कुछ नहीं है।
15 उसने हम लोगों के साथ अजनबी जैसा व्यवहार किया है। उसने
हम लोगों को और तुमको बेच दिया और इस प्रकार हम लोगों का
सारा धन उसने खर्च कर दिया। 16 परमेश्वर ने यह सारा धन हमारे
पिता से ले लिया है और अब यह हमारा है। इसलिए तुम वही करो
जो परमेश्वर ने करने के लिए कहा है।”

17 इसलिए याकूब ने यात्रा की तैयारी की। उसने अपनी पत्नियों
और पुत्रों को ऊँटो पर बैठाया। 18 तब वे कनान की ओर लौटने
लगे जहाँ उसका पिता रहता था। जानवरों की भी सभी रेवड़ें, जो
याकूब की थीं, उनके आगे चल रही थीं। वह वो सभी चीजें साथ
ले जा रहा था जो उसने पद्दनराम में रहते हुए प्राप्त की थी।

19 इस समय लाबान अपनी भेड़ों का ऊन काटने गया था। जब
वह बाहर गया तब राहेल उसके घर में घुसी और अपने पिता के
गृह देवताओं को चुरा लाई।

20 याकूब ने अरामी लाबान को धोखा दिया। उसने लाबान को
वह नहीं बताया कि वह वहाँ से जा रहा है। 21 याकूब ने अपने
परिवार और अपनी सभी चीजों को लिया तथा शीघ्रता से चल पड़ा। उन्होंने फरात नदी को पार किया और गिलाद पहाड़ की ओर यात्रा की।

22 तीन दिन बाद लाबान को पता चला कि याकूब भाग गया।
23 इसलिए लाबान ने अपने आदमियों को इकट्ठा किया और याकूब का पीछा करना आरम्भ किया। सात दिन बाद लाबान ने याकूब
को गिलाद पहाड़ के पास पाया। 24 उस रात परमेश्वर लाबान के
पास स्वप्न में प्रकट हुआ। परमेश्वर ने कहा, "याकूब से तुम जो कुछ कहो उसके एक–एक शब्द के लिए सावधान रहो।"

चुराए गए देवताओं की खोज

25 दूसरे दिन सबेरे लाबान ने याकूब को जा पकड़ा। याकूब ने अपना तम्बू पहाड़ पर लगाया था। इसलिए लाबान और उसके आदमियों ने अपने तम्बू गिलाद पहाड़ पर लगाए।

26 लाबान ने याकूब से कहा, "तुमने मुझे धोखा क्यों दिया? तुम मेरी पुत्रियों को ऐसे क्यों ले जा रहे हो मानो वे युद्ध में पकड़ी गई
स्त्रियाँ हो? 27 मुझसे बिना कहे तुम क्यों भागे? यदि तुमने कहा होता तो मैं तुम्हें दावत देता। उसमें बाजे के साथ नाचना और गाना
होता। 28 तुमने मुझे अपने नातियों को चूमने तक नहीं दिया और न ही पुत्रियों को विद कहने दिया। तुमने यह करके बड़ी भारी मूर्खता की।
29 तुम्हें सचमुच चोट पहुँचाने की शक्ति मुझमें है, किन्तु पिछली रात तुम्हारे पिता का परमेश्वर मेरे स्वप्न में आया। उसने मुझे चेतावनी
दी कि मैं किसी प्रकार तुमको चोट न पहुँचाऊँ। 30 मैं जानता हूँ कि
तुम अपने घर लौटना चाहते हो। यही कारण है कि तुम वहाँ से चल पड़े हो। किन्तु तुमने मेरे घर में देवताओं को क्यों चुराया?"

31 याकूब ने उत्तर दिया, “मैं तुमसे बिना कहे चल पड़ा, क्योंकि मैं
डरा हुआ था। मैंने सोचा कि तुम अपनी पुत्रियों को मुझसे ले लोगी।
32 किन्तु मैंने तुम्हारे देवताओं को नहीं चुराया। यदि तुम यहाँ मेरे
पास किसी व्यक्ति को, जो तुम्हारे देवताओं को चुरा लाया है, पाओ
तो वह मार दिया जाएगा। तुम्हारे लोग ही मेरे गवाह होंगे। तुम
अपनी किसी भी चीज को यहाँ ढूँढ सकते हो। जो कुछ भी तुम्हारा
हो, ले लो।” (याकूब को यह पता नहीं था कि राहेल ने लाबान के
गृह देवता चुराए हैं।)
33 इसलिए लाबान याकूब के तम्बू में गया और उसमें ढूँढा। उसने
याकूब के तम्बू में ढूँढा और तब लिआ के तम्बू में भी। तब उसने
उस तम्बू में ढूँढा जिसमें दोनों दासियाँ ठहरी थी। किन्तु उसने उसके
घर से देवताओं को नहीं पाया। तब लाबान राहेल के तम्बू में गया।
34 राहेल ने ऊँट की जीन में देवताओं को छिपा रका था और वह
उन्हीं पर बैठी थी। लाबान ने पूरे तम्बू में ढूँढा किन्तु वह देवताओं
को न खोज सका।
35 और राहेल ने अपने पिता से कहा, “पिताजी, मुझ पर क्रुद्ध
न हो। मैं आपके सामने खड़ी होने में असमर्थ हूँ। इस समय मेरा
मासिकधर्म चल रहा है।” इसलिए लाबान ने पूरे तम्बू में ढूँढा, लेकिन
वह उसके घर से देवताओं को नहीं पा सका।
36 तब याकूब बहुत क्रुद्ध हुआ। याकूब ने कहा, “मैंने क्या बुरा
किया है? मैंने कौन सा नियम तोड़ा है? मेरा पीछा करने और मुझे
रोकने का अधिकार तुम्हें कैसे है? 37 मेरा जो कुछ है उसमें तुमने
ढूँढ लिया। तुमने ऐसी कोई चीज़ नहीं पाई जो तुम्हारी है। यदि तुमने
कोई चीज़ पाई हो तो मुझे दिखाओ। उसे यहाँ रखी जिससे हमारे
साथी देख सकें। हमारे साथियों को तय करने दो कि हम दोनों में
कौन ठीक है। 38 मैंने तुम्हारे लिए बीस वर्ष तक काम किया है।
इस पूरे समय में बच्चा देते समय कोई मेमना तुम्हारी रेवड़ में से नहीं
खाया है। 39 यदि कभी जंगली जानवरों ने कोई भेड़ मारी तो मैंने

तुरन्त उसकी कीमत स्वयं दे दी। मैंने कभी मरे जानवर को तुम्हारे
पास ले जाकर यह नहीं कहा कि इसमें मेरा दोष नहीं। किन्तु रात–
दिन मुझे लूटा गया। 40 दिन में सूरज मेरी ताकत छीनता था और
रात को सर्दी मेरी आँखों से नींद चुरा लेती थी। 41 मैंने बीस वर्ष तक
तुम्हारे लिए एक दास की तरह काम किया। पहले के चौदह वर्ष मैंने
तुम्हारी दो पुत्रियों को पाने के लिए काम किया। बाद में छः वर्ष मैंने
तुम्हारे जानवरों को पाने के लिए काम किया और इस बीच तुमने
मेरे वेतन दस बार बदला। 42 लेकिन मेरे पूर्वजों के परमेश्वर इब्राहीम
का परमेश्वर और इसहाक क भय* मेरे साथ था। यदि परमेश्वर मेरे
साथ नहीं होता तो तुम मुझे खाली हाथ भेज देते। किन्तु परमेश्वर ने
मेरी परेशानियों को देखा। परमेश्वर ने मेरे किए काम को देखा और
पिछली रात परमेश्वर ने प्रमाणित कर दिया कि मैं ठीक हूँ।"

याकूब और लाबान की सन्धि

43 लाबान ने याकूब से कहा, "ये लड़कियाँ मेरी पुत्रियाँ है। उनके
बच्चे मेरे हैं। ये जानवर मेरे हैं। जो कुछ भी तुम यहाँ देखते हो, मेरा
है। लेकिन मैं अपनी पुत्रियों और उनके बच्चों को रखने के लिए कुछ
नहीं कर सकता। 44 इसलिए मैं तुमसे एक सन्धि करना चाहता हूँ।
हम लोग पत्थरों का एक ढेर लगाएँगे जो यह बताएगा कि हम लोग
सन्धि कर चुके हैं।"

45 इसलिए याकूब ने एक बड़ी चट्टान ढूँढी और उसे यह पता देने
के लिए वहाँ रखा कि उसने सन्धि की है। 46 इसने अपने पुरुषों की
और अधिक चट्टानें ढूँढने और चट्टानों का एक ढेर लगाने को कहा।
तब उन्होंने चट्टानों के समीप भोजन किया। 47 लाबान ने उस जगह
का नाम रखा यज्ञा सहादूधा रखा। लेकिन याकूब ने उस जगह का
नाम गिलियाद रखा।

---

* **31:42:** इसहाक का भय परमेश्वर का ही एक नाम। इससे पता चलता है कि परमेश्वर बहुत शक्तिशाली है जिससे बहुत लोग डरते हैं।

48 लाबान ने याकूब से कहा, “यह चट्टानों का ढेर हम दोनों को
हमारी सन्धि की याद दिलाने में सहायता करेगा।” यह कारण है कि
याकूब ने उस जगह को गिलियाद कहा।

49 तब लाबान ने कहा, “यहोवा, हम लोगों के एक दूसरे से अलग
होने का साक्षी रहे।” इसलिए उस जगह का नाम मिजपा भी होगा।

50 तब लाबान ने कहा, “यदि तुम मेरी पुत्रियों की चोट पहुँचाओगे
तो याद रखो, परमेश्वर तुमको दण्ड देगा। यदि तुम दूसरी स्त्री से
विवाह करोगे तो याद रखो, परमेश्वर तुमको देख रहा है। 51 यहाँ
ये चट्टानें हैं, जो हमारे बीच में रखी हैं और यह विशेष चट्टान है
जो बताएगी कि हमने सन्धि की है। 52 चट्टानों का ढेर तथा यह
विशेष चट्टान हमें अपनी सन्धि को याद कराने में सहायता करेगी।
तुमसे लड़ने के लिए मैं इन चट्टानों के पार कभी नहीं जाऊँगा और
तुम मुझसे लड़ने के लिए इन चट्टानों से आगे मेरी ओर कभी नहीं
आओगे। 53 यदि हम लोग इस सन्धि को तोड़ें तो इब्राहीम का
परमेश्वर, नाहोर का परमेश्वर और उनके पूर्वजों का परमेश्वर हम
लोगों का न्याय करेगा।”

याकूब के पित इसहाक ने परमेश्वर को “भय” नाम से पुकारा।
इसलिए याकूब ने सन्धि के लिए उस नाम का प्रयोग किया। 54 तब
याकूब ने एक पशु को मारा और पहाड़ पर बलि के रूप में भेंट
किया और उसने अपने पुरुषों को भोजन में सम्मिलित होने के लिए
बुलाया। भोजन करने के बाद उन्होंने पहाड़ पर रात बिताई। 55 दूसरे
दिन सबेरे लाबान ने अपने नातियों को चूमा और पुत्रियों को बिदा
दी। उसने उन्हें आशीर्वाद दिया और घर लौट गया।

32

एसाव के साथ फिर मेल

1 याकूब ने भी वह जगह छोड़ी। जब वह यात्रा कर रहा था उसने
परमेश्वर के स्वर्गदूत को देखा। 2 जब याकूब ने उन्हें देखा तो कहा,

“यह परमेश्वर का पड़ाव है।” इसलिए याकूब ने उस जगह का नाम
महनैम रखा।

3 याकूब का भाई एसाव सेईर नामक प्रदेश में रहता था। यह
एदोम का पहाड़ी प्रदेश था। याकूब ने एसाव के पास दूत भेजा।
4 याकूब ने दूत से कहा, “मेरे स्वामी एसाव को यह खबर दी:
‘तुम्हारा सेवक याकूब कहता है, मैं इन सारे वर्षों लाबान के साथ
रहा हूँ। 5 मेरे पास मवेशी, गधे, रेवड़े और बहुत से नौकर हैं। मैं इन्हें
तुम्हारे पास भेजता हूँ और चाहता हूँ कि तुम हमें स्वीकार करो।’ ”

6 दूत याकूब के पास लौटा और बोला, “हम तुम्हारे भाई एसाव
के पास गए। वह तुमसे मिलने आ रहा है। उसके साथ चार सौ
सशस्त्र वीर हैं।”

7 उस सन्देश ने याकूब को डरा दिया। उसने अपने सभी साथीयों
को दो दलों में बाँट दिया। उसने अपनी सभी रेवड़ों, मवेशियों के
झुण्ड और ऊँटों को दो भागों में बाँटा। 8 याकूब ने सोचा, “यदि
एसाव आकर एक भाग को नष्ट करता है तो दूसरा भाग सकता है
और बच सकता है।”

9 याकूब ने कहा, “हे मेरे पूर्वज इब्राहीम के परमेश्वर। हे मेरे
पिता इसहाक के परमेश्वर। तूने मुझे अपने देश में लौटने और अपने
परिवार में आने के लिए कहा। तूने कहा कि तू मेरी भलाई करेगा।
10 तू मुझ पर बहुत दयालु रहा है। तूने मेरे लिए बहुत अच्छी चीजें
की हैं। पहली बार मैंने यरदन नदी के पास यात्रा की, मेरे पास टहलने
की छड़ी* के अतिरिक्त कुछ भी न था। किन्तु मेरे पास अब इतनी
चीजें हैं कि मैं उनको पूरे दो दलों में बाँट सकूँ। 11 तुझसे प्रार्थना
करता हूँ कि कृपा करके मुझे मेरे भाई एसाव से बचा। मैं उससे
डरा हुआ हूँ। इसलिए कि वह आएगा और हम सभी को, यहाँ तक
कि बच्चों सहित माताओं को भी जान से मार डालेगा। 12 हे यहोवा,

---

* **32:10:** छड़ी या गड़रिये की लाठी।

तूने मुझसे कहा, 'मैं तुम्हारी भलाई करूँगा। मैं तुम्हारे परिवार को बढ़ाऊँगा और तुम्हारे वंशजों को समुद्र के बालू के कणों के समान बढ़ा दूँगा। वे इतने अधिक होंगे कि गिने नहीं जा सकेंगे।' "

13 याकूब रात को उस जगह ठहरा। याकूब ने कुछ चीजें एसाव
को भेंट देने के लिए तैयार की। 14 याकूब ने दो सौ बकरियाँ, बीस
बकरे, दो सौ भेड़ें तथा बीस नर भेड़े लिए। 15 याकूब ने तीस ऊँट
और उनके बच्चें, चालीस गायें और दस बैल, बीस गदहियाँ और
दस गदहे लिए। 16 याकूब ने जानवरों का हर एक झुण्ड नौकरों को
दिया। तब याकूब ने नौकरों से कहा, "सब जानवरों के हर झुण्ड
को अलग कर लो। मेरे आगे–आगे चलो और हर झुण्ड के बीच
कुछ दूरी रखो।" 17 याकूब ने उन्हें आदेश दिया। जानवरों के पहले
झुण्ड वाले नौकर से याकूब ने कहा, "मेरा भाई एसाव जब तुम्हारे
पास आए और तुमसे पूछे, 'यह किसके जानवर हैं? तुम कहाँ जा
रहे हो? तुम किसके नौकर हो?' 18 तब तुम उत्तर देना, 'ये जानवर
आपके सेवक याकूब के हैं। याकूब ने इन्हें अपने स्वामी एसाव को
भेंट के रूप में भेजे हैं, और याकूब भी हम लोगों के पीछे आ रहा
है।' "

19 याकूब ने दूसरे नौकर, तीसरे नौकर, और सभी अन्य नौकरों
को यही बात करने का आदेश दिया। उसने कहा, "जब तुम लोग
एसाव से मिलो तो यही एक बात कहोगे। 20 तुम लोग कहोगे, 'यह
आपकी भेंट है, और आपका सेवक याकूब भी लोगों के पीछे आ
रहा है।' "

याकूब ने सोचा, "यदि मैं भेंट के साथ इन पुरुषों को आगे भेजता
हूँ तो यह हो सकता है कि एसाव मुझे क्षमा कर दे और मुझको
स्वीकार कर ले।" 21 इसलिए याकूब ने एसाव को भेंट भेजी। किन्तु
याकूब उस रात अपने पड़ाव में ही ठहरा।

22 बाद में उसी रात याकूब उठा और उस जगह को छोड़ दिया।

याकूब ने अपनी दोनों पत्नियों, अपनी दोनों दासियों और अपने
ग्यारह पुत्रों को साथ लिया। घाट पर जाकर याकूब ने यब्बोक नदी
को पार किया। 23 याकूब ने अपने परिवार को नदी के उस पार
भेजा। तब याकूब ने अपनी सभी चीजें नदी के उस पार भेज दीं।

परमेश्वर से मल्ल युद्ध

24 याकूब नदी को पार करने वाला अन्तिम व्यक्ति था। किन्तु पार
करने से पहले जब तक वह अकेला ही था, एक व्यक्ति आया और
उससे मल्ल युद्ध करने लगा। उस व्यक्ति ने उससे तब तक मल्ल युद्ध
किया जब तक सूरज न निकला। 25 व्यक्ति ने देखा कि वह याकूब
को हरा नहीं सकता। इसलिए उसने याकूब के पैर को उसके कूल्हे
के जोड़ पर छुआ। उस समय याकूब के कूल्हे का जोड़ अपने स्थान
से हट गया।

26 तब उस व्यक्ति ने याकूब से कहा, "मुझे छोड़ दो। सूरज ऊपर
चढ़ रहा है।"

किन्तु याकूब ने कहा, "मैं तुमको नहीं छोड़ूँगा। मुझको तुम्हें
आशीर्वाद देना होगा।"

27 और उस व्यक्ति ने उससे कहा, "तुम्हारा क्या नाम है?"

और याकूब ने कहा, "मेरा नाम याकूब है।"

28 तब व्यक्ति ने कहा, "तुम्हारा नाम याकूब नहीं रहेगा। अब
तुम्हारा नाम इस्राएल होगा। मैं तुम्हें यह नाम इसलिए देता हूँ कि
तुमने परमेश्वर के साथ और मनुष्यों के साथ युद्ध किया है और तुम
हराए नहीं जा सके हो।"

29 तब याकूब ने उससे पूछा, "कृपया मुझे अपना नाम बताएं।"

किन्तु उस व्यक्ति ने कहा, "तुम मेरा नाम क्यों पूछते हो?" उस
समय उस व्यक्ति ने याकूब को आशीर्वाद दिया।

30 इसलिए याकूब ने उस जगह का नाम पनीएल रखा। याकूब
ने कहा, "इस जगह मैंने परमेश्वर का प्रत्यक्ष दर्शन किया है। किन्तु

मेरे जीवन की रक्षा हो गई।" 31 जैसे ही वह पनीएल से गुजरा, सूरज
निकल आया। याकूब अपने पैरों के कारण लंगड़ाकर चल रहा
था। 32 इसलिए आज भी इस्राएल के लोग पुट्ठे की माँसपेशी को
नहीं खाते क्योंकि इसी माँसपेशी पर याकूब को चोट लगी थी।

33

याकूब अपनी बीरता दिखाता है

1 याकूब ने दृष्टि उठाई और एसाव को आते हुए देखा। एसाव आ
रहा था और उसके साथ चार सौ पुरुष थे। याकूब ने अपने परिवार
को चार समूहों में बाँटा। लिआ और उसके बच्चे एक समूह में थे,
राहेल और यूसुफ एक समूह में थे, दासी और उनके बच्चे दो समूहों
में थे। 2 याकूब ने दासियों और उनके बच्चों को आगे रखा। उसके
बाद उनके पीछे लिआ और उसके बच्चों को रखा और याकूब ने
राहेल और यूसुफ को सबके अन्त में रखा।

3 याकूब स्वयं एसाव की ओर गया। इसलिए वह पहला व्यक्ति
था जिसके पास एसाव आया। अपने भाई की ओर बढ़ते समय
याकूब ने सात बार ज़मीन पर झुककर प्रणाम किया।

4 तब एसाव ने याकूब को देखा, वह उससे मिलने को दौड़ पड़ा।
एसाव ने याकूब को अपनी बाहों में भर लिया और छाती से लगाया।
तब एसाव ने उसकी गर्दन को घूमा और दोनों आनन्द में रो पड़े।
5 एसाव ने नज़र उठाई और स्त्रियों तथा बच्चों को देखा। उसने कहा,
"तुम्हारे साथ ये कौन लोग हैं?"

याकूब ने उत्तर दिया, "ये वे बच्चे हैं जो परमेश्वर ने मुझे दिए है।
परमेश्वर मुझ पर दयालु रहा है।"

6 तब दोनों दासियाँ अपने बच्चों के साथ एसाव के पास गए।
उन्होंने उसको झुककर प्रणाम किया। 7 तब लिआ अपने बच्चों के

साथ एसाव के सामने गई और उसने प्रणाम किया और तब राहेल और यूसुफ एसाव के सामने गए और उन्होंने भी प्रणाम किया।

8 एसाव ने कहा, “मैंने जिन सब लोगों को यहाँ आते समय देखा वे कौन थे? और वे सभी जानवर किसलिए थे?”

याकूब ने उत्तर दिया, “वे तुमको मेरी भेट है जिससे तुम मुझे स्वीकार कर सको!”

9 किन्तु एसाव ने कहा, “भाई, तुम्हें मुझको कोई भेंट नहीं देनी चाहिए क्योंकि मेरे पास सब कुछ बहुतायत से हैं।”

10 याकूब ने कहा, “नहीं! मैं तुमसे विनती करता हूँ। यदि तुम सचमुच मुझे स्वीकार करते हो तो कृपया जो भेटें देता हूँ तुम स्वीकार करो। मैं तुमको दुबारा देख कर बहुत प्रसन्न हूँ। यह तो परमेश्वर को देखने जैसा है। मैं यह देखकर बहुत प्रसन्न हूँ कि तुमने
मुझे स्वीकार किया है। 11 इसलिए मैं विनती करता हूँ कि जो भेंट मैं
देता हूँ उसे भी स्वीकार करो। परमेश्वर मेरे ऊपर बहुत कृपालु रहा है। मेरे पास अपनी आवश्यकता से अधिक हैं।” इस प्रकार याकूब ने एसाव से भेंट स्वीकार करने को विनती की। इसलिए एसाव ने भेंट स्वीकार की।

12 तब एसाव ने कहा, “अब तुम अपनी यात्रा जारी रख सकते हो। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।”

13 किन्तु याकूब ने उससे कहा, “तुम यह जानते हो कि मेरे बच्चे अभी कमज़ोर हैं और मुझे अपनी रेवड़ों और उनके बच्चों की विशेष देख—रेख करनी चाहिए। यदि मैं उन्हें बहुत दूर एक दिन में चलने
के लिए विवश करता हूँ तो सभी पशु मर जाएंगे। 14 इसलिए तुम
आगे चलो और मैं धीरे—धीरे तुम्हारे पीछे आऊँगा। मैं पशुओं और अन्य जानवरों की रक्षा के लिए काफी धीरे—धीरे बढ़ूँगा और मैं काफी धीरे—धीरे इसलिए चलूँगा कि मेरे बच्चे बहुत अधिक थक न जाए। मैं सेईर में तुमसे मिलूँगा।”

15 इसलिए एसाव ने कहा, "तब मैं अपने कुछ साथियों को
तुम्हारी सहायता के लिए छोड़ दूँगा।"

किन्तु याकूब ने कहा, "यह तुम्हारी विशेष दया है। किन्तु ऐसा
करने की कोई आवश्यकता नहीं है।" 16 इसलिए उस दिन एसाव
सेईर की वापसी यात्रा पर चल पढ़ा। 17 किन्तु याकूब सुक्कोत को
गया। वहाँ उसने अपने लिए एक घर बनाया और अपने मवेशियों
के लिए छोटी पशुशालाएँ बनाई। इसी कारण इस जगह का नाम
सुक्कोत रखा।

18 बाद में याकूब ने अपना जो कुछ था उसे कनान प्रदेश से शकेम
नगर को भेज दिया। याकूब ने नगर के समीप मैदान में अपना डेरा
डाला। 19 याकूब ने उस भूमि को शकेम के पिता हमोर के परिवार
से खरीदा। याकूब ने चाँदी के सौ सिक्के दिए। 20 याकूब ने परमेश्वर
की उपासना के लिए वहाँ एक विशेष स्मरण स्तम्भ बनाया। याकूब
ने जगह का नाम "एले, इस्राएल का परमेश्वर" रखा।

34

दीना के साथ कुकर्म

1 दीना लिआ और याकूब की पुत्री थी। एक दिन तीना उस प्रदेश
की स्त्रियों को देखने के लिए बाहर गई। 2 उस प्रदेस के राजा हमोर
के पुत्र शकेम ने दीना को देखा। उसने उसे पकड़ लिया और अपने
साथ शारीरीक सम्बन्ध करने के लिए उसे विवश किया। 3 शकेम
दने से प्रेम करने लगा और उससे विवाह करना चाहा। 4 शकेम ने
अपने पिता से कहा, "कृपया इस लड़की को प्राप्त करें जिससे मैं
इसके साथ विवाह कर सकूँ।"

5 याकूब ने यह जान लिया कि शकेम ने उसको पुत्री के साथ
ऐसी बुरी बात की है। किन्तु याकूब के सभी पुत्र अपने पशुओं के
साथ मैदान में गए थे। इसलिए वे जब तक नहीं आए, याकूब ने कुछ

नहीं किया। 6 उस समय शकेम का पिता हमोर याकूब के साथ बात
करने गया।
7 खेतों में याकूब के पुत्रों ने जो कुछ हुआ था, उसकी खबर
सुनी। जब उन्होंने यह सुना तो वे बहुत क्रुद्ध हुए। वे पागल से हो
गए क्योंकि शकेम ने याकूब की पुत्री के साथ सोकर इस्राएल को
कलंकित किया था। शकेम ने बहुत घिनौनी बात की थी। इसलिए
सभी भाई खेतों से घर लौटे।
8 किन्तु हमोर ने भाईयों से बात की। उसने कहा, “मेरा पुत्र शकेम
दीना से बहुत प्रेम करता है। कृपया उसे इसके साथ विवाह करने
दो। 9 यह विवाह इस बात का प्रमाण होगा कि हम लोगों ने विशेष
सन्धि की है। तब हमारे लोग तुम लोगों की स्त्रियों और तुम्हारे लोग
हम लोगों की स्त्रियों के साथ विवाह कर सकते हैं। 10 तुम लोग
हमारे साथ एक प्रदेश में रह सकते हो। तुम भूमि के स्वामी बनने
और यहाँ व्यापार करने के लिए स्वतन्त्र होगे।”
11 शकेम ने भी याकूब और भाईयों से बात की। शकेम ने कहा,
“कृपया मुझे स्वीकार करें और मैंने जो किया उसके लिए क्षमा
करें। मुझे जो कुछ आप लोग करने को कहेंगे, करूँगा। 12 मैं कोई
भी भेंट* जो तुम चाहोगे, दूँगा, अगर तुम मुझे दीना के साथ विवाह
करने दोगे।”
13 याकूब के पुत्रों ने शकेम और उसके पिता से झूठ बोलने का
निश्चय किया। भाई अभी भी पागल हो रहे थे क्योंकि शकेम ने उनकी
बहन दीना के साथ ऐसा घिनौना व्यवहार किया था। 14 इसलिए
भाईयों ने उससे कहा, “हम लोग तुम्हें अपनी बहन के साथ विवाह
नहीं करने देंगे क्योंकि तुम्हारा खतना अभी नहीं हुआ है। हमारी
बहन का तुमसे विवाह करना अनुचित होगा। 15 किन्तु हम लोग
तुम्हें उसके साथ विवाह करने देंगे यदि तुम यही एक काम करो कि
तुम्हारे नगर के हर पुरुष का खतना हम लोगों की तरह हो जाए।

* **34:12:** भेंट या दहेज यहाँ इसका अर्थ वह धन है जो पत्नी को पाने के लिए दिया जाता है।

16 तब तुम्हारे पुरुष हमारी स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं और हमारे
पुरुष तुम्हारी स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं। तब हम एक ही लोग
बन जाएँगे। 17 यदि तुम खतना कराना अस्वीकार करते हो तो हम
लोग दीना को ले जाएँगे।"

18 इस सन्धि ने हमोर और शकेम को बहुत प्रसन्न किया। 19 दीना
के भाईयों ने जो कुछ कहा उसे कहने में शकेम बहुत प्रसन्न हुआ।
शकेम परिवार का सबसे अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति था। 20 हमोर
और शकेम अपने नगर के सभास्थल को गए। उन्होंने नगर के लोगों
से बातें कीं और कहा, 21 "इस्राएल के ये लोग हमारे मित्र होना चाहते
हैं। हम लोग उन्हें अपने प्रदेश में रहने देना चाहते हैं और अपने साथ
शान्ति बनाए रखना चाहते हैं। हम लोग के पास अपने सभी लोगों के
लिए काफी भूमि है। हम लोग इनकी स्त्रियों के साथ विवाह करने
को स्वतन्त्र हैं और हम लोग अपनी स्त्रियाँ उनको विवाह के लिए
देने में प्रसन्न हैं। 22 किन्तु एक बात है जिसे करने के लिए हम सभी
को सन्धि करनी होगी। 23 यदि हम ऐसा करेंगे तो उनके पशुओं
तथा जानवरों से हम धनी हो जाएँगे। इसलिए हम लोग उनके साथ
यह सन्धि करें और वे यहीं हम लोगों के साथ रहेंगे।" 24 सभास्थल
पर जिन लोगों ने यह बात सुनी वे हमोर और शकेम के साथ सहमत
हो गए और उस समय हर एक पुरुष का खतना कर दिया गया।

25 तीन दिन बाद खतना कर दिए गए पुरुष अभी ज़ख्मी थे।
याकूब के दो पुत्र शिमोन और लेवी जानते थे कि इस समय लोग
कमज़ोर होगें, इसलिए वे नगर को गए और उन्होंने सभी पुरुषों को
मार डाला। 26 दीना के भाई शिमोन और लेवी ने हमोर और उसके
पुत्र शकेम को मार डाला। उन्होंने दीना को शकेम के घर से निकाल
लिया और वे चले आए। 27 याकूब के अन्य पुत्र नगर में गए और
उन्होंने वहाँ जो कुछ था, लूट लिया। शकेम ने उनकी बहन के साथ
जो कुछ किया था, उससे वे तब तक क्रुद्ध थे। 28 इसलिए भाईयों
ने उनके सभी जानवर ले लिए। उन्होंने उनके गधे तथा नगर और
खेतों मे अन्य जो कुछ था सब ले लिया। 29 भाईयों ने उन लोगों का

सब कुछ ले लिया। भाईयों ने उनकी पत्नियों और बच्चों तक को ले
लिया।
30 किन्तु याकूब ने शिमोन और लेवी से कहा, "तुम लोगों ने
मुझे बहुत कष्ट दिया है और इस प्रदेश के निवासियों के मन में
घृणा उत्पन्न करायी। सभी कनानी और परिजी लोग हमारे विरुद्ध हो
जाएँगे। यहाँ हम बहुत थोड़े हैं। यदि इस प्रदेश के लोग हम लोगों
के विरुद्ध लड़ने के लिए इकट्ठे होंगे तो मैं नष्ट हो जाऊँगा और हमारे
साथ हमारे सभी लोग नष्ट हो जाएँगे।"
31 किन्तु भाईयों ने उत्तर दिया, "क्या हम लोग उन लोगों को
अपनी बहन के साथ वेश्या जैसा व्यवहार करने दें? नहीं हमारी
बहन के साथ वैसा व्यवहार करने वाले लोग बुरे थे।"

35

याकूब बेतेल में

1 परमेश्वर ने याकूब से कहा, "बेतेल नगर को जाओ, वहाँ बस
जाओ और वहाँ उपासना की वेदी बनाओ। परमेश्वर को याद करो,
वह जो तुम्हारे सामने प्रकट हुआ था जब तुम अपने भाई एसाव से
बच कर भाग रहे थे। उस परमेश्वर की उपासना के लिए वहाँ वेदी
बनाओ।"
2 इसलिए याकूब ने अपने परिवार और अपने सभी सेवकों से
कहा, "लकड़ी और धातु के बने जो झूठे देवता तुम लोगों के पास
हैं उन्हें नष्ट कर दी। अपने को पवित्र करो। साफ कपड़े पहनो।
3 हम लोग इस जगह छोड़ेंगे और बेतेल को जाएँगे। उस जगह में
अपने परमेश्वर के लिए एक वेदी बनायेंगे। यह वही परमेश्वर हैं जो
मेरे कष्टों के समय में मेरी सहायता की और जहाँ कहीं मैं गया वह
मेरे साथ रहा।"
4 इसलिए लोगों के पास जो झूठे देवता थे, उन सभी को उन्होंने
याकूब को दे दिया। उन्होंने अपो कानों में पहनी दुई सभी बालियों

को भी याकूब को दे दिया। याकूब ने शकेम नाम के शहर के समीप
एक सिन्दूर के पेड़ के नीचे इन सभी चीज़ों को गाड़ दिया।

5 याकूब और उसके पुत्रों ने वह जगह छोड़ दी। उस क्षेत्र के
लोग उनका पीछा करना चाहते थे और उन्हें मार डालना चाहते थे।
किन्तु वे बहुत डर गए और उन्होंने याकूब का पीछा नहीं किया।
6 इसलिए याकूब और उसके लोग लूज पहुँचे। अब लूज को बेतेल
कहते हैं। यह कनान प्रदेश में है। 7 याकूब ने वहाँ एक वेदी बनायी।
याकूब ने उस जगह का नाम "एलबेतेल" रखा। याकूब ने इस नाम
को इसलिए चुना कि जब वह अपने भाई के यहाँ से भाग रहा था,
तब पहली बार परमेश्वर यहीं प्रकट हुआ था।

8 रिबका की धाय दबोरा यहाँ मरी थी, उन्होंने बेतेल में सिन्दूर
के पेड़ के नीचे उसे दफनाया। उन्होंने उस स्थान का नाम अल्लोन
बक्कूत रखा।

याकूब का नया नाम

9 जब याकूब पद्दनराम से लौट तब परमेश्वर फिर उसके सामने
प्रकट हुआ। परमेश्वर ने याकूब को आशीर्वाद दिया। 10 परमेश्वर
ने याकूब से कहा, "तुम्हारा नाम याकूब है। किन्तु मैं उस नाम
को बदलूँगा। अब तुम याकूब नहीं कहलाओगे। तुम्हारा नया नाम
इस्राएल होगा।" इसलिए इसके बाद याकूब का नाम इस्राएल हुआ।

11 परमेश्वर ने उससे कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ और
तुमको मैं यह आशीर्वाद देता हूँ तुम्हारे बहुत बच्चे हों और तुम एक
महान राष्ट्र बन जाओ। तुम ऐसा राष्ट्र बनोगे जिसका सम्मान अन्य
सभी राष्ट्र करेंगे। अन्य राष्ट्र और राजा तुमसे पैदा होंगे। 12 मैंने
इब्राहीम और इसहाक को कुछ विशेष प्रदेश दिए थे। अब वह
प्रदेश मैं तुमको देता हूँ।" 13 तब परमेश्वर ने वह जगह छोड़ दी।
14-15 याकूब ने इस स्थान पर एक विशेष चट्टान खड़ी की। याकूब
ने उस पर दाखरस और तेल चढ़ाकर उस चट्टान को पवित्र बनाया।

वह एक विशेष स्थान था क्योंकि परमेश्वर ने वहाँ याकूब से बात
की थी और याकूब ने उस स्थान का नाम बेतेल रखा।

राहेल जन्म देते समय मरी

16 याकूब और उसके दल ने बेतेल को छोड़ा। एप्राता (बेतलेहेम)
आने से ठीक पहले राहेल अपने बच्चे को जन्म देने लगी। 17 लेकिन
राहेल को इस जन्म से बहुत कष्ट होने लगा। उसे बहुत दर्द हो रहा
था। राहेल की धाय ने उसे देखा और कहा, "राहेल, डरो नहीं। तुम
एक और पुत्र को जन्म दे रही हो।"

18 पुत्र को जन्म देते समय राहेल मर गई। मरने के पहले राहेल ने
बच्चे का नाम बेनोनी रखा। किन्तु याकूब ने उसका नाम बिन्यामीन
रखा।

19 एप्राता को आनेवाली सड़क पर राहेल को दफनाया गया।
(एप्राता बेतलेहेम है) 20 और याकूब ने राहेल के सम्मान में उसकी
कब्र पर एक विशेष चट्टान रखी। वह विशेष चट्टान वहाँ आज तक
है। 21 तब इस्राएल (याकूब) ने अपनी यात्रा जारी रखी। उसने एदेर
स्तम्भ के ठीक दक्षिण में अपना डेरा डाला।

22 इस्राएल वहाँ थोड़े समय ठहरा। जब वह वहाँ था तब रूबेन
इस्राएल की दासी* बिल्हा के साथ सोया। इस्राएल ने इस बारे में
सुना और बहुत क्रुद्ध हुआ।

इस्राएल का परिवार (याकूब)

याकूब (इस्राएल) के बारह पुत्र थे।

23 उसकी पत्नी लिआ से उसके छः पुत्र थे: रूबेन, शिमोन, लेवी,
यहूदा, इस्साकार, जबूलून।
24 उसकी पत्नी राहेल से उसके दो पुत्र थे: यूसुफ, बिन्यामीन।
25 राहेल की दासी बिल्हा से उसके दो पुत्र थे: दान, नप्ताली।

---

* **35:22:** दासी अथवा "उपपत्नी" एक स्त्री जिसका मालिक एक पुरुष था और वह पुरुष उस स्त्री के साथ पत्नी की तरह व्यवहार करता था।

26 और लिआ की दासी जिल्पा से उसके दो पुत्र थे: गाद, आशेर।

ये याकूब (इस्राएल) के पुत्र हैं जो पद्दनराम में पैदा हुए थे।

27 मम्रे के किर्यतर्बा (हेब्रोन) में याकूब अपने पिता इसहाक के
पास गया। यह वही जगह है जहाँ इब्राहीम और इसहाक रह चुके थे।
28 इसहाक एक सौ अस्सी वर्ष का था। 29 इसहाक बहुत वर्षों तक
जीवित रहा। जब वह मरा, वह बहुत बुढ़ा था। उसके पुत्र एसाव
और याकूब ने उसे वहीं दफनाया जहाँ उसका पिता को दफनाया
गया था।

36

एसाव का परिवार

1 एसाव ने कनान देश की पुत्रियों से विवाह किया। यह एसाव
के परिवार की एक सूची है। (जो एदोम भी कहा जाता है।) 2 एसाव
की पत्नियाँ थी: आदा, हित्ती एलीन की पुत्री। ओहोलीबामा हिव्वी
सिबोन की नतिनी और अना की पुत्री। 3 बासमत इश्माएल की पुत्री
और नबायोत की बहन। 4 आदा ने एसाव को एक पुत्र एलीपज
दिया। बासमत को रुएल नाम का पुत्र हुआ। 5 ओहोलीबामा ने
एसाव को तीन पुत्र दिए यूश, यालाम और कोरह ये एसाव के पुत्र
थे। ये कनान प्रदेश में पैदा हुए थे।

6-8 याकूब और एसाव के परिवार अब बहुत बढ़ गये और कनान में इस बड़े परिवार का खान—पान जुटा पाना कठिन हो गया। इसलिए एसाव ने कनान छोड़ दिया और अपने भाई याकूब से दूर दूसरे प्रदेश में चला गया। एसाव अपनी सभी चीज़ों को अपने साथ लाया। कनान में रहते हुए उसने ये चीज़ें प्राप्त की थीं। इसलिए एसाव अपने साथ अपनी पत्नियों, पुत्रों, पुत्रियों सभी सेवकों, पशु और अन्य जानवरों को लाया। एसाव और याकूब के परिवार इतने

बड़े हो रहे थे कि उनका एक स्थान पर रहना कठिन था। वह भूमि दोनों परिवारों के पोषण के लिए काफी बड़ी नहीं थी। उनके पास अत्याधिक पशु थे। एसाव पहाड़ी प्रदेश सेईर की ओर बढ़ा। (एसाव का नाम एदोम भी है।)

9 एसाव एदोम के लोगों का आदि पिता है। सेईर एदोम के पहाड़ी
प्रदेश में रहने वाले एसाव के परिवार के ये नाम हैं।

10 एसाव के पुत्र थे, एलीपज, आदा और एसाव का पुत्र। रुएल
बासमत और एसाव का पुत्र।
11 एलीपज के पाँच पुत्र थे: तेमान, ओमार, सपो, गाताम, कनज।
12 एलीपज की एक तिम्ना नामक दासी भी थी। लिम्ना और
एलीपज ने अमालेक को जन्म दिया।
13 रुएल के चार पुत्र थे: नहत, जेरह, शम्मा मिज्जा।
वे एसाव की पत्नी बासमत से उसके पौत्र हैं।
14 एसाव की तीसरी पत्नी अना की पुत्री ओहोलीबामा थी। (अना
सिबोन का पुत्र था।) एसाव और ओहोलीबमा के पुत्र थे: यूश,
यालाम, कोरह।

15 एसाव से चलने वाले वंश ये ही हैं।
एसाव का पहला पुत्र एलीपज था। एलीपज से आए: तेमान,
ओमार, सपो, कनज, 16 कोरह, गाताम, अमालेक।
ये सभी परिवार एसाव की पत्नी आदा से आए।
17 एसाव का पुत्र रुएल इन परिवारों का आदि पिता था: नहत,
जेरह, शम्मा, मिज्जा।
ये सभी परिवार एसाव की पत्नी बासमत से आए।
18 अना की पुत्री एसाव की पत्नी ओहोलीबामा ने यूश, यालाम
और कोरह को जन्म दिया। ये तीनों अपने—अपने परिवारों के
पिता थे।
19 ये सभी परिवार एसाव से चले।

20 एसाव के पहले एदोम में सेईर नामक एक होरी व्यक्ति रहता था।
सेईर के पुत्र ये है:

लोतान, शोबाल, शिबोन, अना 21 दीशोन, एसेर, दिशान। ये पुत्र
अपने परिवारों के मुखिया थे।

22 लोतान, होरी, हेमाम का पिता था। (तिम्ना लोतान की बहन थी।)

23 शोबल, आल्वान, मानहत एबल शपो, ओनाम का पिता था।

24 शिबोन के दो पुत्र थे: अथ्या, अना, (अना वह व्यक्ति है जिसने अपने पिता के गधों की देखभाल करते समय पहाड़ों में गर्म पानी का सोता ढूँढा।)

25 अना, दीशोन और ओहोलीबामा का पिता था।

26 दीशोन के चार पुत्र थे: हेमदान, एश्बान, यित्रान, करान।

27 एसेर के तीन पुत्र थे: बिल्हान, जावान, अकान।

28 दीशान के दो पुत्र थे: ऊस और अरान।

29 ये होरी परिवारों के मुखियाओं के नाम है। लोतान, शोबाल,
शिबोन, अना। 30 दिशोन, एसेर, दीशोन। ये व्यक्ति उन परिवारों
के मुखिया थे जो सेईर (एदोम) प्रदेश में रहते थे।

31 उस समय एदोम में कोई राजा थे। इस्राएल में राजाओं के होने के बहुत पहले ह एदोम में राजा थे।

32 बोर का पुत्र बेला एदोम में शासन करने वाला राजा था। वह दिन्हावा नगर पर शासन करता था।

33 जब बेला मरा तो योबाब राजा हुआ। योबाब बोस्रा से जेरह का पुत्र था।

34 जब योबाब मरा, हूशाम ने शासन किया। हूशाम तेमानी लोगों के देश का था।

35 जब हूशाम मरा, हदद ने उस क्षेत्र पर शासन किया। हदद बदद का पुत्र था। (हदद वह व्यक्ति था जिसने मिद्यानी लोगों को मोआब देश में हराया था।) हदद अबीत नगर का था।

36 जब हदद मरा, सम्ला ने उस प्रदेश पर शासन किया। सम्ला

मस्रेका था।

37 जब सम्ला मरा, शाऊल ने उस क्षेत्र पर शासन किया। शाऊल फरात नदी के किनारे रहोबोत का था।

38 जब शाऊल मरा, बाल्हानान ने उस देश पर शासन किया। बाल्हानान अकबोर का पुत्र था।

39 जब बाल्हानान मरा, हदर ने उस देश पर शासन किया। हदर पाऊ नगर का था। मत्रेद की पुत्री हदर की पत्नी का नाम महेतबेल था। (मत्रेद का पिता मेजाहब था।)

40-43 एदोमी परिवारों:

तिम्ना, अल्बा, यतेत, ओहोलीबामा, एला, पीपोन, कनज, तेमान, मिबसार, मग्दीएल और ईराम आदि का पिता एसाब था। हर एक परिवार एक ऐसे प्रदेश में रहता था जिसका नाम वही था जो उनका पारिवारिक नाम था।

37

स्वप्नदृष्टा यूसुफ

1 याकूब ठहर गया और कनान प्रदेश में रहने लगा। यह वही प्रदेश
है जहाँ उसका पिता आकर बस गया था। 2 याकूब के परिवार की
यही कथा है। यूसुफ एक सत्रह वर्ष का युवक था। उसका काम
भेड़ बकरियों कि देखभाल करना था। यूसुफ यह काम अपने भाईयों
यानि कि बिल्हा और जिल्पा के पुत्रों के साथ करता था। (बिल्हा
और जिल्पा उस के पिता की पत्नियाँ थी) 3 यूसुफ अपने पिता को
अपने भाईयों की बुरी बातें बताया करता था। यूसुफ उस समय
उत्पन्न हुआ जब उसका पिता इस्राएल बहुत बढ़ा था। इसलिए
इस्राएल यूसुफ को अपने अन्य पुत्रों से अधिक प्यार करता था।
याकूब ने अपने पुत्र को एक विशेष अंगरखा दिया। यह अंगरखा
लम्बा और बहुत सुन्दर था। 4 यूसुफ के भाइयों ने देखा कि उनका
पिता उनकी अपेक्षा यूसुफ को अधिक प्यार करता है। वे इसी

कारण अपने भाई से घृणा करते थे। वे यूसुफ से अच्छी तरह बात
नहीं करते थे।
5 एक बार यूसुफ ने एक विशेष सपना देखा। बाद में यूसुफ ने
अपने इस सपने के बारे में अपने भाईयों को बताया। इसके बाद
उसके भाई पहले से भी अधिक उससे घृणा करने लगे।
6 यूसुफ ने कहा, "मैंने एक सपना देखा। 7 हम सभी खेत में काम
कर रहे थे। हम लोग गेहूँ को एक साथ गट्ठे बाँध रहे थे। मेरा गट्ठा
खड़ा हुआ और तुम लोगों के गट्ठों ने मेरे गट्ठें के चारों ओर घेरा
बनाया। तब तुम्हारे सभी गट्ठों ने मेरे गट्ठे को झुककर प्रणाम किया।"
8 उसके भाईयों ने कहा, "क्या, तुम सोचते हो कि इसका अर्थ
है कि तुम राजा बनोगे और हम लोगों पर शासन करोगे?" उसके
भाईयों ने यूसुफ से अब और अधिक घृणा करनी आरम्भ की क्योंकि
उसने उनके बारे में सपना देखा था। 9 तब यूसुफ ने दूसरा सपना
देखा। यूसुफ ने अपने भाईयों से इस सपने के बारे में बताया। यूसुफ
ने कहा, "मैंने दूसरा सपना देखा है। मैंने सूरज, चाँद और ग्यारह
नक्षत्रों को अपने को प्रणाम करते देखा।"
10 यूसुफ ने अपने पिता को भी इस सपने के बारे में बताया।
किन्तु उसके पिता ने इसकी आलोचना की। उसके पिता ने कहा,
"यह किस प्रकार का सपना है? क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारी
माँ, तुम्हारे भाई और हम तुमको प्रणाम करेंगे?" 11 यूसुफ के भाई
उससे लगातार इर्षा करते रहे। किन्तु यूसुफ के पिता ने इन सभी
बातों के बारे में बहुत गहराई से विचार किया और सोचा कि उनका
अर्थ क्या होगा?
12 एक दिन यूसुफ के भाई अपने पिता की भेड़ों की देखभाल के
लिए शकेम गए। 13 याकूब ने यूसुफ से कहा, "शकेम जाओ। तुम्हारे
भाई मेरी भेड़ों के साथ वहाँ हैं।" यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं जाऊँगा।"
14 यूसुफ के पिता ने कहा, "जाओ और देखो कि तुम्हारे भाई
सुरक्षित है। लौटकर आओ और बताओ कि क्या मेरी भेड़ें ठीक

है?" इस प्रकार यूसुफ के पिता ने उसे हेब्रोन की घाटी से शकेम को भेजा।

15 शकेम में यूसुफ खो गया। एक व्यक्ति ने उसे खेतों में भटकते हुए पया। उस व्यक्ति ने कहा, "तुम क्या खोज रहे हो?"

16 यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं अपने भाईयों को खोज रहा हूँ। क्या तुम बता सकते हो कि वे अपनी भेड़ों के साथ कहाँ हैं?"

17 व्यक्ति ने उत्तर दिया, "वे पहले ही चले गए है। मैंने उन्हें कहते हुए सुना कि वे दोतान को जा रहे हैं।" इसलिए यूसुफ अपने भाईयों के पीछे गया और उसने उन्हें दोतान में पाया।

यूसुफ दासता के लिए बेचा गया

18 यूसुफ के भाईयों ने बहुत दूर से उसे आते देखा। उन्होंने उसे
मार डालने की योजना बनाने का निश्चय किया। 19 भाईयों ने एक
दूसरे से कहा, "यह सपना देखने वाला यूसुफ आ रहा है। 20 मौका
मिले हम लोग उसे मार डाले हम उसका शरीर सूखे कुओं में से किसी एक में फेंक सकते हैं। हम अपने पिता से कह सकते हैं कि एक जंगली जानवर ने उसे मार डाला। तब हम लोग उसे दिखाएँगे कि उसके सपने व्यर्थ हैं।"

21 किन्तु रूबेन यूसुफ को बचाना चाहता था। रूबेन ने कहा,
"हम लोग उसे मारे नहीं। 22 हम लोग उसे चोट पहुँचाए बिना एक
कुएँ में डाल सकते हैं।" रूबेन ने यूसुफ को बचाने और उसके पिता
के साथ भेजने की योजना बनाई। 23 यूसुफ अपने भाईयों के पास
आया। उन्होंने उस पर आक्रमण किया और उसके लम्बे सुन्दर
अंगरखा को फाड़ डाला। 24 तब उन्होंने उसे खाली सूखे कुएँ में
फेंक दिया।

25 यूसुफ कुएँ में था, उसके भाई भोजन करने बैठे। तब उन्होंने
नज़र उठाई और व्यापारियों का एक दल को देखा जो गिलाद से
मिस्र की यात्रा पर थे। उनके ऊँट कई प्रकार के मसाले और धन
ले जा रहे थे। 26 इसलिए यहूदा ने अपने भाईयों से कहा, अगर

हम लोग अपने भाई को मार देंगे और उसकी मृत्यु को छिपाएँगे
तो उससे हमें क्या लाभ होगा? 27 हम लोगों को अधिक लाभ तब
होगा जब हम उसे इन व्यापारियों के हाथ बेच देंगे। अन्य भाई मान
गए। 28 जब मिद्यानी व्यापारी पास आए, भाईयों ने यूसुफ को कुएँ
से बाहर निकाला। उन्होंने बीस चाँदी के टुकड़ों में उसे व्यापारियों
को बेच दिया। व्यापारी उसे मिस्र ले गए।

29 इस पूरे समय रूबेन भाईयों के साथ वहाँ नहीं था। वह नहीं
जानता था कि उन्होंने यूसुफ को बेच दिया था। जब रूबेन कुएँ
पर लौटकर आया तो उसने देखा कि यूसुफ वहाँ नहीं है। रूबेन
बहुत अधिक दुःखी हुआ। उसने अपने कपड़ों को फाड़ा। 30 रूबेन
भाईयों के पास गया और उसने उनसे कहा, "लड़का कुएँ पर नहीं
है। मैं क्या करूँ?" 31 भाईयों ने एक बकरी को मारा और उसके
खून को यूसुफ के सुन्दर अंगरखे पर डाला। 32 तब भाईयों ने उस
अंगरखे को अपने पिता को दिखाया और भाईयों ने कहा, "हमे यह
अंगरखा मिला है, क्या यह यूसुफ का अंगरखा है?"

33 पिता ने अंगरखे को देखा और पहचाना कि यह यूसुफ का
है। पिता ने कहा, "हाँ, यह उसी का है। संभव है उसे किसी जंगली
जानवर ने मार डाला हो। मेरे पुत्र यूसुफ को कोई जंगली जानवर
खा गया।" 34 याकूब अपने पुत्र के लिए इतना दुःखी हुआ कि उसने
अपने कपड़े फाड़ डाले। तब याकूब ने विशेष वस्त्र पहने जो उसके
शोक के प्रतीक थे। याकूब लम्बे समय तक अपने पुत्र के शोक
में पड़ा रहा। 35 याकूब के सभी पुत्रों, पुत्रियों ने उसे धीरज बँधाने
का प्रयत्न किया। किन्तु याकूब कभी धीरज न धर सका। याकूब
ने कहा, "मैं मरने के दिन तक अपने पुत्र यूसुफ के शोक में डूबा
रहूँगा।"

36 उन मिद्यानी व्यापारियों ने जिन्होंने यूसुफ को खरीदा था, बाद
में उसे मिस्र में बेच दिया। उन्होंने फिरौन के अंगरक्षकों के सेनापति
पोतीपर के हाथ उसे बेचा।

38

यहूदा और तामार

1 उन्हीं दिनों यहूदा ने अपने भाईयों को छोड़ दिया और हीरा
नामक व्यक्ति के साथ रहने चला गया। हीरा अदुल्लाम नगर का था।
2 यहूदा एक कनानी स्त्री से वहाँ मिला और उसने उससे विवाह कर
लिया। स्त्री के पिता का नाम शूआ था। 3 कनानी स्त्री ने एक पुत्र
को जन्म दिया। उन्होंने उसका नाम एर रखा। 4 बाद में उसने दूसरे
पुत्र को जन्म दिया। उन्होंने लड़के का नाम ओनान रखा। 5 बाद में
उसे अन्य पुत्र शेला नाम का हुआ। यहूदा तीसरे बच्चे के जन्म के
समय कजीब में रहता था।

6 यहूदा ने अपने पुत्र एर के लिए पत्नी के रूप में एक स्त्री को
चुना। स्त्री का नाम तामार था। 7 किन्तु एर ने बहुत सी बुरी बातें
की। यहोवा उससे प्रसन्न नहीं था। इसलिए यहोवा ने उसे मार डाला।
8 तब यहूद ने एर के भाई ओनान से कहा, "जाओ और मृत भाई की
पत्नी के साथ सोओ* तुम उसके पति के समान बनो। अगर बच्चे
होंगे तो वे तुम्हारे भाई एर के होंगे।"

9 ओनान जानता था कि इस जोड़े से पैदा बच्चे उसके नहीं होंगे।
ओनान ने तामार के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। किन्तु उसने
उसे अपना गर्भधारण करने नहीं दिया। 10 इससे यहोवा क्रुद्ध हुआ।
इसलिए यहोवा ने ओनान को भी मार डाला। 11 तब यहूदा ने अपनी
पुत्रबधू तामार से कहा, "अपने पिता के घर लौट जाओ। वहीं रहो
और तब तक विवाह न करो जब तक मेरा छोटा पुत्र शेला बड़ा
न हो जाए।" यहूदा को डर था कि शेला भी अपने भाईयों की तरह
मार डाला जाएगा। तामार अपने पिता के घर लौट गई।

---

* **38:8:** जाओं ... सोओ इस्राएल में यह रिवाज था कि यदि कोई व्यक्ति बिना सन्तान के मर जाता था तो विधवा को भाईयों में से कोई एक रख लेता था। यदि कोई बच्चा पैदा होता था तो वह मृत व्यक्ति का बच्चा समझा जाता था।

12 बाद में शुआ की पुत्री यहूदा की पत्नी मर गई। यहूदा अपने
शोक के समय के बाद अदुल्लाम के अपने मित्र हीरा के साथ तिम्नाथ
गया। यहूदा अपनी भेड़ों का ऊन काटने तिम्नाथ गया। 13 तामार को
यह मालुम हुआ कि उसके ससुर यहूदा अपनी भेड़ों का ऊन काटने
तिम्नाथ जा रहा है। 14 तामार सदा ऐसे वस्त्र पहनती थी जिससे
मालूम हो कि वह विधवा है। इसलिए उसने कुछ अन्य वस्त्र पहने
और मुँह को पर्दे में ढक लिया। तब वह तिम्नाथ नगर के पास एनैम
को जाने वाली सड़क के किनारे बैठ गई। तामार जानती थी कि
यहूदा का छोटा पुत्र शेला अब बड़ा हो गया है। लेकिन यहूदा उससे
उसके विवाह की कोई योजना नहीं बना रहा था।

15 यहूदा ने उसी सड़क से यात्रा की। उसने उसे देखा, किन्तु
सोचा कि वह वेश्या है। (उसका मुख वेश्या की तरह ढका हुआ
था।) 16 इसलिए यहूदा उसके पास गया और बोला, "मुझे अपने
साथ शारीरिक सम्बन्ध करने दो।" (यहूदा नहीं जानता था कि वह
उसकी पुत्र वधू तामार है।)

तामार बोली, "तुम मुझे कितना दोगे?"

17 यहूदा ने उत्तर दिया, "मैं अपनी रेवड़ से तुम्हें एक नयी बकरी
भेजूँगा।"

उसने उत्तर दिया, "मैं इसे स्वीकार करती हूँ किन्तु पहले तुम मुझे
कुछ रखने को दो जब तक तुम बकरी नहीं भेजते।"

18 यहूदा ने पूछा, "मैं बकरी भेजूँगा इसके प्रमाण के लिए तुम मुझ
से क्या लेना चाहोगी?"

तामार ने उत्तर दिया, "मुझे विशेष मुहर और इसकी रस्सी,† जो
तुम अपने पत्रों के लिए प्रयोग करते हो, दो और मुझे अपने टहलने
की छड़ी दो।" यहूदा ने ये चीजें उसे दे दी। तब यहूदा और तामार ने

† **38:18:** विशेष … रस्सी मुहर रबर की मुहर की तरह प्रयुक्त होती थी। लोग वाचा लिखते थे, उसकी तय करते थे, उसे रस्सी से बाँधते थे, रस्सी पर मोम या मिट्टी लगाते थे और हस्ताक्षर के रुप में मुहर लगाते थे।

शारीरिक सम्बन्ध किया और तामार गर्भवती हो गई। 19 तामार घर
गई और मुख को ढकने वाले पर्दे को हटा दिया। तब उसने फिर
अपने को विधवा बताने वाले विशेष वस्त्र पहन लिए।

20 यहूदा ने अपने मित्र हीरा को तामार के घर उसको वचन दी
हुई बकरी देने के लिए भेजा। यहूदा ने हीरा से विशेष मुहर तथा
टहलने की छड़ी भी उससे लेने के लिए कहा। किन्तु हीरा उसका
पता न लगा सका। 21 हीरा ने एनैम नगर के कुछ लोगों से पूछा,
"सड़क के किनारे जो वेश्या थी वह कहाँ है?"

लोगों ने कहा, "यहाँ कभी कोई वेश्या नहीं थी।"

22 इसलिए यहूदा का मित्र यहूदा के पास लौट गया और उससे
कहा, "मैं उस स्त्री का पता नहीं लगा सका। जो लोग उस स्थान पर
रहते हैं उन्होंने बताया कि वहाँ कभी कोई वेश्या नहीं थी।"

23 इसलिए यहूदा ने कहा, "उसे वे चीजें रखने दो। मैं नहीं चाहता
कि लोग हम पर हँसे। मैंने उसे बकरी देनी चाही, किन्तु हम उसका
पता नहीं लगा सके वही पर्याप्त है।"

तामार गर्भवती है

24 लगभग तीन महीने बाद किसी ने यहूदा से कहा, "तुम्हारी
पुत्रवधु तामार ने वेश्या की तरह पाप किया है और अब वह गर्भवती
है।"

तब यहूदा ने कहा, "उसे बाहर निकालो और मार डालो। उसके
शरीर को जला दो।"

25 उसके आदमी तामार को मारने गए। किन्तु तामार ने अपने
ससुर के पास सन्देश भेजा। तामार ने कहा, "जिस पुरुष ने मुझे
गर्भवती किया है उसी की ये चीजें हैं। तब उसने उसे विशेष मुहर
बाज़ूबन्द और टहलने की छड़ी दिखाई। इन चीजों को देखो। ये
किसकी है? यह किस की विशेष मुहर, बाज़ूबन्द और रस्सी है?
किसकी यह टहलने की छड़ी है?"

26 यहूदा ने उन चीजों को पहचाना और कहा, “यह ठीक कहती
है। मैं गलती पर था। मैंने अपने वचन के अनुसार अपने पुत्र शेला
को इसे नहीं दिया।” और यहूदा उसके साथ फिर नहीं सोया।
27 तामार के बच्चा देने का समय आया और उन्होंने देखा कि वह
जुड़वे बच्चों को जन्म देगी। 28 जिस समय वह जन्म दे रही थी एक
बच्चे ने बाहर हाथ निकाला। धाय ने हाथ पर लाल धागा बाँधा और
कहा, “यह बच्चा पहले पैदा हुआ।” 29 लेकिन उस बच्चे ने अपना
हाथ वापस भीतर खींच लिया। तब दूसरा बच्चा पहले पैदा हुआ।
तब धाय ने कहा, “तुम ही पहले बाहर निकलने में समर्थ हुए।”
इसलिए उन्होंने उसका नाम पेरेस रखा। (इस नाम का अर्थ “खुव
पड़ना” या “फट पड़ना” है।) 30 इसके बाद दूसरा बच्चा उत्पन्न हुआ।
यह बच्चा हाथ पर लाल धागा था। उन्होंने उसका नाम जेरह रखा।

39

यूसुफ मिस्री पोतीपर को बेचा गया

1 व्यापारी जिसने यूसुफ को खरीदा वह उसे मिस्र ले गए। उन्होंने
फ़िरौन के अंगरक्षक के नायक के हाथ उसे बेचा। 2 किन्तु यहोवा ने
यूसुफ को सहायता की। यूसुफ एक सफल व्यक्ति बन गया। यूसुफ
अपने मिस्री स्वामी पोतीपर के घर में रहा।
3 पोतीपर ने देखा कि यहोवा यूसुफ के साथ है। पोतीपर ने यह भी
देखा कि यहोवा जो कुछ यूसुफ करता है, उसमें उसे सफल बनाने
में सहायक है। 4 इसलिए पोतीपर यूसुफ को पाकर बहुत प्रसन्न
था। पोतीपर ने उसे अपने लिए काम करने तथा घर के प्रबन्ध में
सहायता करने में लगाया। पोतीपर की अपनी हर एक चीज़ का
यूसुफ अधिकारी था। 5 तब यूसुफ घर का अधिकारी बना दिया
गया तब यहोवा ने उस घर और पोतीपर की हर एक चीज़ को
आशीर्वाद दिया। 6 यहोवा ने यह यूसुफ के कारण किया और यहोवा
ने पोतीपर के खेतों में उगने वाली हर चीज़ की ज़िम्मेदारी यूसुफ को

दी। पोतीपर किसी चीज़ की चिन्ता नहीं करता था वह जो भोजन करता था एक मात्र उसकी उसे चिन्ता थी।

यूसुफ पोतीपर की पत्नी को मना करता है

यूसुफ बहुत सुन्दर और सुरूप था। 7 कुछ समय बाद यूसुफ के
मालिक की पत्नी यूसुफ से प्रेम करने लगी। एक दिन उसने कहा,
“मेरे साथ सोओ।”

8 किन्तु यूसुफ ने मना कर दिया। उसने कहा, “मेरा मालिक घर
की अपनी हर चीज़ के लिए मुझ पर विश्वास करता है। उसने यहाँ
की हर एक चीज़ की ज़िम्मेदारी मुझे दी है। 9 मेरे मालिक ने अपने
घर में मुझे लगभग अपने बराबर मान दिया है। किन्तु मुझे उसकी
पत्नी के साथ नहीं सोना चाहिए। यह अनुचित है। यह परमेश्वर के
विरुद्ध पाप है।”

10 वह स्त्री हर दिन यूसुफ से बात करती थी किन्तु यूसुफ ने
उसके साथ सोने से मना कर दिया। 11 एक दिन यूसुफ अपना काम
करने घर में गया। उस समय वह घर में अकेला व्यक्ति था। 12 उसके
मालिक की पत्नी ने उसका अंगरखा पकड़ा लिया और उससे कहा,
“आओ और मेरे साथ सोओ।” किन्तु यूसुफ घर से बाहर भाग गया
और उसने अपना अंगरखा उसके हाथ में छोड़ दिया।

13 स्त्री ने देखा कि यूसुफ ने अपना अंगरखा उसके हाथों में छोड़
दिया है और उसने जो कुछ हुआ उसके बारे में झूठ बोलने में निश्चय
किया। वह बाहर दौड़ी। 14 और उसने बाहर के लोगों को पुकारा।
उसने कहा, “देखो, यह हिब्रू दास हम लोगों का उपहास करने यहाँ
आया था। वह अन्दर आया और मेरे साथ सोने की कोशिश की।
किन्तु मैं ज़ोर से चिल्ला पड़ी। 15 मेरी चिल्लाहट ने उसे डरा दिया और
वह भाग गया। किन्तु वह अपना अंगरखा मेरे पास छोड़ गया।”
16 इसलिए उसने यूसफ के मालिक अपने पति के घर लौटने के
समय तक उसके अंगरखे को अपने पास रखा। 17 और उसने अपने
पति को वही कहानी सुनाई। उसने कहा, “जिस हिब्रू दास को तुम

यहाँ लाए उसने मुझ पर हमला करने का प्रयास किया। 18 किन्तु
जब वह मेरे पास आया तो मैं चिल्लाई। वह भाग गया, किन्तु अपना
अंगरखा छोड़ गया।”

19 यूसुफ के मालिक ने जो उसकी पत्नी ने कहा, उसे सुना और
वह बहुत क्रुद्ध हुआ। 20 वहाँ एक कारागार था जिसमें राजा के शत्रु
रखे जाते थे। इसलिए पोतीपर ने यूसुफ को उसी बंदी खाने में डाल
दिया और यूसुफ वहाँ पड़ा रहा।

यूसुफ कारागार में

21 किन्तु यहोवा यूसुफ के साथ था। यहोवा उस पर कृपा करता
रहा। 22 कुछ समय बाद कारागार के रक्षकों का मुखिया यूसुफ से
स्नेह करने लगा। रक्षकों के मुखिया ने सभी कैदियों का अधिकारी
यूसुफ को बनाया। यूसुफ उनका मुखिया था, किन्तु काम वही करता
था जो वे करते थे। 23 रक्षकों का अधिकारी कारागार को सभी
चीजों के लिए यूसुफ पर विश्वास करता था। यह इसलिए हुआ कि
यहोवा यूसुफ के साथ था। यहोवा यूसुफ को, वह जो कुछ करता
था, सफल करने में सहायता करता था।

40

यूसुफ दो सपनों की व्याख्या करता है

1 बाद में फ़िरौन के दो नौकरों ने फ़िरौन का कुछ नुकसान किया।
इन नौकरों में से एक रोटी पकाने वाला तथा दूसरा फिरौन को
दाखमधु देने वाले नौकर पर क्रुद्ध हुआ। 2-3 इसलिए फ़िरौन ने उसी
कारागार में उन्हें भेजा जिसमें यूसुफ था। फ़िरौन के अंगरक्षकों
का नायक पोतीपर उस कारागार का अधिकारी था। 4 नायक ने
दोनों कैदियों को यूसुफ की देखरेख में रखा। दोनों कुछ समय तक
कारागार में रहे। 5 एक रात दोनों कैदियों ने एक सपना देखा। (दोनों
कैदी मिस्र के राजा के राजा के रोटी पकानेवाले तथा दाखमधु देने
वाले नौकर थे।) हर एक कैदी के अपने—अपने सपने थे और हर

एक सपने का अपना अलग अलग अर्थ था। 6 यूसुफ अगली सुबह
उनके पास गया। यूसुफ ने देखा कि दोनों व्यक्ति परेशान थे। 7 यूसुफ
ने पूछा, “आज तुम लोग इतने परेशान क्यों दिखाई पड़ते हो?”
8 दोनों व्यक्तियों ने उत्तर दिया, “पिछली रात हम लोगों ने सपना
देखा, किन्तु हम लोग नहीं समझते कि सपने का क्या अर्थ है? कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो सपनों की व्याख्या करे या हम लोगों को स्पष्ट बताए।”

यूसुफ ने उनसे कहा, “केवल परमेश्वर ही ऐसा है जो सपने को समझता और उसकी व्याख्या करता है। इसलिए मैं निवेदन करता हूँ कि अपने सपने मुझे बताओ।”

दाखमधु देने वाले नौकर का सपना

9 इसलिए दाखमधु देने वाले नौकर ने यूसुफ को अपना सपना
बताया। नौकर ने कहा, “मैंने सपने में अँगूर की बेल देखी। 10 उस
अंगूर की बेल की तीन शाखाएँ थी। मैंने शाखाओं में फूल आते और
उन्हें अँगूर बनते देखा। 11 मैं फ़िरौन का प्याला लिए था। इसलिए
मैंने अंगूरों को लिया और प्याले में रस निचोड़ा। तब मैंने प्याला फ़िरौन को दिया।”
12 तब यूसुफ ने कहा, “मैं तुमको सपने की व्याख्या समझाऊँगा।
तीन शाखाओं का अर्थ तीन दिन है। 13 तीन दिन बीतने के पहले
फ़िरौन तुमको क्षमा करेगा और तुम्हें तुम्हारे काम पर लौटने देगा।
तुम फ़िरौन के लिए वही काम करोगे जो पहले करते थे। 14 किन्तु
जब तुम स्वतन्त्र हो जाओगे तो मुझे याद रखना। मेरी सहायता
करना। फ़िरौन से मेरे बारे में कहना जिससे मैं इस कारागार से
बाहर हो सकूँ। 15 मुझे अपने घर से लाया गया था जो मेरे अपने
लोगों हिब्रूओं का देश है। मैंने कोई अपराध नहीं किया है। इसलिए मुझे कारागार में नहीं होना चाहिए।”

रोटी बनाने वाले का सपना

16 रोटी बनाने वाले ने देखा कि दूसरे नौकर का सपना अच्छा था।
इसलिए रोटी बनाने वाले ने यूसुफ से कहा, “मैंने भी सपना देखा।
मैंने देखा कि मेरे सिर पर तीन रोटियों की टोकरियाँ है। 17 सबसे
ऊपर की टोकरी में हर प्रकार के पके भोजन थे। यह भोजन राजा
के लिए था। किन्तु इस भोजन को चिड़ियाँ खा रही थीं।”
18 यूसुफ ने उत्तर दिया, “मैं तुम्हें बताऊँगा कि सपने का क्या
अर्थ है? तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन है। 19 तीन दिन बीतने के
पहले राजा तुमको इस जेल से बाहर निकालेगा। तब राजा तुम्हारा
सिर काट डालेगा। वह तुम्हारे शरीर को एक खम्भे पर लटकाएगा
और चिड़ियाँ तुम्हारे शरीर को खाएँगी।”

यूसुफ को भुला दिया गया

20 तीन दिन बाद फ़िरौन का जन्म दिन था। फ़िरौन ने अपने सभी
नौकरों को दावत दी। दावत के समय फ़िरौन ने दाखमधु देने वाले
तथा रोटी पकाने वाले नौकरों को कारागार से बाहर आने दिया।
21 फ़िरौन ने दाखमधु देने वाले नौकर को स्वतन्त्र कर दिया। फ़िरौन
ने उसे नौकरी पर लौटा लिया और दाखमधु देने वाले नौकर ने
फ़िरौन के हाथ में एक दाखमधु का प्याला दिया। 22 लेकिन फ़िरौन
ने रोटी बनाने वाले को मार डाला। सभी बातें जैसे यूसुफ ने होनी
बताई थी वैसे ही हुई। 23 किन्तु दाखमधु देने वाले नौकर को यूसुफ
की सहायता करना याद नहीं रहा। उसने यूसुफ के बारे में फ़िरौन
से कुछ नहीं कहा। दाखमधु देने वाला नौकर यूसुफ के बारे में भूल
गया।

41

फिरौन के सपने

1 दो वर्ष बाद फ़िरौन ने सपना देखा। फिरौन ने सपने में देखा कि
वह नील नदी के किनारे खड़ा है। 2 तब फ़िरौन ने सपने में नदी से
सात गायों को बाहर आते देखा। गायें मोटी और सुन्दर थीं। गायें
वहाँ खड़ी थी और घास चर रही थीं। 3 तब सात अन्य गायें नदी से

बाहर आईं, और नदी के किनारे मोटी गायों के पास खड़ी हो गई।
किन्तु ये गायें दुबली और भद्दी थी। 4 ये सातों दुबली गायें, सुन्दर
मोटी सात गायों को खा गईं। तब फ़िरौन जाग उठा।
5 फ़िरौन फिर सोया और दूसरी बार सपना देखा। उसने सपने में
अनाज की सात बालें* एक अनाज के पीछे उगी हुई देखी। अनाज
की बालें मोटी और अच्छी थीं। 6 तब उसने उसी अनाज के पीछे
सात अन्न बालें उगी देखीं। अनाज की ये बालें पतली और गर्म हवा
से नष्ट हो गई थीं। 7 तब सात पतली बालों ने सात मोटी ओर अच्छी
वालों ने सात मोटी और अच्छी वालों को खा लिया। फ़िरौन फिर
जाग उठा और उसने समझा कि यह केवल सपना ही है। 8 अगली
सुबह फ़िरौन इन सपनों के बारे में परेशान था। इसलिए उसने मिस्र
के सभी जादूगरों को और सभी गुणी लोगों को बुलाया। फ़िरौन ने
उनको सपना बताया। किन्तु उन लोगों में से कोई भी सपने को स्पष्ट
या उसकी व्याख्या न कर सका।

नौकर फ़िरौन को यूसुफ के बारे में बताता है

9 तब दाखमधु देने वाले नौकर को यूसुफ याद आ गया। नौकर
ने फ़िरौन से कहा, "मेरे साथ जो कुछ घटा वह मुझे याद आ रहा है।
10 आप मुझ पर और एक दूसरे नौकर पर क्रुद्ध थे और आपने हम
दोनों को कारागार में डाल दिया था। 11 कारागार में एक ही रात हम
दोनों ने सपने देखे। हर सपना अलग अर्थ रखता था। 12 एक हिब्रू
युवक हम लोगों के साथ कारागार में था। वह अंगरक्षको के नायक
का नौकर था। हम लोगों ने अपने सपने उसको बताए और उसने
सपने को व्याख्या हम लोगों को समझाई। उसने हर सपने का अर्थ
हम लोगों को बताया। 13 जो अर्थ उसने बताए वे ठीक निकले।
उसने बताया कि मैं स्वतन्त्र होऊँगा और अपनी पुरानी नौकरी फिर
पाऊँगा और यही हुआ। उसने कहा कि रोटी पकाने वाला मरेगा
और वही हुआ।"

---

* **41:5:** बालें "अन्नों के अग्र भाग।"

यूसुफ सपनें की व्याख्या करने के लिए बुलाया गया

14 इसलिए फ़िरौन ने यूसुफ को कारागार से बुलाया। रक्षक जल्दी
से यूसुफ को कारागार से बाहर लाए। यूसुफ ने बाल कटाए और
साफ कपड़े पहने। तब वह गया और फ़िरौन के सामने खड़ा हुआ।
15 तब फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, "मैंने एक सपना देखा है। किन्तु
कोई ऐसा नहीं है जो सपने की व्याख्या मुझको समझा सके। मैंने
सुना है कि जब कोई सपने के बारे में तुमसे कहता है तब तुम सपनों
की व्याख्या और उन्हें स्पष्ट कर सकते हो।"

16 यूसुफ ने उत्तर दिया, "मेरी अपनी बुद्धि नहीं है कि मैं सपनों
को समझ सकूँ केवल परमेश्वर ही है जो ऐसी शक्ति रखता है और
फ़िरौन के लिए परमेश्वर ही यह करेगा।"

17 तब फ़िरौन ने कहा, "अपने सपने में, मैं नील नदी के किनारे
खड़ा था। 18 मैंने सात गायों को नदी से बाहर आते देखा और घास
चरते देखा। ये गायें मोटी और सुन्दर थीं। 19 तब मैंने अन्य सात
गायों को नदी से बाहर आते देखा। वे गायें पतली और भद्दी थीं।
मैंने मिस्र देश में जितनी गायें देखी हैं उनमें वे सब से अधिक बुरी
थीं। 20 और इन भद्दी और पतली गायों ने पहली सुन्दर सात गायों
को खा डाला। 21 लेकिन सात गायों को खाने के बाद तक भी वे
पतली और भद्दी ही रहीं। तुम उनको देखो तो नहीं जान सकते कि
उन्होंने अन्य सात गायों को खाया है। वे उतनी ही भद्दी और पतली
दिखाई पड़ती थीं जितनी आरम्भ में थीं। तब मैं जाग गया।

22 "तब मैंने अपने दूसरे सपने में अनाज को सात बालें एक ही
अनाज के पीछे उगी देखीं। वे अनाज की बालें भरी हुई, अच्छी और
सुन्दर थीं। 23 तब उनके बाद सात अन्य बालें उगीं। किन्तु ये बालें
पतली, भद्दी और गर्म हवा से नष्ट थीं। 24 तब पतली बालों ने सात
अच्छी बालों को खा डाला।

"मैंने इस सपने को अपने लोगों को बताया जो जादूगर और गुणी
हैं। किन्तु किसी ने सपने की व्याख्या मुझको नहीं समझाई। इसका

अर्थ क्या है?”

यूसुफ सपने का अर्थ बताता है

25 तब यूसुफ ने फ़िरौन से कहा, “ये दोनों सपने एक ही अर्थ रखते
हैं। परमेश्वर तुम्हें बता रहा है जो जल्दी ही होगा। 26 सात अच्छी गायें
और सात अच्छी अनाज की बालें† सात वर्ष हैं, दोनों सपने एक ही
है। 27 सात दुबली और भद्दी गायें तथा सात बुरी अनाज की बालें
देश में भूखमरी के सात वर्ष हैं। ये सात वर्ष, अच्छे सात वर्षो के
बाद आयेंगे। 28 परमेश्वर ने आपको यह दिखा दिया है कि जल्दी ही
क्या होने वाला है। यह वैसा ही होगा जैसा मैंने कहा है। 29 आपके
सात वर्ष पूरे मिस्र में अच्छी पैदावार और भोजन बहुतायत के होंगे।
30 लेकिन इन सात वर्षों के बाद पूरे देश में भूखमरी के सात वर्ष
आएँगे। यह अकाल देश को नष्ट कर देगा। 31 भरपूर भोजनस्मरण
रखना लोग भूल जाएँगें कि क्या होता है?

32 “हे फ़िरौन, आपने एक ही बात के बारे में दो सपने देखे थे।
यह इस बात को दिखाने के लिए हुआ कि परमेश्वर निश्चय ही ऐसा
होने देगा और यह बताया है कि परमेश्वर इसे जल्दी ही होने देगा।
33 इसलिए हे फ़िरौन आप एक ऐसा व्यक्ति चुनें जो बहुत और
बुद्धिमान हो। आप उसे मिस्र देश का प्रशासक बनाएँ। 34 तब आप
दूसरे व्यक्तियों को जनता से भोजन इकट्ठा करने के लिए चुने। हर
व्यक्ति सात अच्छे वर्षों में जितना भोजन उत्पन्न करे, उसका पाँचवाँ
हिस्सा दे। 35 इन लोगों को आदेश दें कि जो अच्छे वर्ष आ रहे हैं
उनमें सारा भोजन इकट्ठा करें। व्यक्तियों से कह दें कि उन्हें नगरों में
भोजन जमा करने का अधिकार है। तब वे भोजन की रक्षा उस समय
तक करेंगे जब उनकी आवश्यकता होगी। 36 वह भोजन मिस्र देश
में आने वाले भूखमरी के सात वर्षों में सहायता करेगा। तब मिस्र में
सात वर्षों में लोग भोजन के अभाव में मरेंगे नहीं।”

---

† **41:26:** सात ... बालें या अनाज का अग्र भाग सात वर्ष है।

37 फ़िरौन को यह अच्छा विचार मालूम हुआ। इससे सभी
अधिकारी सहमत थे। 38 फ़िरौन ने अपने अधिकारियों से पूछा,
“क्या तुम लोगों में से कोई इस काम को करने के लिए यूसुफ से
अच्छा व्यक्ति ढूँढ सकता है? परमेश्वर की आत्मा ने इस व्यक्ति
को सचमुच बुद्धिमान बना दिया है।”

39 फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, “परमेश्वर ने ये सभी चीज़ें तुम को
दिखाई हैं। इसलिए तुम ही सर्वाधिक बुद्धिमान हो। 40 इसलिए मैं
तुमको देश का प्रशासक बनाऊँगा। जनता तुम्हारे आदेशों का पालन
करेगी। मैं अकेला इस देश में तुम से बड़ा प्रशासक रहूँगा।”

41 एक विशेष समारोह और प्रदर्शन था जिसमें फ़िरौन ने यूसुफ
को प्रशासक बनाया तब फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, “मैं अब तुम्हें
मिस्र के पूरे देश का प्रशासक बनाता हूँ।” 42 तब फिरौन ने अपनी
राजकीय मुहर वाल अगूँठी यूसुफ को दी और यूसुफ को एक सुन्दर
रेशमी वस्त्र पहनने को दिया। 43 फ़िरौन ने दूसरे श्रेणी के राजकीय
रथ पर यूसुफ को सवार होने को कहा। उसके रथ के आगे विशेष
रक्षक चलते थे। वे लोगों से कहते थे, “हे लोगों, यूसुफ को झुककर
प्रणाम करो। इस तरह यूसुफ पूरे मिस्र का प्रशासक बना।”

44 फ़िरौन ने उससे कहा, “मैं सम्राट फ़िरौन हूँ। इसलिए मैं जो
करना चाहूँगा, करूँगा। किन्तु मिस्र में कोई अन्य व्यक्ति हाथ पैर
नहीं हिला सकता है जब तक तुम उसे न कहो।” 45 फ़िरौन ने उसे
दूसरा नाम सापन तपानेह दिया। फ़िरौन ने आसनत नाम की एक
स्त्री, जो ओन के याजक पोतीपेरा की पुत्री थी, यूसुफ को पत्नी के
रूप में दी। इस प्रकार यूसुफ पूरे मिस्र देश का प्रशासक हो गया।

46 यूसुफ उस समय तीन वर्ष का था जब वह मिस्र के सम्राट की
सेवा करने लगा। यूसुफ ने पूरे मिस्र देश में यात्राएँ की। 47 अच्छे
सात वर्षों में देश में पैदावार बहुत अच्छी हुई 48 और यूसुफ ने मिस्र
में सात वर्ष खाने की चीजें बचायीं। यूसुफ ने भोजन नगरों में जमा

किया। यूसुफ ने नगर के चारों ओर के खेतों के उपजे अन्न को हर
नगर में जमा किया। 49 यूसुफ ने बहुत अन्न इकट्ठा किया। यह समुद्र
के बालू के सदृश था। उसने इतना अन्न इकट्ठा किया कि उसके
वजन को भी न आँका जा सके।

50 यूसुफ की पत्नी आसनत ओन के याजक पोतीपरा कि पुत्री
थी। भूखमरी के पहले वर्ष के आने के पूर्व यूसुफ और आसनेत
के दो पुत्र हुए। 51 पहले पुत्र का नाम मनश्शे रखा गया। यूसुफ ने
उसका यह नाम रखा क्योंकि उसने बताया, "मुझे जितने सारे कष्ट
हुए तथा घर की हर बात परमेश्वर ने मुझसे भुला दी।" 52 यूसुफ
ने दूसरे पुत्र का नाम एप्रैम रखा। यूसुफ ने उसका नाम यह रका
क्योंकि उसने बताया, "मुझे बहुत दुःख मिला, लेकिन परमेश्वर ने
मुझे फुलाया—फलाया।"

भूखमरी का समय आरम्भ होता है

53 सात वर्ष तक लोगों के पास खाने के लिए यह सब भोजन था
जिसकी उन्हें आवश्यकता थी और जो चीजें उन्हें आवश्यक थीं
वे सभी उगती थीं। 54 किन्तु सात वर्ष वाद भूखमरी के दिन शुरु
हुए। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ ने कहा था। सारी भूमि में
चारों ओर अन्न पैदा न हुआ। लोगों के पास खाने को कुछ न था।
किन्तु मिस्र में लोगों के खाने के लिए काफी था, क्योंकि यूसुफ ने
अन्न जमा कर रखा था। 55 भूखमरी का समय शुरु हुआ और लोग
भोजन के लिए फ़िरौन के सामने रोने लगे। फ़िरौन ने मिस्री लोगों से
कहा, "यूसुफ से पूछो। वही करो जो वह करने को कहता है।"

56 इसलिए जब देश में सर्वत्र भूखमरी थी, यूसुफ ने अनाज के
गोदामों से लोगों को अन्न दिया। यूसुफ ने जमा अन्न को मिस्र के
लोगों को बेचा। मिस्र में बहुत भयंकर अकाल था। 57 मिस्र के चारों
ओर के देशों के लोग अनाज खरीदने मिस्र आए। वे यूसुफ के पास
आए क्योंकि वहाँ संसार के उस भाग में सर्वत्र भूखमरी थी।

42

स्वप्न सच हुआ

1 इस समय याकूब के प्रदेश में भूखमरी थी। किन्तु याकूब को
यह पता लगा कि मिस्र में अन्न है। इसलिए याकूब ने अपने पुत्रों से
कहा, "हम लोग यहाँ हाथ पर हाथ धरे क्यों बैठे है? 2 मैंने सुना है
कि मिस्र में खरीदने के लिए अन्न है। इसलिए हम लोग वहाँ चलें
और वहाँ से अपने खाने के लिए अन्न खरीदें, तब हम लोग जीवित
रहेंगे, मरेंगे नहीं।"

3 इसलिए यूसुफ के भाईयों में से दस अन्य खरीदने मिस्र गए।
4 याकूब ने बिन्यामीन को नहीं भेजा। (बिन्यामीन यूसुफ का एकमात्र
सगा भाई* था)

5 कनान में भूखमरी का समय बहुत भयंकर था। इसलिए कनान
के बहुत से लोग अन्न खरीदने मिस्र गए। उन्हीं लोगों में इस्राएल के
पुत्र भी थे।

6 इस समय यूसुफ मिस्र का प्रशासक था। केवल यूसुफ ही था
जो मिस्र आने वाले लोगों को अन्न बेचने का आदेश देता था। यूसुफ
के भाई उसके पास आए और उन्होंने उसे झुककर प्रणाम किया।
7 यूसुफ ने अपने भाईयों को देखा और उसने उन्हें पहचान लिया
कि वे कौन है। किन्तु यूसुफ उनसे इस तरह बात करता रहा जैसे
वह उन्हें पहचानता ही नहीं। उसने उनके साथ क्रूरता से बात की।
उसने कहा, "तुम लोग कहाँ से आए हो?"

भाईयों ने उत्तर दिया, "हम कनान देश से आए हैं। हम लोग अन्न
खरीदने आए हैं।"

8 यूसुफ जानता था कि वे लोग उसके भाई हैं। किन्तु वे नहीं
जानते थे कि वह कौन हैं? 9 यूसुफ ने उन सपनों को याद किया
जिन्हें उसने अपने भाईयों के बारे में देखा था।

---

* **42:4:** सगा भाई शाब्दिक, "भाई" यूसुफ और बिन्यामीन की एक ही माँ थी।

यूसुफ ने अपने भाईयों से कहा, “तुम लोग अन्न खरीदने नहीं आए
हो। तुम लोग जासूस हो। तुम लोग यह पता लगाने आए हो कि हम
कहाँ कमजोर हैं?”
10 किन्तु भाईयों ने उससे कहा, “नहीं महोदया! हम तो आपके
सेवक के रूप में आए हैं। हम लोग केवल अन्न खरीदने आए है।
11 हम सभी लोग भाई है, हम लोगों का एक ही पिता है। हम लोग
ईमानदार हैं। हम लोग केवल अन्न खरीदने आए है।”
12 तब यूसुफ ने उनसे कहा, “नहीं, तुम लोग यह पता लगाने आए
हो कि हम कहाँ कमजोर हैं?”
13 भाईयों ने कहा, “नहीं हम सभी भाई है। हमारे परिवार में बारह
भाई है। हम सबका एक ही पिता है। हम लोगों का सबसे छोटा
भाई अभी भी हमारे पिता के साथ गर पर है और दूसरा भाई बहुत
समय पहले मर गया। हम लोग आपके सामने सेवक की तरह है।
हम लोग कनान देश के हैं।”
14 किन्तु यूसुफ ने कहा, “नहीं मुझे पता है कि मैं ठीक हूँ। तुम
भेदिये हो। 15 किन्तु मैं तुम लोगों को यह प्रमाणित करने का अक्सर
दूँगा कि तुम लोग सच कह रहे हो। तुम लोग यह जगह तब तक
नहीं छोड़ सकते जब तक तुम लोगों का छोटा भाई यहाँ नहीं आता।
16 इसलिए तुम लोगों में से एक लौटे और अपने छोटे भाई को यहाँ
लाए। उस समय तक अन्य यहाँ कारागार में रहेंगे। हम देखेंगे कि
क्या तुम लोग सच बोल रहे हो। किन्तु मुझे विश्वास है कि तुम
लोग जासूस हो।” 17 तब यूसुफ ने उन सभी को तीन दिन के लिए
कारागार में डाल दिया।

शिमोन बन्धक के रूप में रखा गया

18 तीन दिन बाद यूसुफ ने उनसे कहा, “मैं परमेश्वर का भय मानता
हूँ। इसलिए मैं तुम लोगों को यह प्रमाणित करने का एक अवसर
दूँगा कि तुम लोग सच बोल रहे हो। तुम लोग यह काम करो और मैं
तुम लोगों को जीवित रहने दूँगा। 19 अगर तुम लोग ईमानदार व्यक्ति

हो तो अपने भाईयों में से एक को कारागार में रहने दो। अन्य जा
सकते हैं और अपने लोगों के लिए अन्न ले जा सकते हैं। 20 तब
अपने सबसे छोटे भाई को लेकर यहाँ मेरे पास आओ। इस प्रकार
में विश्वास करूँगा कि तुम लोग सच बोल रहे हो।"

भाईयों ने इस बात को मान लिया। 21 उन्होंने आपस में बात की,
"हम लोग दण्डित किए गए हैं।† क्योंकि हम लोगों ने अपने छोटे
भाई के साथ बुरा किया है। हम लोगों ने उसके कष्टों को देखा
जिसमें वह था। उसने अपनी रक्षा के लिए हम लोगों से प्रार्थना की।
किन्तु हम लोगों ने उसकी एक न सुनी। इसलिए हम लोग दुःखों में
हैं।"

22 तब रूबेन ने उनसे कहा, "मैंने तुमसे कहा था कि उस लड़के
का कुछ भी बुरा न करो। लेकिन तुम लोगों ने मेरी एक न सुनी।
इसलिए अब हम उसकी मृत्यु के लिए दण्डित हो रहे हैं।"

23 यूसुफ अपने भाईयों से बात करने के लिए एक दुभाषिये से
काम ले रहा था। इसलिए भाई नहीं जानते थे कि यूसुफ उनकी
भाषा जानता है। किन्तु वे जो कुछ कहते थे उसे यूसुफ सुनता और
समझता था। 24 उनकी बातों से यूसुफ बहुत दुःखी हुआ। इसलिए
यूसुफ उनसे अलग हट गया और रो पड़ा। थोड़ी देर में यूसुफ उनके
पास लौटा। उसने भाईयों में से शिमोन को पकड़ा और उसे बाँधा
जब कि अन्य भाई देखते रहे।

25 यूसुफ ने कुछ सेवकों को उनकी बोरियों को अन्न से भरने को
कहा। भाईयों ने इस अन्न का मूल्य यूसुफ को दिया। किन्तु यूसुफ
ने उस धन को अपने पास नहीं रखा। उसने उस धन को उनकी
अनाज की बोरियों में रख दिया। तब यूसुफ ने उन्हें वे चीज़ें दी,
जिनकी आवश्यकता उन्हें घर तक लौटने की यात्रा में ही सकती
थी। 26 इसलिए भाईयों ने अन्न को अपने गधों पर लादा और वहाँ
से चल पड़े। 27 वे सभी भाई रात को ठहरे और भाईयों में से एक ने
कुछ अन्न के लिए अपनी बोरी खोली और उसने अपना धन अपनी

† **42:21:** हम ... गये हैं शाब्दिक, "हम अपराधी हैं।"

बोरी में पाया। 28 उसने अन्य भाईयों से कहा, "देखो, जो मूल्य मैंने
अन्न के लिए चुकाया, वह यहाँ है। किसी ने मेरी बोरी में ये धन
लौटा दिया है। वे सभी भाई बहुत अधिक भयभीत हो गए। उन्होंने
आपस में बातें की, परमेश्वर हम लोगों के साथ क्या कर रहा है?"

भाईयों ने याकूब को सूचित किया

29 वे भाई कनान देश में अपने पिता याकूब के पास गए। उन्होंने
जो कुछ हुआ था अपने पिता को बताया। 30 उन्होंने कहा, "उस
देश का प्रशासक हम लोगों से बहुत रूखाई से बोला। उसने सोचा
कि हम लोग उस सेना की ओर से भेजे गए हैं जो वहाँ के लोगों
को नष्ट करना चाहती है। 31 लेकिन हम लोगों ने कहा कि, हम लोग
ईमानदार हैं। हम लोग किसी सेना में से नहीं हैं। 32 हम लोगों ने उसे
बताया कि, 'हम लोग बारह भाई हैं। हम लोगों ने अपने पिता के
बारे में बताया और यह कहा कि हम लोगों का सबसे छोटा भाई
अब भी कनान देश में है।' "

33 "तब देश के प्रशासक ने हम लोगों से यह कहा, 'यह प्रमाणित
करने के लिए कि तुम ईमानदार हो यह रास्ता है: अपने भाईयों
में से एक को हमारे पास यहाँ छोड़ दो। अपना अन्न लेकर अपने
परिवारों के पास लौट जाओ। 34 अपने सबसे छोटे भाई को हमारे
पास लाओ। तब मैं समझूँगा कि तुम लोग ईमानदार हो अथवा तुम
लोग हम लोगों को नष्ट करने वाली सेना की ओर से नहीं भेजे गए
हो। यदि तुम लोग सब बोल रहे हो तो मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें दे
दूँगा।' "

35 तब सब भाई अपनी बोरियों से अन्न लेने गए और हर एक
भाई ने अपने धन की थैली अपने अन्न की बोरी में पाई। भाईयों
और उनके पिता ने धन को देखा और वे बहुत डर गए।

36 याकूब ने उनसे कहा, "क्या तुम लोग चाहते हो कि मैं अपने
सभी पुत्रों से हाथ धो बैठूँ। यूसुफ तो चला ही गया। शिमोन भी गया
और तुम लोग बिन्यामीन को भी मुझसे दूर ले जाना चाहते हो।"

37 तब रूबेन ने अपने पिता से कहा, "पिताजी आप मेरे दो पुत्रों
को मार देना यदि मैं बिन्यामीन को आपके पास बिन्यामीन को
लौटा लाऊँगा।"
38 किन्तु याकूब ने कहा, "मैं बिन्यामीन को तुम लोगों के साथ
नहीं जाने दूँगा। उसका भाई मर चुका है। और मेरी पत्नी राहेल का
वही अकेला पुत्र बचा है। मिस्र तक की यात्रा में यदि उसके साथ
कुछ हुआ तो वह घटना मुझे मार डालेगी। तुम लोग मुझ वृद्ध को
कब्र में बहुत दुःखी करके भेजोगे।"

43

याकूब ने बिन्यामीन को मिस्र जाने की आज्ञा दी

1 देश में भूखमरी का समय बहुत ही बुरा था। वहाँ कोई भी खाने
की चीज नहीं उग रही थी। 2 लोग वह सारा अन्न खा गए जो वे
मिस्र से लाये थे। जब अन्न समाप्त हो गया, याकूब ने अपने पुत्रों से
कहा, "फिर मिस्र जाओ। हम लोगों के खाने के लिए कुछ और अन्न
खरीदो।"
3 किन्तु यहूदा ने याकूब से कहा, "उस देश के प्रसाशक ने हम
लोगों को चेतावनी दी है। उसने कहा है, 'यदि तुम लोग अपने भाई
को मेरे पास वापस नहीं लाओगे तो मैं तुम लोगों से बात करने से
मना भी कर दूँगा।' 4 यदि तुम हम लोगों के साथ बिन्यामीन को
भेजोगे तो हम लोग जाएँगे और अन्न खरीदेंगे। 5 किन्तु यदि तुम
बिन्यामीन को भेजने से मना करोगे तब हम लोग नहीं जाएँगे। उस
व्यक्ति ने चेतावनी दी कि हम लोग उसके बिना वापस न आए।"
6 इस्राएल (याकूब) ने कहा, "तुम लोगों ने उस व्यक्ति से क्यों
कहा, कि तुम्हारा अन्य भाई भी है। तुम लोगों ने मेरे साथ ऐसी बुरी
बात क्यों की?"
7 भाईयों ने उत्तर दिया, "उस व्यक्ति ने सावधानी से हम लोगों
से प्रश्न पूछे। वह हम लोगों तथा हम लोगों के परिवार के बारे में
जानना चाहता था। उसने हम लोगों से पूछा, 'क्या तुम लोगों का

पिता अभी जीवित है? क्या तुम लोगों का अन्य भाई घर पर है?’
हम लोगों ने कोल उसके प्रश्नों के उत्तर दिए। हम लोग नहीं जानते
थे के वह हमारे दूसरे भाई को अपने पास लाने को कहेगा।”

8 तब यहूदा ने अपने पिता इस्राएल से कहा, “बिन्यामीन को मेरे
साथ भेजो। मैं उसकी देखभाल करूँगा हम लोग मिस्र अवश्य जाएँगे
और भोजन लाएँगे। यदि हम लोग नहीं जाते हैं तो हम लोगों के बच्चे
भी मर जाएँगे। 9 मैं विश्वास दिलाता हूँ कि वह सुरक्षित रहेगा। मैं
इसका उत्तरदायी रहूँगा। यदि मैं उसे तुम्हारे लौटाकर न लाऊँ तो
तुम सदा के लिए मुझे दोषी ठहरा सकते हो। 10 यदि तुमने हमें पहले
जाने दिया होता तो भोजन के लिए हम लोग दो यात्राएँ अभी तक
कर चुके होते।”

11 तब उनके पिता इस्राएल ने कहा, “यदि यह सचमुच सही है तो
बिन्यामीन को अपने साथ ले जाओ। किन्तु प्रशासक के लिए कुछ
भेंट ले जाओ। उन चीजों में से कुछ ले जाओ जो हम लोग अपने
देश में इकट्ठा कर सके हैं। उसके लिए कुछ शहद, पिस्ते, बादाम,
गोंद और लोबान ले जाओ। 12 इस समय, पहले से दुगुना धन भी
ले लो जो पिछली बार देने के बाद लौटा दिया गया था। संभव है
कि प्रशासक से गलती हुई हो। 13 बिन्यामीन को साथ लो और उस
व्यक्ति के पास ले जाओ। 14 मैं प्रार्थना करता हूँ कि सर्वशक्तिमान
परमेश्वर तुम लोगों की उस समय सहायता करेगा जब तुम प्रशासक
के सामने खड़े होओगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह बिन्यामीन और
शिमोन को भी सुरक्षित आने देगा। यदि नहीं तो मैं अपने पुत्र से हाथ
धोकर फिर दुःखी होऊँगा।”

15 इसलिए भाईयों ने प्रशासक को देने के लिए भेंटे ली और
उन्होंने जितना धन पहले लिया था उसका दुगना धन अपने साथ
लिया। बिन्यामीन भाईयों के साथ मिस्र गया।

भाई यूसुफ के घर निमन्त्रित होते हैं

16 मिस्र में यूसुफ ने उनके साथ बिन्यामीन को देखा। यूसुफ ने
अपने सेवक से कहा, “उन व्यक्तियों को मेरे घर लाओ। एक जानवर
मारो और पकाओ। वे व्यक्ति आज दोपहर को मेरे साथ भोजन
करेंगे।” 17 सेवक को जैसा कहा गया था वैसा किया। वह उन
व्यक्तियों को यूसुफ के घर लाया।

18 भाई डरे हुए थे जब वे यूसुफ के घर लाए गए। उन्होंने कहा,
“हम लोग यहाँ उस धन के लिए लाए गए हैं जो पिछली बार हम
लोगों की बोरियों में रख दिया गया था। वे हम लोगों को अपराधी
सिद्ध करने लिए उनका उपयोग करेंगे। तब वे हम लोगों के गधों
को चुरा लेंगे और हम लोगों को दास बनाएँगे।”

19 अतः यूसुफ के घर की देख–रेख करने वाले सेवक के पास
सभी भाई गए। 20 उन्होंने कहा, “महोदय, मैं प्रतिज्ञापूर्वक सब कहता
हूँ कि पिछली बार हम आए थे। हम लोग भोजन खरीदने आए थे।
21-22 घर लौटते समय हम लोगों ने अपनी बोरियाँ खोलीं और हर
एक बोरी में अपना धन पाया। हम लोग नहीं जानते कि उनमें धन
कैसे पहुँचा। किन्तु हम वह धन आपको लौटाने के लिए साथ लाए
हैं और इस समय हम लोग जो अन्न खरीदना चाहते हैं उसके लिए
अधिक धन लाए हैं।”

23 किन्तु सेवक ने उत्तर दिया, “डरो नहीं, मुझ पर विश्वास करो।
तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने तुम लोगों के धन को तुम्हारी बोरियों में
भेंट के रूप में रखा होगा। मुझे याद है कि तुम लोगों ने पिछली बार
अन्न का मूल्य मुझे दे दिया था।”

सेवक शिमोन को कारागार से बाहर लाया। 24 सेवक उन लोगों
को यूसुफ के घर ले गया। उसने उन्हें पानी दिया और उन्होंने अपने
पैर धोए। तब तक उसने उनके गधों को खाने के लिए चारा दिया।
25 भाईयों ने सुना कि वे यूसुफ के साथ भोजन करेंगे। इसलिए
उसके लिए अपनी भेंट तैयार करने में वे दोपहर तक लगे रहे।
26 यूसुफ घर आया और भाईयों ने उसे भेंट दीं जो वे अपने साथ
लाए थे। तब उन्होंने धरती पर झुककर प्रणाम किया।

27 यूसुफ ने उनकी कुशल पूछी। यूसुफ ने कहा, "तुम लोगों का
वृद्ध पिता जिसके बारे में तुम लोगों ने बताया, ठीक तो है? क्या वह
अब तक जीवित है?"

28 भाईयों ने उत्तर दिया, "महोदय, हम लोगों के पिता ठीक हैं। वे
अब तक जीवित है" और वे फिर यूसुफ के सामने झुके।

29 तब यूसुफ ने अपने भाई बिन्यामीन को देखा। (बिन्यामीन और
यूसुफ की एक ही माँ थी) यूसुफ ने कहा, "क्या यह तुम लोगों का
सबसे छोटा भाई है जिसके बारे में तुम ने बताया था?" तब यूसुफ
ने बिन्यामीन से कहा, "परमेश्वर तुम पर कृपालु हो।"

30 तब यूसुफ कमरे से बाहर दौड़ गया। यूसुफ बहुत चाहता थी
कि वह अपने भाईयों को दिखाए कि वह उनसे बहुत प्रेम करता है।
वह रोने—रोने सा हो रहा था, किन्तु वह नहीं चाहता था कि उसके
भाई उसे रोता देखें। इसलिए वह अपने कमरे में दौड़ता हुआ पहुँचा
और वहीं रोया। 31 तब यूसुफ ने अपना मुँह धोया और बाहर आया।
उसने अपने को संभाला और कहा, "अब भोजन करने का समय
है।"

32 यूसुफ ने अकेले एक मेज पर भोजन किया। उसके भाईयों ने
दूसरी मेज पर एक साथ भोजन किया। मिस्री लोगों ने अन्य मेज पर
एक साथ खाया। उनका विश्वास था कि उनके लिए यह अनुचित है
कि वे हिब्रू लोगों के साथ खाएँ। 33 यूसुफ के भाई उसके सामने की
मेज पर बैठे थे। सभी भाई सबसे बड़े भाई से आरम्भ कर सबसे
छोटे भाई तक क्रम में बैठे थे। सभी भाई एक दूसरे को, जी हो रहा
था उस पर आश्चर्य करते हुए देखते जा रहे थे। 34 सेवक यूसुफ की
मेज से उनको भोजन ले जाते थे। किन्तु औरों की तुलना में सेवकों
ने बिन्यामीन को पाँच गुना अधिक दिया। यूसुफ के साथ वे सभी
भाई तब तक खाते और दाखमधु पीते रहे जब तक वे नशे में चूर
नहीं हो गया।

44

यूसुफ जाल बिछाता है

1 तब यूसुफ ने अपने नौकर को आदेश दिया। यूसुफ ने कहा,
"उन व्यक्तियों की बोरियों में इतना अन्न भरी जितना ये ले जा सके
और हर एक का धन उस की अन्न की बोरी में रख दो। 2 सबसे छोटे
भाई की बोरी में धन रखो। किन्तु उसकी बोरी में मेरी विशेष चाँदी
का प्याला भी रख दो।" सेवक ने यूसुफ का आदेश पूरा किया।

3 अगले दिन बहुत सुबह सब भाई अपने गधों के साथ अपने
देश को वापस भेज दिए गए। 4 जब वे नगर को छोड़ चुके, यूसुफ
ने अपने सेवक से कहा, "जाओ और उन लोगों का पीछा करो।
उन्हें रोको और उनसे कहो, 'हम लोग आप लोगों के प्रति अच्छे
रहे। किन्तु आप लोगों ने हमारे यहाँ चोरी क्यों की? आप लोगों
ने यूसुफ का चाँदी का प्याला क्यों चुराया? 5 हमारे मालिक यूसुफ
इसी प्याले से पीते हैं। वे सपने की व्याख्या के लिए इसी प्याले
का उपयोग करते हैं। इस प्याले को चुराकर आप लोगों ने अपराध
किया है।' "

6 अतः सेवक ने आदेश का पालन किया। वह सवार हो कर
भाईयों तक गया और उन्हें रोका। सेवक ने उनसे वे ही बातें कहीं
जो यूसुफ ने उनसे कहने के लिए कही थी।

7 किन्तु भाईयों ने सेवक से कहा, "प्रशासक ऐसी बातें क्यों कहते
है? हम लोग ऐसा कुछ नहीं कर सकते। 8 हम लोग वह धन लौटाकर
लाए जो पहले हम लोगों की बोरियों में मिले थे। 9 इसलिए निश्चय
ही हम तुम्हारे मालिक के घर से चाँदी का वह प्याला पा जाये तो
उस व्यक्ति को मर जाने दिया जाये। तुम उसे मार सकते हो और
हम लोग तुम्हारे दास होंगे।"

10 सेवक ने कहा, "जैसा तुम कहते हो हम वैसा ही करेंगे, किन्तु
मैं उस व्यक्ति को मारूँगा नहीं। यदि मुझे चाँदी का प्याला मिलेगा
तो वह व्यक्ति मेरा दास होगा। अन्य भाई स्वतन्त्र होंगे।"

जाल फेंका गया, बिन्यामीन पकड़ा गया

11 तब सभी भाईयों ने अपनी बोरियों जल्दी जल्दी ज़मीन पर
खोली। 12 सेवक ने बोरियों जल्दी जल्दी जमीन पर खोली। सेवक ने
बोरियों में देखा। उसने सबसे बड़े भाई से आरम्भ किया और सबसे
छोटे भाई पर अन्त किया। उसने बिन्यामीन की बोरी में प्याला
पाया। 13 भाई बहुत दुःखी हुए। उन्होंने दुःख के कारण अपने वस्त्र
फाड़ डाले। उन्होंने अपनी बोरियाँ गधों पर लादी और नगर को
लौट पड़े।

14 यहूदा और उसके भाई यूसुफ के घर लौटकर गए। यूसुफ तब
तक वहाँ था। भाईयों ने पृथ्वी तक झुककर प्रणाम किया। 15 यूसुफ
ने उनसे कहा, “तुम लोगों ने यह क्यों किया? क्या तुम लोगों को
पता नहीं है कि गुप्त बातों को जानने का मेरा विशेष ढंग है। मुझसे
बढ़कर अच्छी तरह कोई दूसरा यह नहीं कर सकता।”

16 यहूदा ने कहा, “महोदय, हम लोगों को कहने के लिए कुछ
नहीं है। स्पष्ट करने का कोई रास्ता नहीं है। यह दिखाने का कोई
तरीका नहीं है कि हम लोग अपराधी नहीं है। हम लोगों ने और
कुछ किया होगा जिसके लिए परमेश्वर ने हमें अपराधी ठहराया।
इसलिए हम सभी बिन्यामीन भी, आपके दास होंगे।”

17 किन्तु यूसुफ ने कहा, “मैं तुम सभी को दास नहीं बनाउँगा।
केवल वह व्यक्ति जिसने प्याला चुराया है, मेरा दास होगा। अन्य
तुम लोग शान्ति से अपने पिता के पास जा सकते हो।”

यहूदा बिन्यामीन की सिफारिश करता है

18 तब यहूदा यूसुफ के पास गया और उसने कहा, “महोदय,
कृपाकर मुझे स्वयं स्पष्ट कह लेने दें। कृपा कर मुझ से अप्रसन्न न
हों। मैं जानता हूँ कि आप स्वयं फ़िरौन जैसे हैं। 19 जब हम लोग
पहले यहाँ आए थे, आपने पूछा था कि ‘क्या तुम्हारे पिता या भाई
है?’ 20 और हमने आपको उत्तर दिया, ‘हमारे एक पिता हैं, वे बूढ़े
हैं और हम लोगों का एक छोटा भाई है। हमारे पिता उससे बहुत

प्यार करते है। क्योंकि उसका जन्म उनके बूढ़ापे में हुआ था, यह
अकेला पुत्र है। हम लोगों के पिता उसे बहुत प्यार करते हैं।' 21 तब
आपने हमसे कहा था, 'उस भाई को मेरे पास लाओ। मैं उसे देखना
चाहता हूँ।' 22 और हम लोगों ने कहा था, 'वह छोटा लड़का नहीं आ
सकता। वह अपने पिता को नहीं छोड़ सकता। यदि उसके पिता
को उससे हाथ धोना पड़ा तो उसका पिता इतना दुःखी होगा कि
वह मर जाएगा।' 23 किन्तु आपने हमसे कहा, 'तुम लोग अपने छोटे
भाई को अवश्य लाओ, नहीं तो मैं फिर तुम लोगों के हाथ अन्न नहीं
बेचूँगा।' 24 इसलिए हम लोग अपने पिता के पास लौटे और आपने
जो कुछ कहा, उन्हें बताया।

25 "बाद में हम लोगों के पिता ने कहा, 'फिर जाओ और हम
लोगों के लिए कुछ और अन्न खरीदो।' 26 और हम लोगों ने अपने
पिता से कहा, 'हम लोग अपने सबसे छोटे भाई के बिना नहीं जा
सकते। शासक ने कहा है कि वह तब तक हम लोगों को फिर
अन्न नहीं बेचेगा जब तक वह हमारे सबसे छोटे भाई को नहीं देख
लेता।' 27 तब मेरे पिता ने हम लोगों से कहा, 'तुम लोग जानते हो कि
मेरी पत्नी राहेल ने मुझे दो पत्र दिये। 28 मैंने एक पुत्र को दूर जाने
दिया और वह जंगली जानवर द्वारा मारा गया और तब से मैंने उसे
नहीं देखा है। 29 यदि तुम लोग मेरे दूसरे पुत्र को मुझसे दूर ले जाते
हो और उसे कुछ हो जाता है तो मुझे इतना दुःख होगा कि मैं मर
जाऊँगा।' 30 इसलिए यदि अब हम लोग अपने सबसे छोटे भाई के
बिना घर जायेंगे तब हम लोगों के पिता को यह देखना पड़ेगा। यह
छोटा लड़का हमारे पिता के जीवन में सबसे अधिक महत्व रखता
है। 31 जब वे देखेंगे कि छोटा लड़का हम लोगों के साथ नहीं है वे
मर जायेंगे और यह हम लोगों का दोष होगा। हम लोग अपने पिता
के घोर दुःख एवं मृत्यु का कारण होंगे।

32 "मैंने छोटे लड़के का उत्तरदायित्व लिया है। मैंने अपने पिता
से कहा, 'यदि मैं उसे आपके पास लौटाकर न लाऊँ तो आप मेरे
सारे जीवनभर मुझे दोषी ठहरा सकते है।' 33 इसलिए अब मैं आपसे

माँगता हूँ, और आप से प्रार्थना करता हूँ कि कृपया छोटे लड़के
को अपने भाईयों के साथ लौट जाने दें और मैं यहाँ रूकूँगा और
आपका दास होऊँगा। 34 मैं अपने पिता के पास लौट नहीं सकता
यदि हमारे साथ छोटा भाई नहीं रहेगा। मैं इस बात से बहुत भयभीत
हूँ कि मेरे पिता के साथ क्या घटेगा।"

45

यूसुफ अपने को प्रकट करता है कि वह कौन है

1 यूसुफ अपने को और अधिक न संभाल सका। वह वहाँ
उपस्थित सभी लोगों के सामने हो पड़ा। यूसुफ ने कहा, "हर एक
से कहो कि यहाँ से हट जाए।" इसलिए सभी लोग चले गये। केवल
उसके भाई ही यूसुफ के साथ रह गए। तब यूसुफ ने उन्हें बताया
कि वह कौन है। 2 यूसुफ रोता रहा, और फ़िरौन के महल के सभी
मिस्री व्यक्तियों ने सुना। 3 यूसुफ ने अपने भाईयों से कहा, "मैं आप
लोगों का भाई यूसुफ हूँ। क्या मेरे पिता सकुशल हैं?" किन्तु भाईयों
ने उसको उत्तर नहीं दिया। वे डरे हुए तथा उलझान में थे।

4 इसलिए यूसुफ ने अपने भाईयों से फिर कहा, "मेरे पास आओ।"
इसलिए यूसुफ के भाई निकट गए और यूसुफ ने उनसे कहा, "मैं
आप लोगों का भाई यूसुफ हूँ। मैं वहीं हूँ जिसे मिस्रियों के हाथ
आप लोगों ने दास के रूप में बेचा था। 5 अब परेशान न हों। आप
लोग अपने किए हुए के लिए स्वयं भी पश्चाताप न करें। वह तो मेरे
लिए परमेश्वर की योजना थी कि मैं यहाँ आऊँ। मैं यहाँ तुम लोगों का
जीवन बचाने के लिए आया हूँ। 6 यह भयंकर भूखमरी का समय दो
वर्ष ही अभी बीता है और अभी पाँच वर्ष बिना पौधे रोपने या उपज
के आएँगे। 7 इसलिए परमेश्वर ने तुम लोगों से पहले मुझे यहाँ भेजा
जिससे मैं इस देश में तुम लोगों को बचा सकूँ। 8 यह आप लोगों का
दोष नहीं था कि मैं यहाँ भेजा गया। वह परमेश्वर की योजना थी।

परमेश्वर ने मुझे फ़िरौन के पिता सदृश बनाया। ताकि मैं उसके सारे घर और सारे मिस्र का शासक रहूँ।”

इस्राएल मिस्र के लिए आमन्त्रित हुआ

9 यूसुफ ने कहा, “इसलिए जल्दी मेरे पिता के पास जाओ। मेरे
पिता से कहो कि उसके पुत्र यूसुफ ने यह सन्देश भेजा है: ‘परमेश्वर
ने मुझे पूरे मिस्र का शासक बनाया है। मेरे पास आइये। प्रतीक्षा
न करें। अभी आएँ। 10 आप मेरे निकट गीरोत प्रदेश में रहेंगे।
आपका, आपके पुत्रों का, आपके सभी जानवरों एवं झुण्डों का यहाँ
स्वागत है। 11 भुखमरी के अगले पाँच वर्षों में मैं आपका देखभाल
करुँगा। इस प्रकार आपके और आपके परिवार की जो चीज़ें हैं
उनसे आपको हाथ धोना नहीं पड़ेगा।’

12 “यूसुफ अपने भाईयों से बात करता रहा। उसने कहा, “अब
आप लोग देखते हैं कि यह सचमुच मैं ही हूँ, और आप लोगों का
भाई बिन्यामीन जानता है कि यह मैं हूँ। मैं आप लोगों का भाई आप
लोगों से बात कर रहा हूँ। 13 इसलिए मेरे पिता से मेरी मिस्र की
अत्याधिक सम्पत्ति के बारे में कहें। आप लोगों ने जो यहाँ देखा है
उस हर एक चीज़ के बारे में मेरे पिता को बताएं। अब जल्दी करो
और मेरे पिता को लेकर मेरे पास लौटो।” 14 तब यूसुफ ने अपने
भाई बिन्यामीन को गले लगाया और रो पड़ा और बिन्यामीन भी
रो पड़ा। 15 तब यूसुफ ने सभी भाईयों को चूमा और उनके लिए रो
पड़ा। इसके बाद भाई उसके साथ बातें करने लगे।

16 फ़िरौन को पता लगा कि यूसुफ के भाई उसके पास आए
हैं। यह खबर फ़िरौन के पूरे महल में फैल गई। फ़िरौन और उसके
सेवक इस बारे में बहुत प्रसन्न हुए। 17 इसलिए फ़िरौन ने यूसुफ से
कहा, “अपने भाईयों से कहो कि उन्हें जितना भोजन चाहिए, लें और
कनान देश को लौट जाए। 18 अपने भाईयों से कहो कि वे अपने पिता
और अपने परिवारों को लेकर यहाँ मेरे पास आए। मैं तुम्हें जीविका

के लिए मिस्र में सबसे अच्छी भूमि दूँगा और तुम्हारा परिवार सबसे
अच्छा भोजन करेगा जो हमारे पास यहाँ है। 19 तब फ़िरौन ने कहा,
"हमारी सबसे अच्छी गाड़ियों में से कुछ अपने भाईयों को दो। उन्हें
कनान जाने और गाड़ियों में अपने पिता, स्त्रियों और बच्चों को यहाँ
लाने को कहो। 20 उनकी कोई भी चीज़ यहाँ लाने की चिन्ता न
करो। हम उन्हें मिस्र में जो कुछ सबसे अच्छा है, देंगे।"

21 इसलिए इस्राएल के पुत्रों ने यही किया। यूसुफ ने फ़िरौन के
वचन के अनुसार अच्छी गाड़ियाँ दी और यूसुफ ने यात्रा के लिए
उन्हें भरपूर भोजन दिया। 22 यूसुफ ने हर एक भाई को एक एक
जोड़ा सुन्दर वस्त्र दिया। किन्तु यूसुफ ने बिन्यामीन को पाँच जोड़े
सुन्दर वस्त्र दिए और यूसुफ ने बिन्यामीन को तीन सौ चाँदी के
सिक्के भी दिए। 23 यूसुफ ने अपने पिता को भी भेंटें भेजी। उसने मिस्र
से बहुत सी अच्छी चीज़ों से भरी बोरियों से लदे दस गधों को भेजा
और उसने अपने पिता के लिए अन्न, रोटी और अन्य भोजन से लदी
हुई दस गदहियों को उनकी वापसी यात्रा के लिए भेजा। 24 तब
यूसुफ ने अपने भाईयों को जाने के लिए कहा। जब वे जाने को हुए
थे यूसुफ ने उनसे कहा, "सीधे घर जाओ और रास्ते में लड़ना नहीं।"

25 इस प्रकार भाईयों ने मिस्र को छोड़ा और कनान देश में अपने
पिता के पास गए। 26 भाईयों ने उससे कहा, "पिताजी यूसुफ अभी
जीवित है और वह पूरे मिस्र देश का प्रशासक है।"

उनका पिता चकित हुआ। उसने उन पर विश्वास नहीं किया।
27 किन्तु यूसुफ ने जो बातें कहीं थी, भाईयों ने हर एक बात अपने
पिता से कही। तब याकूब ने उन गाड़ियों को देखा जिन्हें यूसुफ ने
उसे मिस्र की वापसी यात्रा के लिए भेजा था। तब याकूब भाबुक
हो गया और अत्यन्त प्रसन्न हुआ। 28 इस्राएल ने कहा, "अब मुझे
विश्वास है कि मेरा पुत्र यूसुफ अभी जीवित है। मैं मरने से पहले उसे
देखने जा रहा हूँ।"

46

परमेश्वर इस्राएल को विश्वास दिलाता है

1 इसलिए इस्राएल ने मिस्र की अपनी यात्रा प्रारम्भ की। पहले
इस्राएल बेर्शेबा पहुँचा। वहाँ इस्राएल ने अपने पिता इसहाक के
परमेश्वर की उपासना की। उसने बलि दी। 2 रात में परमेश्वर इस्राएल
से सपने में बोला। परमेश्वर ने कहा, "याकूब, याकूब।"

और इस्राएल ने उत्तर दिया, "मैं यहाँ हूँ।"

3 तब यहोवा ने कहा, "मैं यहोवा हूँ तुम्हारे पिता का परमेश्वर।
मिस्र जाने से न डरो। मिस्र में मैं तुम्हें महान राष्ट्र बनाऊँगा। 4 मैं
तुम्हारे साथ मिस्र चलूँगा और मैं तुम्हें फिर मिस्र से बाहर निकाल
लाऊँगा। तुम मिस्र में मरोगे। किन्तु यूसुफ तुम्हारे साथ रहेगा। जब
तुम मरोगे तो वह स्वयं अपने हाथों से तुम्हारी आँखें बन्द करेगा।"

इस्राएल मिस्र को जाता है

5 तब याकूब ने बेर्शेबा छोड़ा और मिस्र तक यात्रा की। उसके पुत्र,
अर्थात् इस्राएल के पुत्र अपने पिता, अपनी पत्नियों और अपने सभी
बच्चों को मिस्र ले आए। उन्होंने फ़िरौन द्वारा भेजी गयी गाड़ियों में
यात्रा की। 6 उनके पास उनके पशु और कनान देश में उनका अपना
जो कुछ था, वह भी साथ था। इस प्रकार इस्राएल अपने सभी बच्चे
और अपने परिवार के साथ मिस्र गया। 7 उसके साथ उसके पुत्र
और पुत्रियाँ एवं पौत्र और पौत्रियाँ थी। उसका सारा परिवार उसके
साथ मिस्र को गया।

याकूब का परिवार (इस्राएल)

8 यह इस्राएल के उन पुत्रों और परिवारों के नाम है जो उसके
साथ मिस्र गए:

रूबेन याकूब का पहला पुत्र था। 9 रूबेन के पुत्र थे: हनोक,
पललू, हेस्रोन और कर्म्मी।

10 शिमोन के पुत्र: यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन और सोहर। वहाँ शाऊल भी था। (शाऊल कनानी पत्नी से पैदा हुआ था।)

11 लेवी के पुत्र: गेर्शोन, कहात और मरारी।

12 यहूदा के पुत्र: एर, ओनान, शेला, पेरेस और जेरह। (एर और ओनान कनान में रहने समय मर गये थे।) पेरेम के पुत्र: हेब्रोन और हामूल।

13 इस्साकार के पुत्र: तोला, पुब्बा, योब और शिम्रोन।

14 जबूलून के पुत्र: सेरेद, एलोन और यहलेल।

15 रूबेन, शिमोन लेवी, इस्साकार और जबूलून और याकूब की पत्नी लिआ से उसकी पुत्री दीना भी थी। इस परिवार में तैंतीस व्यक्ति थे।

16 गाद के पुत्र: सिय्योन, हाग्गी, शूनी, एसबोन, एरी, अरोदी और अरेली।

17 आशेर के पुत्र: यिम्ना, यिश्वा, यिस्वी, बरीआ और उनकी बहन सेरह और बरीआ के पुत्र: हेबेर और मल्कीएल थे।

18 ये सभी याकूब की पत्नी की दासी जिल्पा से उसके पुत्र थे। इस परिवार में सोलह व्यक्ति थे।

19 याकूब के साथ उसकी पत्नी राहेल से पैदा हुआ पुत्र बिन्यामीन भी था। (यूसुफ भी राहेल से पैदा था, किन्तु वह पहले से ही मिस्र में था।)

20 मिस्र में यूसुफ के दो पुत्र थे, मनश्शे, एप्रैम। (यूसुफ की पत्नी ओन के याजक पोतीपेरा की पुत्री आसनत थी।)

21 बिन्यामीन के पुत्र: बेला, बेकेर, अश्बेल, गेरा, नामान, एही, रोश, हुप्पीम, मुप्पीम और आर्द।

22 वे याकूब की पत्नी राहेल से पैदा हुए उसके पुत्र थे। इस परिवार
में चौदह व्यक्ति थे।

23 दान का पुत्रः हूशीम।
24 नप्ताली के पुत्रः यहसेल, गूनी, सेसेर शिल्लेम।

25 वे याकूब और बिल्हा के पुत्र थे। (बिल्हा राहेल की सेविका थी।)
इस परिवार में सात व्यक्ति थे।

26 इस प्रकार याकूब का परिवार मिस्र में पहुँचा। उनमें छियासठ
उसके सीधे वंशज थे। (इस संख्या में याकूब के पुत्रों की पत्नियाँ
सम्मिलित नहीं थी।) 27 यूसुफ के भी दो पुत्र थे। वे मिस्र में पैदा हुए
थे। इस प्रकार मिस्र में याकूब के परिवार में सत्तर व्यक्ति थे।

इस्राएल मिस्र पहुँचता है

28 याकूब ने पहले यहूदा को यूसुफ के पास भेजा। यहूदा गोशेन
प्रदेश में यूसुफ के पास गया। जब याकूब और उसके लोग उस
प्रदेश में गए। 29 यूसुफ को पता लगा कि उसका पिता निकट आ
रहा है। इसलिए यूसुफ ने अपना रथ तैयार कराया और अपने पिता
इस्राएल से गीशोन में मिलने चला। जब यूसुफ ने अपने पिता को
देखा तब वह उसके गले से लिपट गया और देर तक रोता रहा।
30 तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "अब मैं शान्ति से मर सकता
हूँ। मैंने तुम्हारा मुँह देख लिया और मैं जानता हूँ कि तुम अभी जीवित
हो।"

31 यूसुफ ने अपने भाईयों और अपने पिता के परिवार से कहा,
"मैं जाऊँगा और फ़िरौन से कहूँगा कि मेरे पिता यहाँ आ गए हैं। मैं
फिंरौन से कहूँगा, 'मेरे भाईयों और मेरे पिता के परिवार ने कनान
देश छोड़ दिया है और यहाँ मेरे पास आ गए हैं। 32 यह चरवाहों
का परिवार है। उन्होंने सदैव पशु और रेवड़े रखी हैं। वे अपने सभी

जानवर और उनका जो कुछ अपना है उसे अपने साथ लाएं हैं।’
33 जब फ़िरौन आप लोगों को बुलाएँगे और आप लोगों से पूछेंगे
कि, ‘आप लोग क्या काम करते हैं?’ 34 आप लोग उनसे कहना,
‘हम लोग चरवाहे हैं। हम लोगों ने पूरा जीवन अपने जानवरों की
देखभाल में बिताया है। हम लोगों से पहले हमारे पूर्वज भी ऐसे ही
रहे।’ तब फ़िरौन तुम लोगों को गीशोन प्रदेश में रहने की आज्ञा दे
देगा। मिस्री लोग चरवाहों को पसन्द नहीं करते, इसलिए अच्छा
यही होगा कि आप लोग गीशोन में ही ठहरों।”

47

इस्राएल गोशेन में बसता है

1 यूसुफ फ़िरौन के पास गया और उसने कहा, “मेरे पिता, मेरे भाई
और उनके सब परिवार यहाँ आ गए हैं। वे अपने सभी जानवर तथा
कनान में उनका अपना जो कुछ था, उसके साथ हैं। इस समय वे
गीशोन प्रदेश में हैं।” 2 यूसुफ ने अपने भाईयों में से पाँच को फ़िरौन
के सामने अपने साथ रहने के लिए चुना।

3 फ़िरौन ने भाईयों से पूछा, “तुम लोग क्या काम करते हो?”

भाईयों ने फ़िरौन से कहा, “मान्यवर, हम लोग चरवाहे हैं। हम
लोगों से पहले हमारे पूर्वज भी चरवाहे थे।” 4 उन्होंने फ़िरौन से
कहा, “कनान में भूखमरी का यह समय बहुत बुरा है। हम लोगों के
जानवरों के लिए घास वाला कोई भी खेत बचा नहीं रह गया है।
इसलिए हम लोग इस देश में रहने आएं हैं। आपसे हम लोग प्रार्थना
करते हैं कि आप कृपा करके हम लोगों को गीशोन प्रदेश में रहने
दें।”

5 तब फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, “तुम्हारे पिता और तुम्हारे भाई
तुम्हारे पास आए हैं। 6 तुम मिस्र में कोई भी स्थान उनके रहने के
लिए चुन सकते हो। अपने पिता और अपने भाईयों को सबसे अच्छी

भूमि दी। उन्हें गीशोन प्रदेश में रहने दी और यदि ये कुशल चरवाहे
है, तो वे मेरे जानवरों की भी देखभाल कर सकते हैं।"

7 तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब को अन्दर फ़िरौन के सामने
बुलाया। याकूब ने फिरौन को आशीर्वाद दिया।

8 तब फ़िरौन ने याकूब से पूछा, "आपको उम्र क्या है?"

9 याकूब ने फ़िरौन से कहा, "बहुत से कष्टों के साथ मेरा छोटा
जीवन रहा। मैं केवल एक सौ तीस वर्ष जीवन बिताया हूँ। मेरे पिता
और उनके पिता मुझसे अधिक उम्र तक जीवित रहे।"

10 याकूब ने फ़िरौन को आशीर्वाद दिया। तब फिरौन से बिदा
लेकर चल दिया।

11 यूसुफ ने फ़िरौन का आदेश माना। उसने अपने पिता और
भाईयों को मिस्र में भूमि दी। यह रामसेस नगर के निकट मिस्र में
सबसे अच्छी भूमि थी। 12 यूसुफ ने अपने पिता, भाईयों और उनके
अपने लोगों को जो भोजन उन्हें आवश्यक था, दिया।

यूसुफ फ़िरौन के लिए भूमि खरीदता है

13 भूखमरी का समय और भी अधिक बुरा हो गया। देश में कहीं भी
भोजन न रहा। इस बुरे समय के कारण मिस्र और कनान बहुत गरीब
हो गए। 14 देश में लोग अधिक से अधिक अन्न खरीदने लगे। यूसुफ
ने धन बचाया और उसे फ़िरौन के महल में लाया। 15 कुछ समय
बाद मिस्र और कनान में लोगों के पास पैसा नहीं रहा। उन्होंने अपना
सारा धन अन्न खरीदने में खर्च कर दिया। इसलिए लोग यूसुफ के
पास गए और बोले, "कृपा कर हमें भोजन दें। हम लोगों का धन
समाप्त हो गया। यदि हम लोग नहीं खाएँगे तो आपके देखते—देखते
हम मर जायेंगे।"

16 लेकिन यूसुफ ने उत्तर दिया, "अपने पशु मुझे दो और मैं तुम
लोगों को भोजन दूँगा।" 17 इसलिए लोग अपने पशु, घोड़े और अन्य

सभी जानवरों को भोजन खरीदने के लिए उपयोग में लाने लगे और उस वर्ष यूसुफ ने उनके जानवरों को लिया तथा भोजन दिया।

18 किन्तु दूसरे वर्ष लोगों के पास जानवर नहीं रह गए और भोजन खरीदने के लिए कुछ भी न रहा। इसलिए लोग यूसुफ के पास गए और बोले, "आप जानते हैं कि हम लोगों के पास धन नहीं बचा है और हमारे सभी जानवर आपके हो गये हैं। इसलिए हम लोगों के पास कुछ नहीं बचा है। वह बचा है केवल, जो आप देखते हैं,
हमारा शरीर और हमारी भूमि। 19 आपके देखते हुए ही हम निश्चय
ही मर जाएँगे। किन्तु यदि आप हमें भोजन देते हैं तो हम फ़िरौन को अपनी भूमि देंगे और उसके दास हो जाएँगे। हमें बीज दो जिन्हें हम बो सकें। तब हम लोग जीवित रहेंगे और मरेंगे नहीं और भूमि हम लोगों के लिए फिर अन्न उगाएगी।"

20 इसलिए यूसुफ ने मिस्र की सारी भूमि फ़िरौन के लिए खरीद
ली। मिस्र के सभी लोगों ने अपने खेतों को यूसुफ के हाथ बेच
दिया। उन्होंने यह इसलिए किया क्योंकि वे बहुत भूखे थे। 21 और
सभी लोग फ़िरौन के दास हो गए। मिस्र में सर्वत्र लोग फ़िरौन के
दास थे। 22 एक मात्र वही भूमि यूसुफ ने नहीं खरीदी जो याजकों
के अधिकार में थी, क्योंकि फ़िरौन उनके काम के लिए उन्हें वेतन देता था। इसलिए उन्होंने इस धन को खाने के लिए भोजन खरीदने में व्यर्थ किया।

23 यूसुफ ने लोगों से कहा, "अब मैंने तुम लोगों की और तुम्हारी
भूमि को फ़िरौन के लिए खरीद लिया है। इसलिए मैं तुमको बीज
दूँगा और तुम लोग अपने खेतों में पौधे लगा सकते हो। 24 फसल
काटने के समय तुम लोग फसल का पाँचवाँ हिस्सा फ़िरौन को अवश्य देगा। तुम लोग अपने लिए पाँच में से चार हिस्से रख सकते हो। तुम लोग उस बीज को जिसे भोजन और बोने के लिए रखोगे उसे दूसरे वर्ष उपयोग में ला सकोगे। अब तुम अपने परिवारों और बच्चों को खिला सकते हो।"

25 लोगों ने कहा, "आपने हम लोगों का जीवन बचा लिया है। हम
लोग आपके और फ़िरौन के दास होने में प्रसन्न हैं।"
26 इसलिए यूसुफ ने उस समय देश में एक नियम बनाया और
वह नियम अब तक चला आ रहा है। नियम के अनुसार भूमि से हर
एक उपज का पाँचवाँ हिस्सा फ़िरौन का है। फ़िरौन सारी भूमि का
स्वामी हैं। केवल वही भूमि उसकी नहीं है जो याजकों की है।

"मुझे मिस्र में मत दफनाना"

27 इस्राएल (याकूब) मिस्र में रहा। वह गीशेन प्रदेश में रहा। उसका
परिवार बढ़ा और बहुत हो गया। उन्होंने मिस्र में उस भूमि को पाया
और अच्छा जीवन बिताया।
28 याकूब मिस्र में सत्रह वर्ष रहा। इस प्रकार याकूब एक सौ
सैंतालीस वर्ष का हो गया। 29 वह समय आ गया जब इस्राएल
(याकूब) समझ गया कि वह जल्दी ही मरेगा, इसलिए उसने अपने
पुत्र यूसुफ को अपने पास बुलाया। उसने कहा, "यदि तुम मुझसे प्रेम
करते हो तो तुम अपने हाथ मेरी जांघ के नीचे रख कर मुझे वचन
दो।* वचन दो कि तुम, जो मैं कहूँगा करोगे और तुम मेरे प्रति सच्चे
रहोगे। जब मैं मरूँ तो मुझे मिस्र में मत दफनाना। 30 उसी जगह मुझे
दफना ना जिस जगह मेरे पूर्वज दफनाए गए हैं। मुझे मिस्र से बाहर
ले जाना और मेरे परिवार के कब्रिस्तान में दफनाना।"
यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं वचन देता हूँ कि वही करूँगा जो आप
कहते हैं।"
31 तब याकूब ने कहा, "मुझसे एक प्रतिज्ञा करो" और यूसुफ ने
उससे प्रतिज्ञा की कि वह इसे पूरा करेगा। तब इस्राएल (याकूब) ने
अपना सिर पलंग पर पीछे को रखा।†

---

* **47:29:** तुम … वचन दो यह संकेत करता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण शपथ था और याकूब विश्वास करता था कि यूसुफ अपना वचन पूरा करेगा। † **47:31:** तब इस्राएल … रखा या तब इस्राएल ने अपने डंडे का सहारा लेकर उपासना में अपना सिर झुकाया। डंडे के लिए हिब्रू शब्द "बिछौने" शब्द की तरह है और उपासना के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ "प्रणाम करना" "लेटना" होता है।

48

मनश्शे और एप्रैम को आशीर्वाद

1 कुछ समय बाद यूसुफ को पता लगा कि उसका पिता बहुत
बीमार हैं। इसलिए यूसुफ ने अपने दोनों पुत्रों मनश्शे और एप्रैम को
साथ लिया और अपने पिता के पास गया। 2 जब यूसुफ पहुँचा तो
किसी ने इस्राएल से कहा, "तुम्हारा पुत्र यूसुफ तुम्हें देखने आया
है।" इस्राएल बहुत कमज़ोर था, किन्तु उसने बहुत प्रयत्न किया
और पलंग पर बैठ गया।

3 तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "कनान देश में लूज के स्थान
पर सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मुझे स्वयं दर्शन दिया। परमेश्वर ने वहाँ
मुझे आशीर्वाद दिया। 4 परमेश्वर ने मुझसे कहा, 'मैं तुम्हारा एक बड़ा
परिवार बनाऊँगा। मैं तुमको बहुत से बच्चे दूँगा और तुम एक महान
राष्ट्र बनोगे। तुम्हारे लोगों का अधिकार इस देश पर सदा बना
रहेगा।' 5 और अब तुम्हारे दो पुत्र हैं। मेरे आने से पहले मिस्र देश में
यहाँ ये पैदा हुए थे। तुम्हारे दोनों पुत्र एप्रैम और मनश्शे मेरे अपने
पुत्रों की तरह होंगे। 6 किन्तु यदि तुम्हारे अन्य पुत्र होंगे तो वे तुम्हारे
बच्चे होंगे। किन्तु वे भी एप्रैम और मनश्शे का जो कुछ होगा, उसमें
हिस्सेदार होंगे। 7 पद्दनराम से यात्रा करते समय राहेल मर गई। इस
बात ने मुझे बहुत दुःखी किया। वह कनान देश में मरी। हम लोग
अभी एप्राता की ओर यात्रा कर रहे थे। मैंने उसे एप्राता की ओर
जाने वाली सड़क पर दफनाया।" (एप्राता बैतलेहेम है।)

8 तब इस्राएल ने यूसुफ के पुत्रों को देखा। इस्राएल ने पूछा, "ये
लड़के कौन हैं?"

9 यूसुफ ने अपने पिता से कहा, "ये मेरे पुत्र हैं। ये वे लड़के हैं
जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है।"

इस्राएल ने कहा, "अपने पुत्रों को मेरे पास लाओ। मैं उन्हें
आशीर्वाद दूँगा।"

10 इस्राएल बूढ़ा था और उसकी आँखें ठीक नहीं थीं। इसलिए
यूसुफ अपने पुत्रों को अपने पिता के निकट ले गया। इस्राएल ने
बच्चों को चूमा और गले लगाया। 11 तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा,
“मैंने कभी नहीं सोचा कि मैं तुम्हारा मुँह फिर देखूँगा, किन्तु देखो।
परमेश्वर ने तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को भी मुझे देखने दिया।”

12 तब यूसुफ ने बच्चों को इस्राएल की गोद से लिया और वे
उसके पिता के सामने प्रणाम करने को झुके। 13 यूसुफ ने एप्रैम को
अपनी दायीं ओर किया और मनश्शे को अपनी बायीं ओर (इस
प्रकार एप्रैम इस्राएल की बायीं ओर था और मनश्शे इस्राएल की
दायीं ओर था)। 14 किन्तु इस्राएल ने अपने हाथों की दिशा बदलकर
अपने दायें हाथ को छोटे लड़के एप्रैम के सिर पर रखा और तब
बायें हाथ को इस्राएल ने बड़े लड़के मनश्शे के सिर पर रखा। उसने
अपने बायें हाथ को मनश्शे पर रखा, यद्यपि मनश्शे का जन्म पहले
हुआ था 15 और इस्राएल ने यूसुफ को आशीर्वाद दिया और कहा,

“मेरे पूर्वज इब्राहीम और इसहाक ने हमारे परमेश्वर की उपासना की
और वही परमेश्वर मेरे पूरे जीवन का पथ–प्रदर्शक रहा है।
16 वही दूर रहा जिसने मुझे सभी कष्टों से बचाया
और मेरी प्रार्थना है कि इन लड़कों को वह आशीर्वाद दे।
अब ये बच्चे मेरा नाम पाएँगे। वे हमारे पूर्वज इब्राहीम
और इसहाक का नाम पाएँगे।
मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे इस धरती पर बड़े परिवार
और राष्ट्र बनेंगे।”

17 यूसुफ ने देखा कि उसके पिता ने एप्रैम के सिर पर दायीं हाथ
रखा है। वह यूसुफ को प्रसन्न न कर सका। यूसुफ ने अपने पिता
के हाथ को पकड़ा। वह उसे एप्रैम के सिर से हटा कर मनश्शे के
सिर पर रखना चाहता था। 18 यूसुफ ने अपने पिता से कहा, “आपने

अपना दायीं हाथ गलत लड़के पर रखा है। मनश्शे का जन्म पहले हैं।”

19 किन्तु उसके पिता ने तर्क दिया और कहा, “पुत्र, मैं जानता हूँ।
मनश्शे का जन्म पहले है और वह महान होगा। वह बहुत से लोगों का पिता भी होगा। किन्तु छोटा भाई बड़े भाई से बड़ा होगा और छोटे भाई का परिवार उससे बहुत बड़ा होगा।”

20 इस प्रकार इस्राएल ने उस दिन उन्हें आशीर्वाद दिया। उसने कहा,

“इस्राएल के लोग तुम्हारे नाम का प्रयोग आशीर्वाद देने के लिए
करेंगे,
तुम्हारे कारण कृपा प्राप्त करेंगे।
लोग प्रार्थना करेंगे, ‘परमेश्वर तुम्हें
एप्रैम और मनश्शे के समान बनायें।’ ”

इस प्रकार इस्राएल ने एप्रैम को मनश्शे से बड़ा बनाया।

21 तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, “देखो मेरी मृत्यु का समय
निकट आ गया है। किन्तु परमेश्वर तुम्हारे साथ अब भी रहेगा। वह
तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के देश तक लौटा ले जायेगा। 22 मैंने तुमको
ऐसा कुछ दिया है जो तुम्हारे भाईयों को नहीं दिया है। मैं तुमको वह पहाड़ देता हूँ जिसे मैंने एमोरी लोगों से जीता था। उस पहाड़ के लिए मैंने अपनी तलवार और अपने धनुष से युद्ध किया था और मेरी जीत हुई थी।”

49

याकूब अपने पुत्रों को आशीर्वाद देता है

1 तब याकूब ने अपने सभी पुत्रों को अपने पास बुलाया। उसने कहाँ, “मेरे सभी पुत्रों, यहाँ मेरे पास आओ। मैं तुम्हें बताऊँगा कि भविष्य में क्या होगा।

2 “याकूब के पुत्रों, एक साथ आओ और सुनो,
अपने पिता इस्राएल की सुनो।

रूबेन

3 “रूबेन, तुम मेरे प्रथम पुत्र हो।
तुम मेरे पहले पुत्र और मेरे शक्ति का पहला सबूत हो।
तुम मेरे सभी पुत्रों से
अधिक गर्वीले और बलवान हो।
4 किन्तु तुम बाढ़ की तंरगों की
तरह प्रचण्ड हो।
तुम मेरे सभी पुत्रों से
अधिक महत्व के नहीं हो सकोगे।
तुम उस स्त्री के साथ सोए
जो तुम्हारे पिता की थी।
तुमने अपने पिता के बिछौने की
सम्मान नहीं दिया।”

शिमोन और लेवी

5 “शिमोन और लेवी भाई हैं।
उन्हें अपनी तलवारों से लड़ना प्रिय है।
6 उन्होंने गुप्त रूप से बुरी योजनाएँ बनाई।
मेरी आत्मा उनकी योजना का कोई अंश नहीं चाहती।
मैं उनकी गुप्त बैठकों को स्वीकार नहीं करूँगा।
उन्होंने आदमियों की हत्या की जब वे क्रोध में थे और उन्होंने केवल विनोद के लिए जानवरों को चोट पहुँचाई।
7 उनका क्रोध एक अभिशाप है।
ये अत्याधिक कठोर और अपने पागलपन में क्रुद्ध हैं।
याकूब के देश में इनके परिवारों की अपनी भूमि नहीं होगी।
वे पूरे इस्राएल में फैलेंगे।”

यहूदा

8 “यहूदा, तुम्हारे भाई तुम्हारी प्रशंसा करेंगे।
तुम अपने शत्रुओं को हराओगे।
तुम्हारे भाई तुम्हारे सामने झुकेंगे।
9 यहूदा उस शेर की तरह है जिसने किसी जानवर को मारा हो।
हे मेरे पुत्र, तुम अपने शिकार पर खड़े शेर के समान हो
जो आराम करने के लिए लेटता है,
और कोई इतना बहादुर नहीं कि उसे छोड़ दे।
10 यहूदा के परिवार के व्यक्ति राजा होंगे।
उसके परिवार का राज—चिन्ह उसके परिवार से
वास्तविक शासक के आने से पहले समाप्त नहीं होगा।
तब अनेकों लोग उसका आदेश मानेंगे और सेवा करेंगे।
11 वह अपने गधे को अँगूर की बेल से बाँधता है।
वह अपने गधे के बच्चों को सबसे अच्छी अँगूर की बेलों में बाँधता है।
वह अपने वस्त्रों को धोने के लिए सबसे अच्छी दाखमधु का उपयोग करता है।
12 उसकी आँखे दाखमधु पीने से लाल रहती है।
उसके दाँत दूध पीने से उजले हैं।”*

जबूलून

13 “जबूलून समुद्र के निकट रहेगा।
इसका समुद्री तट जहाजों के लिए सुरक्षित होगा।
इसका प्रदेश सीदोन तक फैला होगा।”

इस्साकर

14 “इस्साकर उस गधे के समान है जिसने अत्याधिक कठोर काम किया है।

---

* **49:12:** उसकी आँखे ... उजले हैं या उसका गधा अँगूर की बेल में बंधेगा, उसके गधे के बच्चे सर्वोत्तम अँगूर की बेल में बांधे जायेंगे। वह अपने वस्त्र दाखमधु से धोएगा और सर्वोतम वस्त्र अँगूर के रस से धोएगा। उसकी आँखे दाखमधु से अधिक लाल होंगी और उसके दाँत दूध से अधिक सफेद होंगे।

वह भारी बोझ ढोने के कारण पस्त पड़ा है।
15 वह देखेगा कि उसके आराम की जगह अच्छी है।
तथा यह कि उसकी भूमि सुहाबनी है।
तब वह भारी बोझे ढोने को तैयार होगा।
वह दास के रूप में काम करना स्वीकार करेगा।"

दान

16 "दान अपने लोगों का न्याय वैसे ही करेगा
जैसे इस्राएल के अन्य परिवार करते हैं।
17 दान सड़क के किनारे के
साँप के समान है।
वह रास्ते के पास लेटे हुए
उस भयंकर साँप की तरह है,
जो घोड़े के पैर को डसता है,
और सवार घोड़े से गिर जाता है।

18 "यहोवा, मैं उद्धार की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

गाद

19 "डाकुओं का एक गिरोह गाद पर आक्रमण करेगा।
किन्तु गाद उन्हें मार भगाएगा।"

आशेर

20 "आशेर की भूमि बहुत अच्छी उपज देगी।
उसे वही भोजन मिलेगा जो राजाओं के लिए उपयुक्त होगा।"

नप्ताली

21 "नप्ताली स्वतन्त्र दौड़ने वाले हिरण की तरह है
और उसकी बोली उनके सुन्दर बच्चों की तरह है।"

यूसुफ

22 "यूसुफ बहुत सफल है।
यूसुफ फलों से लदी अंगूर की बेल के समान है।

वह सोते के समीप उगी अँगूर की बेल की तरह है,
बाड़े के सहारे उगी अँगूर की बेल की तरह है।
23 बहुत से लोग उसके विरुद्ध हुए
और उससे लड़े।
धर्नुधारी लोग उसे पसन्द नहीं करते।
24 किन्तु उसने अपने शक्तिशाली धनुष और कुशल भुजाओं से युद्ध जीता।
वह याकूब के शक्तिशाली परमेश्वर चरवाहे, इस्राएल की चट्टान से शक्ति पाता है।
25 और अपने पिता के परमेश्वर से शक्ति पाता है।

"परमेश्वर तुम को आशीर्वाद दे। सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम को आशीर्वाद दे।
वह तुम्हें ऊपर आकाश से आशीर्वाद दे और नीचे गहरे समुद्र से आशीर्वाद दे।
वह तुम्हें स्तनों और गर्भ का आशीर्वाद दे।"
26 मेरे माता—पिता को बहुत सी अच्छी चीजें होती रही
और तुम्हारे पिता से मुझको और अधिक आशीर्वाद मिला।
तुम्हारे भाईयों ने तुमको बेचना चाहा।
किन्तु अब तुम्हें एक ऊँचे पर्वत के समान,
मेरे सारे आशीर्वाद का ढेर मिलेगा।

बिन्यामीन

27 "बिन्यामीन एक ऐसे भूखे भेड़िये के समान है
जो सबेरे मारता है और उसे खाता है।
शाम को यह बचे खुचे से काम चलाता है।"

28 ये इस्राएल के बारह परिवार है और वही जीज़ें हैं जिन्हें उनके
पिता ने उनसे कहा था। उसने हर एक पुत्र को वह आशीर्वाद दिया
जो उसके लिए ठीक था। 29 तब इस्राएल ने उनकी एक आदेश

दिया। उसने कहा, "जब मैं मरूँ तो मैं अपने लोगों के बीच रहना
चाहता हूँ। मैं अपने पूर्वजों के साथ हित्ती एप्रोन के खेतों की गुफा
में दफनाया जाना चाहता हूँ। 30 वह गुफा मम्रे के निकट मकपेला
के खेत में है। वह कनान देश में है। इब्राहीम ने उस खेत को एप्रोम
से इसलिए खरीदा था जिससे उसके पास एक कब्रिस्तान हो सके।
31 इब्राहीम और उसकी पत्नी सारा उसी गुफा में दफनाए गए हैं।
इसहाक और उसकी पत्नी हिबका उसी गुफा में दफनाए गए। मैंने
अपनी पत्नी लिआ को उसी गुफा में दफनाया।" 32 वह गुफा उस
खेत में है जिसे हित्ती लोगों से खरीदा गया था। 33 अपने पुत्रों से
बातें समाप्त करने के बाद याकूब लेट गया, पैरों को अपने बिछौने
पर रखा और मर गया।

50

याकूब का अन्तिम संस्कार

1 जब इस्राएल मरा, यूसुफ बहुत दुःखी हुआ। वह पिता के गले
लिपट गया, उस पर रोया और उसे चूमा। 2 यूसुफ ने अपने सेवकों
को आदेश दिया कि वे उसके पिता के शरीर को तैयार करें (ये
सेवक वैद्य थे।) वैद्यों ने याकूब के शरीर को दफनाने के लिए तैयार
किया। उन्होंने मिस्री लोगों के विशेष तरीके से खरीर को तैयार
किया। 3 जब मिस्री लोगों ने विशेष तरह से शव तैयार किया तब
उसने दफनाने के पहले चालीस दिन तक प्रतिज्ञा की। उसके बाद
मिस्रियों ने याकूब के लिए शोक का विशेष समय रखा। यह समय
सत्तर दिन का था।

4 सत्तर दिन बाद शोक का समय समाप्त हुआ। इसलिए यूसुफ ने
फ़िरौन के अधिकारियों से कहा, "कृपया फ़िरौन से वह कहो, 5 'जब
मेरे पिता मर रहे थे तब मैंने उनसे एक प्रतिज्ञा की थी। मैंने प्रतिज्ञा
की थी कि मैं उन्हें कनान देश की गुफा में दफनाऊँगा। यह वह गुफा
है जिसे उन्होंने अपने लिए बनाई है। इसलिए कृपा करके मुझे जाने

दें और वहाँ पिता की दफनाने दें। तब मैं आपके पास वापस यहाँ
लौट आऊँगा।' "
6 फ़िरौन ने कहा, "अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो। जाओ और अपने
पिता को दफनाओ।"
7 इसलिए यूसुफ अपने पिता की दफनाने गया। फ़िरौन के सभी
अधिकारी यूसुफ के साथ गए। फ़िरौन के बड़े लोग (नेता) और मिस्र
के बड़े लोग यूसुफ के साथ गए। 8 यूसुफ और उसके भाईयों के
परिवार के सभी व्यक्ति उसके साथ गए और उसके पिता के परिवार
के सभी लोग भी यूसुफ के साथ गए। केव बच्चे और जानवर गीशोन
प्रदेश में रह गए। 9 यूसुफ के साथ जाने के लिए लोग रथों और घोड़ो
पर सवार हुए। यह बहुत बढ़ा जनसमूह था।
10 वे गोरन आताद को गए। जो यरदन नदी के पूर्व में था। इस
स्थान पर इन्होंने इस्राएल का अन्तिम संस्कार किया। वे अन्तिम
संस्कार सात दिन तक होता रहा। 11 कनान के निवासियों ने गोरन
आताद में अन्तिम संस्कार को देखा। उन्होंने कहा, "वे मिस्री
सचमुच बहुत शोक भरा संस्कार कर रहे है।" इसलिए उस जगह
का नाम अब आबेल मिस्रैम है।
12 इस प्रकार याकूब के पुत्रों ने वही किया जो उनके पिता ने
आदेश दिया था। 13 वे उसके शव को कनान ले गए और मकपेला
की गुफा में उसे दफनाया। यह गुफा मम्रे के निकट उस खेत में थी
जिसे इब्राहीम ने हित्ती एप्रोन से खरीदा था। 14 यूसुफ ने जब अपने
पिता को दफना दिया तो वह और उसके साथ समूह का हर एक
व्यक्ति मिस्र को लौट गया।

भाई यूसुफ से डरे

15 याकूब के मरने के बाद यूसुफ के भाई चितिंत हुए। वे डर
रहे थे कि उन्होंने जो कुछ पहले किया था उसके लिए यूसुफ अब
भी उनसे क्रोध में पागल होगा। उन्होंने कहा, "क्या जो कुछ हम ने
किया उसके लिए यूसुफ अब भी हम से घृणा करता है?" 16 इसलिए
भाईयों ने वह सन्देश यूसुफ को भेजा: "तुम्हारे पिता ने मरने के पहले

हम लोगों को आदेश दिया था। 17 उसने कहा, 'युसुफ से कहना कि
मैं निवेदन करता हूँ कि कृपा कर वह उस अपराध को क्षमा कर
दे जो उन्होंने उसके साथ किया।' इसलिए अब हम तुमसे प्रार्थना
करते हैं कि उस अपराध को क्षमा कर दो जो हम ने किया। हम
लोग केवल तुम्हारे पिता के परमेश्वर के सेवक हैं।"

यूसुफ के भाईयों ने कुछ कहा उससे उसे बड़ा दुःख हुआ और
वह रो पड़ा। 18 यूसुफ के भाई उसके सामने गए और उसके सामने
झुककर प्रणाम किया। उन्होंने कहा, "हम लोग तुम्हारे सेवक होंगे।"

19 तब यूसुफ ने उनसे कहा, "डरो नहीं मैं परमेश्वर नहीं हूँ। 20 तुम
लोगों ने मेरे साथ जो कुछ बुरा करने की योजना बनाई थी। किन्तु
परमेश्वर सचमुच अच्छी योजना बना रहा था। परमेश्वर की योजना
बहुत से लोगों का जीवन बचाने के लिए मेरा उपयोग करने की थी
और आज भी उसकी यही योजना है। 21 इसलिए डरो नहीं। मैं तुम
लोगों और तुम्हारे बच्चों की देखभाल करूँगा।" इस प्रकार यूसुफ ने
उन्हें सान्त्वना दी और उनसे कोमलता से बातें की।

22 यूसुफ अपने पिता के परिवार के साथ मिस्र में रहता रहा।
यूसुफ एक सौ दस वर्ष का होकर मरा। 23 यूसुफ के जीवन काल
में एप्रैम के पुत्र और पौत्र हुए और उसके पुत्र मनश्शे का एक पुत्र
माकीर नाम का हुआ। यूसुफ माकीर के बच्चों को देखने के लिए
जीवित रहा।

यूसुफ की मृत्यु

24 जब यूसुफ मरने को हुआ, उसने अपने भाईयों से कहा, "मेरे
मरने का समय आ गया। किन्तु मैं जानता हूँ कि परमेश्वर तुम लोगों
की रक्षा करेगा। वह इस देश से तुम लोगों को बाहर ले जाएगा।
परमेश्वर तुम लोगों को उस देश में ले जाएगा जिसे उसने इब्राहीम,
इसहाक और याकूब को देने का वचन दिया था।"

25 तब यूसुफ ने अपने लोगों से एक प्रतिज्ञा करने को कहा। यूसुफ
ने कहा, “मुझ से प्रतिज्ञा करो कि तब मेरी अस्थियों अपने साथ ले
जाओगे जब परमेश्वर तुम लोगों को नए देश में ले जाएगा।”
26 यूसुफ मिस्र में मरा, जब यह एक सौ दस वर्ष का था। वैद्यों
ने उसके शव को दफनाने के लिए तैयार किया और मिस्र में उसके
शव को एक डिव्वे में रखा।

पवित्र बाइबल
The Holy Bible, Easy Reading Version, in Hindi

copyright © 1992-2010 World Bible Translation Center

Language: हिंदी (Hindi)

Translation by: World Bible Translation Center

License Agreement for Bible Texts World Bible Translation Center Last Updated: September 21, 2006 Copyright © 2006 by World Bible Translation Center All rights reserved. These Scriptures: • Are copyrighted by World Bible Translation Center. • Are not public domain. • May not be altered or modified in any form. • May not be sold or offered for sale in any form. • May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space). • May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included. • May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: “Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission.” If the text quoted is from one of WBTC’s non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for “HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM.” The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC’s text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as “ERV” for the Easy-to-Read VersionTM in English) must appear at the end of each quotation. Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC’s text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com. World Bible Translation Center P.O. Box 820648 Fort Worth, Texas 76182, USA Telephone: 1-817-595-1664 Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE E-mail: info@wbtc.com WBTC’s web site – World Bible Translation Center’s web site: http://www.wbtc.org

2019-11-15

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 8 Sep 2021 from source files dated 18 Aug 2021

7f0fcd5b-bc85-55f6-933a-0de82e7ef275